ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५५ म अंक ०१ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५५)

वि दे ह *विदेह Videha विदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान

अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२. गद्य

२.१.मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी" (मिसिदा)- बीहनि कथा- पियार

२.२.१.नारायण यादव- प्रेमक आँसु २. डॉ. बचेश्वर झाक आलेख- कन्यादानक भीषण समस्याक कारण

२.३.१.रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ) २. डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (पहिल खेप)

२.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ आ दूटा लघुकथा

मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी" (मिसिदा)

बीहनि कथा

पियार

''की गै, की हाल छौ ?''

"मर टटिवा, आई फुरैलौ यै, जहिया कहलियौ, अप्पन बाबू कें हम्मर बाबू लग भेजहीं तखन त' बकोड़ लागि गेलौ.....आई, पूछै से केना ?"

"आंय गै, हम्मर बाबू जेतौ तोहर बाबू लग ? नहि, नहि.... हम लड़का बाला छी, हम कोना क' बाबू के तोहर बाबू लग भेजियौ ?

अप्पन बाबू के हम्मर बाबू लग भेज, हम बाति सम्हारि लेबौ !"

"आहि....आहि..... आंय रौ, हम गेल छलियौ तोरा लग कहै लेल,जे हम तोरा सं पियार करैत छियौ ?"

"एह, ई जेना किछुए ने केलकै.... आंय गै, मनोजवा केर वियाह मे एतेक निहारि निहारि किएक देखि कें हँसैत रहैं ?"

"अच्छा.... ओहि दिन ? रौ, ओहि दिन, तोहर पैजामा केर डोरी निच्चा लटकैत रहौ तैं."

"हे गै, एतेक ने बोन, ओहि दिन तों आम'क बारी मे नै कहने छलैं कि हम तोरा नीक लागै छियौ ?"

"आंय रे, मनसूक्खा, नीक लागै केर मतलब भेलै कि हम तोरा सं पियार करै लगलियौह ?"

"ठिक्के छै तोरा हमरा सं पियार नहि छौ, तखन हम जाइत छियौ !" कहि राजेश चल'लागल.

"ऐ, राजेश केमहर जाता है , ई पियार का खेल खेला के हमको बुड़बक बनाता है, बूझि लो, हम तोहर पाँछा कहियो छोड़ेंगे....पियार मे नाटक करै छैं ?" कहि कान' लागल.

"हेह तोरा की बूझि पड़ता है कि तोरा हम नहि बुझता है, हम तोहर बिनु रहि सकता है..... हम तोरा बहुत पियार करता है जी.....?

बजैत राजेश ओकर हाथ पकड़ि लेलक.

-"मिसिदा"

(मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी")

मोहल्ला/पोस्ट : लक्ष्मीसागर, जिला : दड़िभंगा.

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१. नारायण यादव- प्रेमक आँसु २. डॉ. बचेश्वर झाक आलेख- कन्यादानक भीषण समस्याक कारण आ

१

नारायण यादव

प्रेमक ऑंसु

बात ओहि समयक थिक। जखन रामू काकाकेँ तेसर बेटीक जन्म भेल छलैन्ह। हम भोरमे टहलवाक शौकीन छी। भोरे उठि जखन दू-तीन किलोमीटरसँ टहलि वावस भेल रही तँ देखै छी जे राम काका माथपर हाथ नेने, मुँह लटकौने बैसल छथि। हम तँ पहिने बड़ आश्चर्यचकित भेलहु। जे रामू काका एकटा हसमुख चेहराआ मजकियल छलाह। गाम भरिक लोक सभ हुनकासँ खुश रहै छल किएक तँ ओ कहनो आफद-विपत आ मुसिवतमे पड़ल लोकककेँ हसबैत रहै छलाह। से आई मनहुस कियैक भेल छथि? हम हिनकर चिनताकेँ भाँपि नहि सकलहु। मुदा एकाएक पुछि देबैक सेहो नीक नहि बुझना जाइत छल। कियैक तँ जखन ओ भेटत छलाह तँ कहैत छलाह जे मौरनिंग-वाकसँ आबि गेलहु।

कहु तँ स्टेशन कय डेग भेल। स्टेशनकेँ नपबाक भार रामू काका हमरेपर छै जे अहाँ कहै छी।

तँ ककरापर छैक भोरे उठि स्टेशनपर चक्कर अहाँ दैत छी आ नपबाक भार हमरापर रहत।

सुवहमे टहलवाक मजा दोसर छैक रामू काका। आ हमहींटा थोरे टहलै छी। हमर मित्र लोकनि अपन घरवालीक संग टहलैत छथि। आर जे अकेले रहैत छथि हमरा संग जाइत छथि जेना सत्य नारायण बाबू, जय नरायण बाबू, राजवीर बाबू, बड़ा बाबू, लाइव्रेरियन साहेव, दीपकजी, विजय बाबू, युगेश्वर बाबू। सुवहक मौरनिंग वाक् सँ बड़ लाभ होयत छैक। रामू काका जकरा कोनो तरहक ब्लड प्रेसर छैक, मधुमेह , थाइराइड छैक, डिप्रेशन छैक, आदि-आदि सभ विमारीक दवाई छैक माॅरनिंग वाक। आ जकरा कोनो बीमारी नहि छैक तकरा लेल तँ सोनामे सुगन्ध भय जाइत छैक। ओहि आदमीकेँ जावत टहलैत रहत तावत् कोनो बीमारी भैये नहि सकैत अछि।

रामू काका जखन भेटि जाइत छलाह तँ एहि प्रकारक गप्प-सप हंसी-मजाक होइत छल। मुदा आजुक माहौल अजीव छल। रामू काकाक चिन्तित मुद्रा देखि हम हुनका नजदीकमे बैसि रहलहु आ कहलहु-

“रामू काका कने तम्बाकू खुऔ।”

रामू काका चून-तम्बाकू दैत बजलाह-

“हौ तो तँ तम्बाकू नहि खाइत छलह। कहियासँ खाय लगलह?”

हिनक चिन्तित मुद्रा भंग भेल। हम बजलहु-

“रामू काका से तँ ठीके कहलहु। हम तँ तम्वाकू नहि खाइत छी। मुदा अहाँक उदास मुद्रा देखि, हमहु चिंतित भय गेल छलहु। अहाँक चितिंत आ उदासी मुद्रा देखि ओहि मुद्राकेँ भंग करवाक हेतु चून-तम्बाकूसँ बात शुरू कयलहु।”

हम चुनौटीसँ तम्बाकू निकालि ओहिमे चून दय लगवय लगलहु। आ रामू काकाकेँ दैत बजलहु-

“रामू काका, सभ ठीक-ठाक अछि की नहि?”

"की ठीक रहत फेर बेटिये भेल।"

हमरा हंसी लाइग गेल आ हम खुब जोरसँ हसैत बजलहु-

"रामू काका, अहाँ बड़ भाग्यशाली लोक छी। जे तीनटा बेटी भेल। साक्षात लक्ष्मी-सरस्वती आ पार्वतीक जन्म अहाँ ओहिठाम भेल अछि। हम एहिशीक अवसरपर अहाँकेँ मुवारक दैत छी। एहिमे दु:खी होयबाक कोनो प्रश्ने नहि अछि। बेटी एहेन सुख थिक, जकरापर ईश्वर मेहरवान छथि, ओकरे बेटी होइत अछि।"

बेटी स्त्री अछि, बेटी नारी अछि, बेटी फुलवारी अछि, बेटी दर्पण आ दर्शन अछि। बेटी सीता अछि, बेटी सावित्री अछि, बेटी माता अछि, बेटीवलिदानक गाथा अछि, बेटी श्रमद् भागवत गीता अछि, बेटी अछि तँ संसारमे सभ सुख भेटत। माय-पावक जे सेवा बेटी करत ओ बेटा कथमपि नहि करत। तँ, बेटी भेल ताहि लेल अपने एतेक दुखी छी?

रामू काका हमरापर खौझाइत बजलाह-

"यौ मास्टर साहेब, अहूँ हमरासँ मजाक करैत छी, हमरा खौझा रहल छी। अहाँकेँ होइत अछि की हम बेटी जनमावऽ बाला मशीन छी। देखू मंगलाकेँ ओ केहेन मरियल अछि आ ओकरा दू-दूटा बेटे छैक। हमर ई तेसर बेटी अछि। सभ हमर मजाक उड़बैत होयत। आब हम एहि समाजमे मुँह देखयवाक नहि रहि सकलहु। हमरा बेटीसँ बड़ नफरत भय गेल अछि। आओर हमरा तीन-तीनटा बेटिये अछि।"

रामू काका अहाँकेँ बेटीसँ कियैक एतेक नफरत भय गेल अछि। बेटी नहि रहत तँ एहि संसारक श्रृष्टि कोनो होयत। यहि बेटीसँ नफरत अछि तँ वियाह कियैक कयलहु। बेटीसँ नफरत अछि तूं मायक कोखसँ जनम कियैक लेलहुँ माँओ तँ बेटीक रूप थिक। रामू काका, ओ आब युग-जमाना नहि अछि जे बेटी समाजक कोढ़ बनत। बेटीक उँचाई आब बेटासँ बेसी छैक। कोन एहेन विधा अछि जाहिमे बेटी, बेटासँ कम छैक से देखू तँ बेटा जखन जबान होयत तँ की करत की नहि से कियो नहि जानैत अछि। जुआरी राखी, व्यभिचारी, लूच्चा, लम्पट आदि भय सकैत अछि। बेटी कहियो शरावी, जुआरी, चोर, डकैत नहि भय सकैत अछि। देखू जे डकैती, लूट, अपहरण बेटे नहि करैत अछि। पैघ-पैघ लोकक जेना- पैघ हाकीम, मंत्री, विधायक आ सांसद बेटा लूट, डकैती, अपहरणक अंजाम दय रहल अछि। तँ बेटीकेँ पोसू-पालू आ शिक्षित बनाउ। एकटा बेटी शिक्षित होयत तँ एकटा परिवार शिक्षित होयत। आ एकटा बेटा शिक्षित होयत तँ मात्र एकटा पुरुष शिक्षित होयत। रामू काका, अहँ अपन चिन्ताकेँ त्यागू आ बेटा-बेटीमे फर्क नहि राखू। देखैत नहि छिऐक जे शशिकान्त बाबक बेटी यू.पी.एस.सी. परीक्षामे तेसर स्थान प्राप्त कयलक अदि। ऐ यौ रामू काका, अपना गाममे बेटाक कमी छैक कहाँ ककरो बेटा एहेन पद प्राप्त कयलक अछि।

रामू काका जे मनहूस छलाह से आब मन हुलसगर भेलैन्ह। ओ मनोयोगसँ तीनू बेटीक लालन-पालन आ समुचित शिक्षाक व्यवस्था केलैन्ह।

किछु दिनक उपरान्त तीनू बेटीक पढ़ाई-लिखाई चलय लागल। तीनू बेटीक नाम सीता, गीता आ सावित्री छल। पढ़य-लिखयमे तीनों एकपर एक छल। पहिल बेटी सीता पी.पी.एस.सी. कम्पीट कयलैन्ह। दोसर बेटी- गीता डॉक्टर भेलीह आ तेसर सेवा करय लगलीह। तीनू बेटीक वियाह-शादी योग्य बरसँ विनु दान-दहेजेक भय गेल।

रामू काकाक तीनू बेटीक शादीमे हम गेल छलहुँ। आई रामू काकाक खुशी देखि हम कहलियैन्ह-

“रामू काका, जाहि दिन तेसर बेटीक जन्म भेल छल ताहि दिन अहाँ कतेक उदास रही। आब कहू जे बेटा पैघ आकि बेटी?आई एहि परोपट्टामे अहाँक परचम फहरा रहल अछि की नहि? माय-बाप, बाल-बच्चाकेँ जन्म दैत छैक। मुदा भाग्यक निर्माण ओकर कर्त्तव्य करैत छैक।”

रामू काका हमरा आगाँ हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ बजलाह-

“बौआ तोहरे बोल भरोसपर हम जिंदा छी, एहिमे तोहर बड़ पैघ योगदान छल।”

रामू काकाक आँखिसँ प्रेमक अश्रु बहै लगलैन्ह। q

२

डॉ. बचेश्वर झाक आलेख

कन्यादानक भीषण समस्याक कारण

मध्य मिथिलांचलमे वैवाहिक परम्पराक पालन आइसँ अनुमानत: सय वर्षक ...... दोसर रीतिसँ होइत छल। ताहि समयक हेतु ई रीति-रेवाज हितकर रहल होएत, मुदा तकर प्रभाव बादक मैथिल सन्तानपर ताहि तरहेँ पड़ल जे एखनहुँ तकर छाप अमिट अछि।

ओनातँ कन्यादानक समस्या प्राय: सभ दिनसँ एक कठीन समस्या रहल अछि। समयानुसारे भलेँ ओकर रूप परिवर्त्तित होइत गेल हो...।

महाकवि विद्यापति अपन ‘पुरुष-परीक्षा’मे एही समस्याक सन्दर्भ चचर्चा कएलन्हि-

“कन्या ककरा दी?पुरुषकेँ?”

पुरुष शब्दक प्रयोग ओ विशिष्ट अर्थमे कएने छथि। अन्यथा सभ पुरुषाकार थिकाह।
वीर, ध्यर्यवान, विद्वान आ वुद्धिमान, चारिटा पुरुषक लक्षण होइछ,एकर अभाव जकरामे छैक से पूँछ हीन पशु थिक। तँ कन्याक विवाह पुरुषसँ हो।

खास कऽ कन्यादानक समस्या आजुक समस्यासँ भिन्न होएबाक कारण ओहि समयमे जनसंख्या कम आ भूमि अधिक रहलोपर सन्ताँ भूमिसँ भरण-पोषण सहजहि भऽ जाइत छल। आजुक अपेक्षा आवश्यकता कम आ उपभोगक पदार्थो परिमार्जित नहि। विज्ञान अपन प्रभाव ओतेक नहि देखओने छल। आइ तँ विज्ञान मिथिलाक कथे कोन सम्पूर्ण धरतीक देश लोक, संस्कृतिकेँ जोड़ि देलक अछि। तँ ओहि समयमे मिथिलाक लोकक उक्ति छल-

“उत्तम खेती, मध्यम वाण।

निषिद्ध चाकरी, भीख निदान।।"

अर्थात् खेतीकेँ उत्तम, व्यापारकेँ मध्यम, चाकरी वा नौकरीकेँ निषेध तथा भीख मांगव सभसँ नीच कर्म मानल जाइत छल। इएह कारण छल जे एहिठाम कहल जाइत अछि-

"कर खेती घरही भला।"

कहबाक तात्पर्य घरेमे रहू, खेती करू अमोधमंत्र छल। एतबे नहि, ओहि समयक हेतु अधिक सन्तानवान होएब मान्य छलैक। किएक तँ प्राकृतिक प्रकोपक कारण जनाधि आ नहि होमए पबैत छल, जाहिसँ जन संख्याक वृष्टिक ऊपर अंकुश स्वत: लागि जाइत छल। एतए तक जे परिवारक कोन कथा? गामक गाम जनशून्य भऽ जाइत छल। तँ अधिक सन्तानबला लोक पुण्यवाण कहबैत छलाह। बेटा नहि रहलापर बेटीक सन्तान वंशक टेक रखैत छल.........।

काल-क्रमे बेटी .... होपरान्त जमीन-जथा दऽ घरेमे राखब परिपाटी चलल जे 'कनेदानी' कहबैत छल। कनेदानी राखब प्रतिष्ठाक बात बुझल गेल। कनेदानीक सन्तान भगिनमान कहबैत छथि। जनिक पुरुषा कनेदानी रखलन्हि से डीही कहबैत छथि। कनेदानीक सन्तान डीही पक्षक परम भक्त होइत छलाह। बिना दरमाहाक नोकर ई भगिनमान होथि, संगहि डीहीक कृपाकांक्षी सेहो। तँ जनहासक कारण नहि बुझाइत छल। कनेदानीक प्रति प्राय: भलमानुष होइत छलाह, जे बादमे बिकौआक नामसँ जानल गेलाह।

बिकौआक सन्दर्भ किछु चर्चा : हरि सिंह देव महाराजक द्वारा पञ्जी-प्रवन्ध कएल गेल। एहिसँ मैथिल-व्राह्मणक पञ्जीकृत भेलापर श्रेणी बनल। ओहिमे योग, श्रोत्रभ्, भलमानुष प्रभृतिक उदय भेल। पञ्जीक अनुसार जे निम्न श्रेणीकेँ प्राप्त कएलन्हि ओहिमे सँ किछु सम्पन्न व्यक्ति उच्च श्रेणीक व्राह्मणसँ सम्बन्ध कए सर्व साधारणक दृष्टिमे प्रतिष्ठा हासिल करबाक चेष्टा कएलन्हि। एतए तक जे निम्न श्रेणीक व्राह्मण पैघसँ पैघ जमींदार रहितहुँ ओहि प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त नहि कए सकैत छलाह। फलत: अर्थ अपन प्रभाव देखओलक अन्तरालमे एक बाट प्रशस्त भऽ गेल जे निम्नो श्रेणीक ब्राह्मण वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा अपनाकेँ ऊपर उठा सकैछ। स्पष्ट अछि कनेदानी राखब एहि पञ्जी-प्रथाक कारणे चलाउल गेल। सुखी सम्पन्न लोक एहि सुविधाक उपयोग करए लगलाह। उत्तरोत्तर देखा-देखीमे एक तरहक उपरौंझक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल। किन्तु, ओहिकालक मान्यताक कारणेँ एहन बहुत कम लोक छलाह जे निम्न श्रेणीक लोकसँ सम्बन्ध करए चाहैत छलाह। फल ई भेल जे एहि अल्पसंख्याक व्राह्मणक मांग बढ़ि गेल। एहि वर्गक लोककेँ समाज तेहन ने टीकासनपर चढ़ा देलक जे सभ व्याहकेँ मात्र पेशा बनाए लेलक। इएह वर्ग बिकौआ कहाओल अर्थात् जे बिकथि। विक्रयबला पदार्थसँ ई वर्ग भिन्न छलाह। पूर्ण मूल्य देलहुँ सन्ताँ क्रय कएनिहारक जूतिमे ई नहि रहथि। ई बिकौआ बिकथि मात्र विवाहक हेतु। विवाहोपरान्त ई पूर्ण स्वतंत्र रहथि। ने स्त्रीक प्रतिदायित्व आ ने सन्तानक प्रति स्नेह। मतलब रहन्हि केवल विदाइसँ कोनोटा त्रुटि सासुरमे भेलापर रूखि एहन तँ साधारण बात रहन्हि, अपन सन्तानक जन्मक सम्बन्धमे भ्रामक प्रचार कऽ देबामे संकोच नहि करथि। एहन तरहक दन्त कथा वल्हमीझाक आदिक सम्बन्धमे प्रचलित अछि।

बिकौआक लक्षण : ई बिकौआ आजुक तुलनामे कम नहिकिन्तु, मुद्रा मोचन हजार-लाख जँ नहि नहि करैत छलाह तँ दान जैतुक .... सँ लेथि। जाहि कन्यासँ विवाह होइन्ह तकर पालनक भारसँ मुक्त रहबे

करथि, संगहि अलाबा ऊपरसँ हिनक धाक कड़गर रहन्हि। उत्तम भोजन, वस्त्र आ ढेउवा विदाइक रूपमे भेटि जाइन्हि। एतए तक जे बाप-पुरुषा वा नीज रीन-कर्जा लेल सेहो सासुरेसँ चुकाएब उद्देश्य रहन्हि। सालमे एक-आध बेर सासुर जाथि ताहि सहवाससँ जे सन्तान उत्पन्न होइन्हि वएह कनेदानीक वा डीहीक उपलब्धि बूझल जाइत छल। ई बिकौआ आकर्मण्य जीवनक अभ्यासी भऽ गेल छलाह। ...... किछु नहि मात्र पेट पोशव उद्देश्य रहन्हि। तम्बाकू, भांगक पूर्ण अभ्यासी रहथि। शरीरिक चेष्टा घिनौन बनौने रहथि। चालि-ढालि पूर्ण असभ्य जेकाँ रहैत छलन्हि। माथमे चानन-ठोप लगौने रहथि। पैरक वेमाय विदरल ठोर नमरल पेट चुबैत कनेरक टारी रथि तथापि एहनो अश्रद्ध रूप भेलापर महग रहथि, किएक तँ पञ्जीक प्रमाण पत्र भेटल रहन्हि। तँ कन्या पक्ष हिनक रूप, गुण वैभवक मूल्यांकन नहि कऽ सोन सन कन्याकेँ ढेंग संग बान्हि दैत छल। बादमे ई बिकौआ वदु-विवाही होमए लगला, जाहिसँ मैथिल व्राह्मणमे कन्यादानक मुख्य समस्या छल। बहुविवाहक समस्या बिकौआ द्वारा केवल उत्पन्न भेल से नहि आओरो कारण भऽ सकैछ,जेना राजकुलक संसर्गसँ व्राह्मणमे कुप्रथा अएबाक संभावना। पहिने व्राह्मण तपी, त्यागी होथि किन्तु मंत्री अथवा राजपुरोहित भेलापर देखाउससँ बहु विवाहक अभ्यासी भेलाह। किएक तँ राजभवनमे रानिक अतिरिक्त सुन्दरीक झुण्ड निवास करैत छल। परञ्च, मैथिलक ई बिकौआ वर्ग अर्थक लोभसँ निम्न कुलमे पच्चीस-तीस स्त्रीसँ विवाह करैत छलाह। एतबे नहि, श्मशानघाट जेबासँ पूर्वो विवाह कऽ लैत छलाह। जँ प्रथम स्त्रीकेँ घर अनितो छलाह तँ शेषकेँ नैहरेमे छोड़ि दैत छलाह। इएह जीवन निर्वाहक उत्त साधन छलन्हि। एहि बहु विवाहक प्रथाकेँ तोड़बाक चेष्टा प्यारेलाल मुंशी 1870 ई.मे कएने छलाह। हुनका आन्दोलन जोर-शोरसँ चलल छल। ओहि परिप्रेक्ष्यमे 1878 ई.मे तिरहुतमे 54 बिकौआ व्राह्मण मृत्युसँ 665 स्त्री विधवा भेल छल जाहिमे अधिकांश युवतीमे छल। एतए तक जे मधुबनी जिलाक कोइलख निवासी एक बिकौआ 50 वर्षक आयु तक 35 विवाह कऽ नेने छलाह। सन् 1875 ई. दरभंगा जखन सवडिविजन बनल तँ तात्कालीन पदाधिकारी मेटलाक आदेश कएल जे प्यारे लाल मुंशीक आन्दोलनक अनुसार बहु विवाह बन्द हो। एहि तरहेँ बिकौआ द्वारा बहु विवाहक समस्या उत्पन्न भेल से कही वा मिथिलाक लोक द्वारा बनाओल गेल। रूढ़िवादी विचारक कारण कन्याक भविष्यक समीक्षा नहि कऽ अपन उत्तरदायित्वकेँ समाप्तिक बहानामे बिकौआक ठोंठमे कन्या बान्हब थिक।

बंगालक कुलीन प्रथा सेहो मिथिलाक बिकौआ प्रथाक समान छल। वार्ड (Ward) महोदयक अभिलेखसँ पता चलैत अछि जे वंगपराक उदय चन्द्रकेँ 65 स्त्री छलन्हि, कुशदाक राम किंकरकेँ 72 स्त्रीसँ विवाह रहन्हि। एक एहनो घटना भेटैत अछि जे दुगलीक रामचन्द्र मुखर्जीकेँ 32 स्त्री रहैन्ह आ वो 65 वर्षक अवस्थाकेँ पार कएने छलाह, दैवात् यक्ष्माक शिकार भऽ गेलाह, मृत्युक निश्चितता जानि बालक कहलथिन्ह-

“दीन भावसँ बाबूजी अपने तँ मरैत छी घरमे एको चुटकी अन्न नहि अछि, एहन हालतमे श्राद्धो कोना होएत?”

पिता किछु गंभीर भऽ निहसंकोच भऽ कहलथिन्ह-

“अविलम्ब नव गोपाल चटर्जीक 9 वर्षीय कन्यासँ हमर विवाहक व्यवस्था करू, किछु दिन पूर्व प्रस्ताव आएल छल, एखनो ओ कन्या अविवाहिते अछि।”

पुत्र सम्वाद पठा कए 250 रूपैया पर बात निश्चित कएलथिन्ह। विवाहक 9 मासक अभ्यंतरे रामचन्द्र मुखर्जीक मृत्यु भऽ गेलन्हि। एहि तरहेँ ओ अपन श्राद्धक इन्तजाम विवाहे द्वारा पूरा कए मुइलाह। ई सभ छल बहु विवाहक कुपरिणाम! विवाह सन पवित्र रेवाजकेँ दुषित करब समाजक कुचालि कहू वा कलंक।

बिकौआ द्वारा विवाहित कन्याक जीवन झाँकी :एहि प्रथाक प्रकोप तँ तेहन छल जे बूढ़, बकनेर, अकर्मण्य वरक संग तरूणीक विवाह एक प्रकारक विडम्बना कहल जा सकैछ। अनेको कोम लांगी जीवनक सोलहम वसन्तक पहिने विधवा भऽ कठीन जीवन जीबाक अभ्यासी होइत गेल। राजा राम मोहन रायक शती-प्रथा उन्मूलनसँ अनेको विधवा वा बूढ़क स्त्री काम पिपासावश कुत्सित कर्मक भाजन भेल। एतबे नहि, बिकौआ द्वारा विवाहित किशोरी पिताक घरमे आजीवन थोपल रहलासँ कुमार्ग गामी भऽ जाइत छल। एहिसँ दारूण स्थिति ई भेल जे मैथिलक दरिद्र समुदाय बिकौआक वंशधर एखनो अछि। हिन्दूस्तानक अधिकांश शहरमे भनसिया, भीमंगा वा ताईं नीच कर्ममे प्रवृत मैथिल ब्राह्मण बिकौआक सन्तान थिकाह। इहए कारण अछि जे मिथिलेत्तर प्रान्तमे मिथलाक कुख्यातिक कुचेष्टा लोक करैत अछि। आब बिकौआ प्रथाक अन्तो आवश्यक छल।

बिकौआ प्रथाक अन्त कहू वा विकल्प दहेज प्रथाक आरंभक कारण- अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसारसँ लोक नैतिक स्तर ऊपर उठए लागल। विज्ञान विकाल भेल। वैज्ञानिक आविष्कारसँ लोक जीवनमे आमूल परिवर्त्तन होमए लागल। चिकित्सा विज्ञान प्राकृतिक प्रकोपकेँ रोकि देलक। जनह्रास नहि भेलासँ जनवृद्धि अवाध गतिमे होमए लागल। स्वाधीनताक कारणेँ जन जीवन उर्द्धगामी होइत गेल। तँ आब कनेदानी राखब आ ओकर सन्तानक भार उठाएब असौकर्ज भऽ गेल। शिक्षित समुदायमे वैचारिक क्रान्ति आएल तँ पुरना प्रथा, रूढ़िवादिता, कुलीन प्रथा वा बिकौआक समूल नष्ट करब आवश्यक प्रतीत भेल। अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाहक परम्पराकेँ .... अपन वैभवक अंश नगद रूपमे दऽ कन्याक विवाह कराएबक परिपाटी शुरू भऽ गेल।

दहेजक दारूण स्वरूप : जहिना बिकौआक श्रेणी छल तहिना शिक्षित वर्गक माप दण्ड कायम भेल व्यवस्था रूपमे। डाक्टर, इंजीनियर, ओभरसियर,टेकनीसियन .... श्रेणी सरकारी सेवक प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी ओ चतुर्थवर्गीय गैर सरकारी सेवकक संगहि शिक्षण संस्थाक सेवक श्रेणी कायम भेल। आब की छल वरक विक्री उपर्युक्त आधारपर होमए लागल। बरदहटा जकाँ वरक हाट सेहो लागल रहैछ जेन सौराठक सभा गाछी। जाहि कन्याक पिताकेँ जेहन उपाय रहैछ तेहन श्रेणीक वरकेँ खरीद कऽ विवाह करबैत छथि। दिनानुदिन दहेजक प्रकोप बढ़ले जाय रहल अछि। एहि दहेजक दारूण रूप तँ ई भेल जे गरीब कुमार व्रह्मण जे अयोग्य अछि ओ अविवाहिते मरैत अछि। अनेको उदाहरण भेटैत अछि। बिकौआ प्रथामे एहन बात नहि भेल रहए। खैर! दहेज-प्रथामे सक्षमक संग विवाह करायब युग-धर्म मानल गेल अछि, मुदा दहेजक विकराल रूप सामने अछि। बिकौआ रूसैत छल तँ ओ मनौती कएलापर मानि जाइत छल, किन्तु ई दहेज-प्रथाक शिक्षित वर्ग तँ रूसलापर स्त्रीक जान लऽ लैत अछि। एतबे नहि, कन्याक अपमान, तिरस्कार ओ अवहेलना करब स्वाभाविक होइछ। मनोनुकूल विदाइ वा दहेजक राशिमे कमी भेलापर सासु, ससुरक संग आगत व्यवहार तककऽ दैत छथि। पहिलुका बिकौआ मांग, तमाकू खाइत छल तँ आजुक वर मदिरा,सिगरेट, चरस ओ .... अभ्यासी होइत अछि। बिकौआ एक आध बेर सासुर अबैत छल, मुदा आजुक ई बिकौआ सालो भरि

सासुरे रहबाक आकंक्षी अछि। अन्तर सिर्फ एतबाटा जे बिकौआक स्त्री पितेघरमे रहैत छल जाहिसँ मर्यादित छल, मुदा एखनुका वरक स्त्री संगहि रहैत अछि, किन्तु एहि पढ़लाहीक शील,स्वभाव रहन-सहन चालि-ढालि वातावरणक कारणेँ विकृत भऽ जाइछ। अधिकांश स्त्री तँ शीलहरणक शिकार भऽ जाइत अछि। कोना बूझब जे बिकौआ प्रथाक अन्त भेल? आजुक ई दहेज प्रथा तँ ओकरोसँ विभिन्न रूपमे सामने आएल अछि। आजुक दहेज प्रथाक कारणेँ कन्याक पिताक धर्म, धन ओ इज्जत सभ नीलाम भऽ जाइत अछि। पाईक अभावमे कन्याक पिता बोझ तरहक दूभि जकाँ पिअरगात कृशकाय भऽ समय काटि रहल अछि। कतबो रूप-गुणसँ युक्त कन्या छन्हि,मुदा पाईक अभावमे हुनक पिताकेँ केओ मोजर नहि दऽ सकैछ। पैसाक पिशाची लोक योग्य-अयोग्य कन्याक सीमाकेँ सन्दिग्ध कऽ देने अछि। अनेको पिता-पुत्रीकेँ शिक्षित करैत छथि, ताकि हुनका बेटाबला दहेजमे छूट देताह मुदा से सम्भव नहि। योग्य वर कन्याक वरण करथि से ख्याल केओ नहि करैत छथि जाहिसँ निर्मल दाम्पत्य जीवन नशीव होएब कठीन भऽ गेल अछि। एकर प्रतिफल की होएत? मैथिल समाजक श्रृंखला टूटि जायत, आर्थिक विषमता सामाजिक जन्म देत।

एक दिसि जँ कन्या पक्ष बालक भीत जकाँ ढहल जाय रहल अछि तँ दोसर दिसि वरक पक्ष मनोरथ्झक पूल बिनु सिमेन्ट-बालुक जोड़बामे तल्लीन अछि। कहिया धरि ई दहेजक दाहसँ सन्तप्त रहत से नहि जानि।

दहेजक कारण अविवाहित कन्याक जीवन झाँकी : दहेजक दर्दनाक असरि तेहन तरहेँ पड़ि रहल अछि जे अधिकांश सम्भ्रान्त परिवारक कन्याक कौमार्य अवस्था विवाहक पतिक्षेमे समाप्त भऽ जाइछ। एतए तक जे यौवनकालमे नारकीय अवस्थाक अनुभव करैत अछि। प्राय: बेटीबला ओ बेटाबला दूनूक समक्ष ई समस्या उत्पन्न छन्हि।केओ एहिसँ मुक्त नहि छथि मुदा टाका गनाएब आ गानबकेँ आइ मर्यादाक विषय जानल जाइत अछि। जे जतेक टाका गनबैत छथि ओ ओतेक गर्वोक्तिसँ समाजकेँ बुझबैत छथि, संगहि जे गनैत छथि से अप्पन बड़प्पनक विशद् वर्णन करैत छथि।

सभसँ खेदक विषय तँ ई जे गरीब लोक जे बेटीक प्रति ताका लैत अछि वा छल, तकरा लोक बेटी बेचबा कहैत छल। घृणाक दृष्टिसँ देखैत छल, आइ ओकर उनटा हवा बहि गेल अछि। बेटा बेचनिहारकेँ लोक बेटा बेचबा नहि कहि समाजमे उच्चासन दैत अछि जाहिसँ बेटाक विवाह टाका लऽ कए करबामे गौरवान्वित होइत अछि। ई समाजक लोकक विचारहीनता नहि तँ आर की? एहिसँ निन्दनीय बात आइ की होएत? तखन तुलसीक पाँति स्मरण भऽ जाइछ-

"समरथकेँ नहि दोष गोसाईं।"

अर्थात् पैघ लोककेँ दोषी नहि कहल जाइछ। ओइ दहेजक पृष्ठपोषक समाज पैघे लोक छथि तँ एकर उन्मूलन सम्भव कोना? नहि जानि बिकौआक जगह दहेज आएल आ ई कहिया धरि लोककेँ खिहारैत रहत? आइ तँ आइ तँ अधिकांश ललना अभावी पिताक छातीपर दुर्गम पहाड़ बनि बैसलि अछि। कतेक तँ विवाह सूत्रमे बान्हलोपर भाग्यपर झखैत अछि। मनोनुकूल घर-वरक अभवमे संघर्षरत जीवन बिता रहल अछि। सुख सुविधामे पलल बालिका पतिक घरमे गंजन, दुव्यर्वहार, व्यंग्यपूर्ण वाक् वाणसँ विद्ध होइत रहैछ जकर कारण होइछ लेन-देनक गड़वरी, दान जैतुकमे मनचाही वस्तुक आपूर्त्तिमे कमी। एतबे नहि दहेजक उपरान्त वरियातक विशिष्ट सेवा नहि भेलासँ वा कोनो तरहक विघटन भेलापर कन्याकेँ सासुरमे पति द्वारा वा

पतिक घरक लोक द्वारा अमर्यादित व्यवहार कएल जाइछ। कतेकठाम तँ कन्याक हत्या कऽ देल जाइछ आ नहि तँ कन्या स्वयं आत्म हत्या कऽ लैत अछि। सभक मूलमे दहेजे अछि जे कन्याक पिताकेँ विवश कऽ दैछ, विवशताक कारण होइछ द्रव्याभाव, अर्थाभाव। कोजागरा, जड़ाडरक संग-संग साल भरि तक व्राह्मण समाजमे बेटीबलाक तनोतरी ढील भऽ जाइछ तँ विवाहसँ विध भारी कहल जाइछ।

दहेज-प्रथाक उन्मूलनक उपाय- यद्यपि वर्त्तमान सरकार दहेज लेनिहार ओ देनिहार दुनूकेँ कठोर दण्ड देबाक अध्यादेश जारी कएल अछि, मुदा ई नैतिक पतनबला लोक एखनहुँ कम्बल ओढ़ि कऽ घी पीबएबला बात रखने अछि। सरकारक आँखिमे तँ गर्दा दैते अछि संगहि समाजोकेँ उल्लू बना रहल अछि। लेन-देन कऽ लइए। गुप्त रूपसँ ताकि हम आदर्श रूपमे कुटमैती कएल अछि। तेँ सरकारक द्वारा एकर उन्मूलन कथमपि सम्भव नहि। एकरा लेल वैचारिक क्रान्ति चाही,समाजक हरेक व्यक्तिक नैतिक समर्थन चाही। ई एक कलंकपूर्ण रेवाज थिक जतए पाइपर दू आजीवन मिलि कए रहए बला जीव तकर प्रेमक आकलन पाइपर हो। निश्चय एहि तरहक समाजकेँ कलंकित समाज घोषित कएल जाय जतए टाकाक आधारपर दाम्पत्य सम्बन्ध बनाओल जाइछ। एक शब्दमे कहए पड़त जे विवाहक पवित्रताकेँ तखने कायम राखल जायत जखन हरेक वर्गक लोक आत्मगत विचार कऽ विवेकपूर्ण निर्णय लेथि। आडम्वरपूर्ण विवाह प्रक्रियाक संग दहेजक विकृत परिपाटीक विरोध करथि। भविष्यक जननी सृष्टिक संरचना करनिहारि आजुक कन्या काल्हि पूर्ण अभिशप्त भए जाएत।

यत्र नार्य वस्तु पूज्यन्ते,

रमन्ते तत्र देवता।

मनुस्मृतिक ई वाक्य सर्वथा अमान्य भऽ जाएत आ एक दिन हमरा लोकनिकेँ अवनतिक महान गर्तमे लऽ कए चल जायत!q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ) २. डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (पहिल खेप)

१

रबीन्द्र नारायण मिश्र

तीनिटा आलेख

डॉ. जयकान्त मिश्र (संस्मरण)

सन्१९७८ इस्वीक जनवरी मासमे दिल्लीसँ स्थान्तर भए हम इलाहाबाद गेल रही। ओहि समय प्रथम बेर डॉ. जयकान्त मिश्रजी सँ हुनकर तीभूक्ति, सर पीसी वनर्जीरोडस्थित घरमे भेँट भेल। बिना कोनो पूर्व परिचय रहितौं ओ सभ काज छोड़ि हमरासँ भेँट केला।एकटा मैथिलकेँ हमर डेरा तकबाक हेतु कहलखिन। ओतहिसँ हमर हुनका संग परिचय ओ सम्पर्कक क्रम प्रारंभ भेल जे अन्त धरि चलैत रहल।

जखन-कखनो हम हुनकर डेरापरजाइतँ ओ सभ काज छोड़ि हमरासँ अत्यन्त अपनत्व भावसँ गप्प करथि। अपनेटा नहि, अपितु हुनक पत्नी, ओ संगे रहनिहार परिवारक अन्य लोकनि सभ सेहो ओहिना गप्प-सप्पमे संग देथि। जलखै, चाह, पान तँ हेबे करइ।

ओही क्रममे कतेको गणमान्य मैथिल लोकनिसँ हुनकर डेरापर भेँट भेल। हुनकर अध्ययन, अध्यापन, लेखन सबहक अवलोकन करबाक अद्भुत अवसर भेटल। कए दिन हुनका संगे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभाग गेलहु, जाहिठाम ओ अंग्रेजी विभागक अध्यक्षक पदपर कार्यरत छलाह।

इलाहाबादमे रहनिहार मैथिल समाज डॉ. जयकान्त मिश्रसँ पूर्ण परिचित छलाह। अधिकांश मैथिल सभसँ हुनकर व्यक्तिगत सम्पर्क छलनि। प्रत्येक साल विद्यापति समारोहमनाओलजाइत छल। डॉक्टर जयकान्त मिश्र ओहिमे अवश्यमेव रहैत छलाह। हुनकर डेरापर निरन्तर मैथिलीक विकास केना हो, तकर चर्चा होइत रहैत छल। ओ सदिखन बजैथ-

“मैथिलीमे लिखल करू। मैथिलीक हेतु काज करू।”

संगे मैथिलीक हेतु कएल गेल अपन अनवरत संघर्षक चर्चा सेहो होइत, जाहिसँ मैथिली विकास यात्राक साक्षातअनुभव होइत छल।

मैथिली भाषाकेँ बिहार लोक सेवा आयोगमे हटा देल गेल रहइ। तकरा पुनश्च आपस अनबामे, मैथिलीकेँ बच्चा सबहक शिक्षाक अनिवार्य माध्यम बनेबाक हेतु ओ कहि नहि, कतेको बर्ष संघर्ष करैत रहलाह आ अन्ततोगत्वा अपन प्रयासमे सफल रहलाह। मैथिलीक विकास हेतु ओ गाम-गाम घुमैत रहलाह। ततबे नहि,जतए कतहु मैथिलीक चर्चा होइत आकि कोनो कार्यक्रम होइत तँ ओहिमे डॉ. जयकान्त मिश्रजी अबस्से भाग लेथि।

आयु बढ़लासँ नाना प्रकारक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या रहैत छलनि। हुनका कतेको साल पूर्व पेसमेकर लागल छलतथापि जँ कतहु मैथिलीक कार्यक्रममे हुनका बजाओल जाइत, तँ ओ अबस्स जाथि। परिवारक लोक चिन्तित भए जाइत छलखिन।

एकबेर हम इलाहाबादसँ पटना जाइत रही। स्लीपरमे हमर आरक्षण छल। डॉक्टर जयकान्त मिश्रजी केँ देखलहुँ। ओहिना ठाढ़, बिना सीटेक यात्रा कए रहल छलाह। बहुत आग्रह केलापर ओ हमर सीट लेबाक हेतु तैयार भेलाह। कहथि जे ओ अहिना चलि जेता। ई छल हुनकर उत्साह- मैथिली कार्यक्रमे भाग लेबाक। ओहि दिन पटनामे कोनो मैथिली कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु जाइत छलाह।

डॉ. जयकान्त मिश्रजीक भाषा ओ व्यवहारमे अद्भुत मधुरता छल। कखनो नहि लगैत जे एतेक पैघ विद्वानसँ गप्प कए रहल छी। जे जेहने स्तरक लोक रहैत,तेकरा संग तेहने भए गप्प करितथि। पूरा घ्यान देथि।घरक सदस्य जकाँ ओकर पूर्ण स्वागत करथि। घरक प्रथम तलपर हुनकर पुस्तकालय छल। ओहिमे बैस कए ओ अध्ययन, लेखन करैतरहैतछलाह। इलाहाबादसँ लघुकाय एकटा मैथिली पत्रिकाक सम्पादन सेहो करै छलाह। हुनकर नाति, भातिज सभ ओहि पत्रिकाक मैथिल लोकनिमे वितरणक व्यवस्था करथि। एकाध बेर हमरो ओहि काजमे ओ लगा लैत छलाह।

माघ मासमे प्रयागमे संगमतर पर ओ सपरिवार मास करैत छलाह। मिथिलाक प्रसिद्ध माछबला झण्डा मैथिल पण्डा सबहक पहिचान अछि। ओहि झण्डाकेँ देखि कए जयकान्त बाबू डेराक ठेकान लागि जाइत छल।

नवम्बर २००७ इस्वीमे हम इलाहाबाद गेल रही। हुनकर डेरापर गेलहु। परन्तु ओ काशी मास करए चल गेल रहथि। हुनकासँ भेँट नहि भए सकल। हुनकर डेरापर हुनकर नाति, एवम् परिवारक अन्य सदस्य सभ छलाह। डेरा उदास-उदास लगैत छल। परिवारमे कएटा दुर्घटना भए गेल छल। किछु साल पूर्व हुनक ज्येष्ठ पुत्र डा. रूद्रकान्त मिश्रक आकस्मिक असामयिक निधन भए गेल छल। आओर कएटा गप्प-सप्प...। एहि सबहक आभास घरमे भए रहल छल। किछुकाल बैसला बाद हम सभ ओतए-सँ अपन स्मृतिकेँ पुनश्च जगा कए ओहिठामसँ विदा भए गेलहु। डॉक्टर साहेबसँ भेँट नहि भए सकल।

डॉक्टर जयकान्त मिश्रजीक पिता महामहोपाध्याय डॉ. उमेश मिश्रक बर्षी बहुत यत्न पूर्वकमनाओलजाइत छल। ओहिमे डॉक्टर साहेब ओतए हम (जाधरि इलाहाबादमे रहलहुँ) नियमित आमंत्रित होइतछलहुँ। हुनकर सम्पूर्ण परिवार अत्यन्त मनोयोग पूर्वक ब्राह्मण भोजनक व्यवस्था करैत रहलाह। नाना प्रकारक भोजनक व्यंजन सबहक स्मरणे मात्रसँ मन आनन्दित भए जाइत अछि। भोजनक संग-संग कतेको गप्प-सप्प मैथिल लोकनिसँ ओहि अवसरपर भेँट भए जाइत छल।

इलाहाबादमे गप्प-सप्पक क्रममे ओ मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे मान्यताक सम्बन्धमे हुनक कएल गेल प्रयासक वर्णन करथि। ओहि हेतु ओ दिल्लीमे तत्कालिन प्रधान मंत्री द्वारा मैथिली पोथीक प्रदर्शनीमे भाग लेब, दिल्लीक उपराज्यपाल स्व. आदित्यनाथ झाजीक प्राप्त समर्थन एवम् सहयोगक चर्चा सेहो करैत छलाह।

एकबेर हम डॉ. शुभद्र झाजीक संग इलाहाबादमे डॉ. जयकान्त मिश्रजीक ओहिठाम जाइत रही। रस्तामे डॉ. जयकान्त मिश्रजीक मैथिलीक प्रति अनुराग ओ मैथिलीक विकास हेतु संघर्षक प्रशंसा करैत डॉ. शुभद्र झा कहलाह-

“मिथिलामे डॉ. जयकान्त मिश्रक एवम् हुनक पूर्वज लोकनिक अद्भुत योगदान अछि।”

संगे ईहो कहलाह-

“एहन बहुत कम परिवार भेटत जाहिमे लगातार छह पुश्त सरस्वतीक एहन आर्शीवाद प्राप्त रहल हो।”

ओ दिल्ली आबथि तँ हमरा सूचित करथि। कतेको बेर तँ ओ हमरे ओतए ठहरैत छलाह। कए बेर हवाइ यात्रासँ उतरि लबनचूस बच्चा सबहक लेल नेने अबैत छलाह। जाधरि ओ डेरापर रहथि, निरन्तर मैथिली सम्बन्धी चर्चा होइत रहैत।

मैथिली आन्दोलनक संघर्ष यात्रा आओर अनेकानेक लोकनिक योगदानक चर्चा सेहो होइत।

एकबेर ओ (डॉ. जयकान्त मिश्र) दिल्लीमे मैथिलीक प्रश्न पत्र बनबए खातिर आएल रहथि। संगमे स्व. सुमनजी एवम् डॉ. नवीन बाबू सेहो रहथिन। ओ तीनू गोटेहमर आग्रहपर पुष्पबिहार, दिल्ली स्थित हमर आवासपर अएला आ एकसंग हुनका सभकेँ भोजन करेबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। ओहि अवसरकेँ स्मरण करैत अखनो रोमांचित भएजाइतछी। तीनू गोटेक एकट्ठे हमरा ओतए आएब आओर हुनकर वार्तालाप सुनि मोन आनन्दित भए गेल। आनन्दितो केना ने होइत, डॉ. सुमनजी एवम् डॉ. नवीन बाबू सी.एम. कौलेज- दरभंगामे हमरा मैथिली पढ़ौने रहथि।

डॉ. मिश्रजी अत्यन्त समाजिकव्यक्तिछलाह। इलाहाबाद किंवा बाहरोक मैथिल लोकनिकेँ व्यक्तिगत स्तरपर ओ मदति करैत छलाह। नयाकटरा, इलाहाबाद स्थित हमर डेरापर कएक बेर पएरे चलि आबथि। कतेको मैथिल विद्यार्थी सभकेँ ओ अपना ओहिठाम राखि कए हुनकर शिक्षामेसहायता करैत छलाह।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष पद हेतु हुनका बहुत विरोधक सामना करए पड़ल छलनि।ताहिखातिर ओ इलाहाबाद उच्च न्यायालयमे केस सेहो केने रहथिन। अन्तोगत्वा हुनकर विजय भेल, आ ओ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष भेलाह। हुनकर विरोधी सबहक कहब रहैक जे ओ मैथिलीमे लिखै छथि। हुनकर पी.एच-डी.क विषय 'मैथिली भाषाक इतिहास' छल तखन ओ अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष केना भए सकै छथि?

जयकान्त बाबू दिल्ली आएल रहथि। तहिया हुनकर पोती रोहिनीमे रहैत छलखिन।। हुनकासँ भेँट करबाक रहनि। हमरा संगे चलए कहलनि। बसपर ठाढ़े हम दुनू गोटेरोहिनी विदा भेलौं। इलाहाबादसँ एकटा पोटरी अनने रहथि। तेकरा उपहार स्वरूप अपन पोतीकेँ देलखिन। किछु कालक बाद हम सभ ओहिठामसँ आपस भए गेलहु। ओहि पोतीक बिआह दिल्लीएमेभेलनिएवम् बिआहक हकार हमरा देबाक हेतु डॉ. रूद्रकान्त मिश्र (कन्याँक पिता) स्वयं आएल रहथि। हम बिआहक अवसरपर गेलो रही। बिआहमे डाक्टर साहेबक सभ भाए आएल रहथिन। कोनो प्रकारक दहेज नहि लेल गेल छल। डॉक्टर साहेब दहेज रूपी लेन-देनक खिलाफ छलाह एवम् एकरा मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिकूल कहथि।

डॉक्टर जयकान्त मिश्रजीक पिता महामहोपाध्याय- डॉ. उमेश मिश्रक बनाओल मकानमे डॉक्टर साहेब एवम् हुनकर भैयारी लोकनि सेहोरहैतछलखिन।। सभसँ शुरूबला हिस्सामे डॉक्टर साहेब रहथि आ तकर बादबलामे आर भाए सभ।

डॉक्टर साहेबक व्यक्तिगत जीवनमे, परिवारोमे भोजन आ रहन-सहनमे मिथिलाक संस्कृतिक अमिट छाप छल। मकानक ओसारपर माछक मूर्ति लटकल,सदैव झूलैतरहैतछल। घरमे भोजन बनबएकाल देहपर वस्त्र

नहि रहक चाही। ब्राह्मण भोजनकाल परसनिहार आ भोजन केनिहार गंजी, कमीज नहि पहिरथि। भोजनमे पियाजु-लहसुन नहि पड़ए। जखन कखनो ओ बाहर यात्रापर जाथि तँ अपन नियम सबहक पालन कठोरतासँ करथि। बाहरमे बेसीकाल चुरा-दहीसँ काज चलबथि।

इलाहाबादमे रहितो ओ गामसँ सम्पर्क बनओने रहथि आ सभ साल मास-दू मास गाम जा कए रहथि। गामसँ लौटैतकाल सभ ग्रामीणक ओहिठाम जा कए भेँट करथि एवम् पुनश्च गाम एबाक इच्छा रखैत सभसँ विदा लेथि। एहि क्रममे किछु साल पूर्व ओ गाम गेल रहथि, ओतहि बहुत जोरसँ बिमार पड़ि गेला। हर्ट अटैक भए गेल रहनि। ओहिठामसँ लोक सभ उठा-पुठा कए दरभंगाअनलकनि।दरभंगामे थोड़ेक सुधार भेला पछाइत इलाहाबाद आपस अएला। इलाहाबादमे हुनकर मासो इलाज चलल। बहुत मुश्किलसँ हुनकर जान बाँचल। बिमारीसँ उठलाक बाद एक दिन फोनपर गप्प भेल रहए। बहुत दुखी बुझाइत रहथि। अबल भए गेल रहथि, तथापि मैथिलीक विकासमे अभिरूचि बनल छलनि आ ओहि विषयमे गप्प करैत रहलाह।

मैथिलीक विकासक हेतु डॉ. मिश्रजीक अद्भुत योगदान अछि। संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ सामिल करबाक हेतु ओ कतेको साल प्रयास करैत रहलाह। अन्ततोगत्वा हुनकर ईहो स्वपन्न साकार भेल एवम् मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम् सूचीमे सामिल कएल गेल।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सेवा निवृत्त भए ओ मध्यप्रदेशमे चित्रकुट स्थित ग्रामीण विश्वविद्यालयमे विभागाध्यक्ष भेलाह। ओहिठाम ओ कएक साल धरि रहि संस्थानक शिक्षण व्यवस्थाकेँ उत्कृष्ट बनेबामे संलग्न रहलाह। नानाजी देसमुख विश्वविद्यालयक उपकुलपति रहथि। देसमुखजी डॉ. मिश्रक कार्यसँ अतिशय प्रभावित रहथि। हुनकर इच्छा रहनि जे डॉ. मिश्र ओतए बनल रहथि परन्तु मैथिलीक काजमे विशेष रूचि ओ व्यस्तताक कारणेँ ओ विश्वविद्यालयक काजसँ त्याग-पत्र दए देलनि।

डॉक्टर मिश्र अत्यन्त अध्ययनशीलव्यक्तिछलाह। रातिमे जखन-तखन ओ उठि जाथि आ पढ़ल लागथि। हुनकर स्वास्थ्यक चिन्तासँ फिरसान भए परिवारक लोक कएक बेर आपत्ति करथि जे एतेक परिश्रम नहि करथि, मुदा ओ अपन कार्यक्रममे अनवरत लागल रहैत छलाह। मैथिलीक नाम सुनिते जेना हुनका स्फुर्ति आबि जाइत छल। पेसमेकर लगलाक बादो ओ मैथिलीक आन्दोलनक हेतु समर्पित रहलाह आ जतए कतहु हुनकाएहि काजे बजाओल जानि तँ ओ सहर्ष जाथि।

२००८ इस्वीमे, नव वर्षक आगमनक अवसरपर हम हुनका नव वर्षक मंगल कामना पत्र पठौनेरहिएनि। तकर जवाबमे ओ पोस्टकार्ड लिखने रहथि जाहिमे थर-थर कँपैत हाथसँ लिखल गेल अक्षर ओ हस्ताक्षर देखि हुनक एहू अवस्थामे सकृयताक प्रमाण भेटल। तकर बाद लगभग साल भरि कोनो सम्पर्क नहि रहल। जनवरी (२००९) मे एक दिन डॉ. धनाकर ठाकुरजी पत्र इन्टरनेटपर पढ़ल, जाहिमे डॉक्टर मिश्रक प्रयागमे मासक दौड़ान निधनक समाचार छल। कतेको बेर ओहि समाचारकेँ पढ़ल। मैथिलीक एकटा अनन्य सेवकक चिर संघर्षक बाद देहावसान भए गेल छल। मिथिलाक गाम-गाममे शोक सभामनाओलगेल। श्रद्धांजलि देनिहार लोक सबहक हुनक प्रति सिनेह अवर्णनीय छल।

डॉ. जयकान्त मिश्र अपने-आपमे मिथिलाक इतिहास छलाह। मिथिलाक कोनो एहन गाम नहि हएत जतए ओ मैथिली कार्यक्रमक हेतु नहि गेल होथि। विद्यापति समारोह हो, किंवा मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम सूचीमे सामिल करबाक हेतु आयोजित आन्दोलन हो, वा मैथिलीकेँ शिक्षाक अनिवार्य माध्यम बनेबाक प्रयास हो, सभठाम हुनकर नाम अबिते छल एवम्ओ व्यक्तिगत रूपसँ सभ कार्यक्रमे भाग लइते छलाह।

जखन-कखनो ओ भेटितथि, मैथिलीमे लिखबाक हेतु प्रेरित करबे करथि, मैथिलीक सम्मानक हेतु कएल जा रहल प्रयासक चर्चा करितथि, सभ काजपर मैथिलीसँ जुड़ल आन्दोलनकेँ प्राथमिकता देबे करथि।

मैथिलीक एहि अनन्य सेवकक कतेक उपकार अछि तकर वर्णन असंभव। हुनक साहृदयता, वाणीक मधुरता एवम् अपनत्व सदिखन मोन पड़ैत रहत आ मोन रहतहुनका संग बितौल गेल अद्भुत क्षण। ओ आब नहि छथि, मुदा कोटि-कोटि मैथिलक हृदयमे ओ सदिखन विद्यमान छथि ओ रहताह। q

पं. परमानन्द झा (एक समस्मरण)

लोक एहि दुनियाँमे अबैत अछि, चलि जाइत अछि मुदा ओकर कएल काज ओकरा जिबैतरखैत अछि।कतेको व्यक्ति एहि संसारमे एहने भेलाह अछि जे अपन संघर्षसँ अपनजीवनमे एकटा नव दृष्टान्तउपस्थित केलाह आ हुनका गेलाक बादो लोकसभ हुनक कृतित्वक चर्च कए गौरवक अनुभव करैत छथि।एहने लोक छलाह हमर ग्रामीण-स्वर्गीयपण्डित परमानन्द झा।

हमसब जखन नेने रही तँ हुनका कतेको बेर पैरे अबैत-जाइत देखिअनि।पैरे चलब ओहि समयमे कोनो अजगुतक गप्प नहि छलैक। मुदा ओ पैरे-पैरे मुजफ्फरपुर साक्षात्कर देबए चलि जाइत छलाह। लौटि कए ओहिना दन-दन करैत रहैत छलाह।कहिओ हुनका बैसल, आराम करैत नहि देखलिअनि। दिन-राति ओ किछु-ने-किछु करैत भेटताह।व्यर्थ आडंवर किंवा प्रदर्शन करबामे हुनका कोनो रुचि नहि छल।सौंसे दुनियाँ जँ खिलाफ भए जाए आ हुनका लगतनि जे ओ सहीपर छथि तँ ओ अपन निश्चयपर अडिग रहैत छलाह।

सत कहल जाए तँ एहन कर्मठ लोक बिरलैके देखएमे अबैत अछि।खेत कोरब, धान रोपब, धान काटब, दाउुन करब सँ लए कए इसकूलमे मास्टरी करब फेर विद्यार्थीसभकेँट्युशन करब, ततबे नहि पंडिताइ करब, सभटा काज ओ एकसुरे करैत रहैत छलाह।हमसभ जखन नेना रही तँ हुनके घरक पाछा ब्रम्ह स्थानमे हमर सभक इस्कूल छल। ओतए हमसभ पढ़ए जाइत छलहुँ।कै दिन पानि पीबाक हेतु हुनका ओहिठाम आबि जाइत छलहुँ।जखनकखनो ओतए जइतहुँ ओ निरंतर काजमे व्यस्त रहैत छलाह।छोट-छीन फूसक घरमे अपन साधनामे लागल रहैत छलाह। कोनो काज करबासँ हुनका परहेज नहि छल। लोक की कहत से हुनका सुनबाकसमय नहि छल।जे अपना ठीक बुझाइन से ओ करथि, जकरा जे मोन हो से कहैतरहए। “हाथी चलए बजार, कुत्ता भुकए हजार।”

जीवन भरि ओ घोर संघर्ष करैत रहलाह। कठोर परिश्रम ओ मितव्यितासँ गामक आस-पास चिक्कनजमीन-जाएदाद बनओलनि। अड़ेरचौकपर सेहो बहुत कीमती जमीन ओ कीनलथि।सुनबामे आएल जे अट्ठारह बीघा जमीन ओ अपना जीवनमे मेहनति एवम् इमान्दारीसँ कीनलथि।एतबे नहि जाहिठाम एकटा मामूली फूसक घर छल ओतहि पता नहि कतेको कोठरीक घर बना देलथि। ओहिठाम गेलापर अहाँकेँ चारू कातघरे-घर देखएमे आएत।गाम-घरमे जकरा पोखरिआ-पाटन कहैत छैक, ताही तरहक हुनकर ग्रामीण आवास अछि।आ से सभटा मेहनतिसँ केलाह, कोनो ककरो वइमानी नहि, अपितु अपन विद्या ओ वुद्धिसँ निरन्तर समाजकेँ सेवा करैत उपार्जन केलाह।ओ निट्ठाह कर्मयोगी छलाह।कखनो बैसलनहि रहितथि। कोदारि पारवसँ लए कए इसकूलक मास्टरी भावसँ ओ जीवन पर्यन्त करैत रहलाह। अगहन मासमेमाथपर धानक बोझा लदने सीताराम सीताराम कहैत डेगार दैत अपन धानक खेतसँ-खरिहान धरि अबैतजाइत हम हुनका देखिअनि-। जकरा जे बाजक होइक सेबाजए, हुनका लेल धनिसन।

ओ खाली धने अर्जित करैत रहलाह से बात नहि, अपितु घनघोर संघर्ष कएविद्योपार्जन सेहो केलाह। कतेको विषयमे आचार्य केलाह।फेर अंग्रेजी माध्यमसँ सेहो उच्च शिक्षा प्राप्त केलनि। बहुत दिन धरि रहिका उच्च विद्यालयमे संस्कृतक शिक्षक रहलाह आ प्रधानाध्यापकक पद धरि प्रोन्नति प्राप्त केलनि। धर्म ओ अध्यात्मक सेहो हुनका बहुत नीक जानकारी छलनि।कतेकोठाम धार्मिक सभा सभमे प्रवचन सेहो करैत छलाह। दड़िभंगामे संत-समागममे प्रवचन करैत हमहुँ हुनका सुनने रही।ओहि समयमे हम ओतए सी० एम० कालेजमे पढ़ैत रही।

कतेको दिन हमसभ हुनका साइकलपर इंटा बन्हने, आ स्वयं ओकरा गुरकबैत पैरे-पैरे चलैत देखिअनि।कहिओ सीमेन्टक बोरा, कहिओ बाउल, कहिओ इंटा ओही साइकिल पर ढ़ो-ढ़ोक ओ पक्का मकान

बना लेलथि। एहन धुनकेँ पक्का, कर्मकीट ओ संकल्पक धनी व्यक्ति डिविआ लए कए तकनहुँ नहि भेटि सकत।

व्यक्तिगत जीवनमे कैबेर हुनका प्रतिकूल परिस्थितिक सामना करए पड़ल, तथापि ओ धैर्यपूर्वक जीवनयात्रामे लागल रहलाह।आस-पासक गामक बहुत रास लोक हुनकार अध्यात्मिक चेला छल।हुनकासँ मंत्र लेने छल।हुनका प्रति श्रद्धाक भाव रखैत छल आ हुनक मृत्युसँ बहुत दुखी भेल छल।

आब ओ एहि दुनियाँमे नहि छथि। खिछु साल पूर्व एकाएक हुनकर किडनी खराप भए गेल।मास दिनक भीतरे ओमार्च २०१४मे चलि गेलाह। ओहि समय हुनकर बएस अस्सीसँ उपरे रहल होएत। मृत्युसँ किछुमास पूर्वे हमगाम गेल रही तँ हुनकासँ भेंट भेल रहए। ओ पूर्णतः स्वस्थ लगैत छलाह।अपितु बरी काल धरि अध्यात्मिक विषयपर अपन मंतव्य दैत रहलाह। हमर माएसँ सेहो गप्प करैत रहलाह। तकर किछुए दिनक बाद हुनक मृत्युक समाचार भेटल।आश्चर्यमे पड़िगेलहुँ।

हुनक देहावसानसँ गामेक नहि अपितु परोपट्टाकेँ एकटा अपूर्णीय क्षति भेल। कर्मठताएवम् सफल संघर्षक एहन जीवंत उदाहरण भेटब बहुत मोसकिल काज अछि। हुनका हमर शत-शत प्रणाम! q

मिथिलाक संस्कृति

बहुत पहिने मिथिलाक नाम विदेह छल आओर ओहिमे वर्तमान मिथिला, वैशाली, कतेको राज्यसभ सामिल छल। चारिम वा पाँचम शताव्दीमे ई मिथिला किंवा तीरभुक्तिक नाम ग्रहण कएलक। मुगल साम्राज्यक काल मे एकर एकटा भाग (उत्तर दिसिसँ)नेपालक राजाक अधीन चल गेल। शेष भाग तिरहुत कहल जाइत छल। मिथिलाप्रान्तक व्याख्या जे ग्रिअरसन महोदय केलनि अछि, तदनुसार एकर क्षेत्रफल लगभग तीस हजार वर्गमील अछि आओर एहिमे विहार राज्यक
मुजफ्फरपुर, सितामढ़ी, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सहर्षा, उत्तर मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, आओर पुर्णिाक किछु भाग सामिल अछि संगे नेपालक रैताहट, सरलाही, सप्तरी, मोहातारी, आओर मोरंग जिला ओहिमे अवैत अछि।

मिथिलाक वर्तमानक दरिद्रता आओर भूतकालक ऐश्वर्यमे कोनो साम्य नहि अछि। सन् १९३४ ई०क भूकंपक बाद एहिठामक लोकक स्थिति आओर खराव भए गेल छलैक आओर भूकंपक कारणे ओहिठामक आबोहवापर सेहो प्रतिकूल प्रभाव पड़ल। आलसी आओर खोचाँह स्वभावक कारण एहिठामक लोक संप्रति कष्टमे छथि, मुदा प्राचीनमे ई स्थिति नहि छल। लोक प्रशन्नचित्त समय बितबैत छल आओर धने-जने पूरल रहए। प्रयाप्त सुख-सुविधाक उपलव्धक संग लोकक ध्यान कला ओ संस्कृतिक विकासपर जाएब स्वबाविक अछि आ तेँ ई कोनो आश्चर्य नहि थिक जे लोक पर्याप्त साहित्यिक ओ सर्जनात्मक प्रतिभाक परिचय देलक।

प्राचीन कालसँ मिथिलाक प्रशस्तिक आधार विद्वता रहल अछि। षड़दर्शनमेसँ चारिटा
दर्शन, न्याय, वैशेषिक, मिमांसा आओर सांख्यक रचनाकार लोकनि क्रमशःगौतम, करणाद, जैमिनी ओ कपिल

मिथिलेमे भेलाह। मुगल आक्रमण कालमे आचार-विचार शुद्धिपर ध्यान देव आवश्यक भए गेल तँ मध्यकालमे नव्य न्याय, पूर्व मिमांसा आओर स्मृति निवंध रचनापर बेसी तुल देल गेल। मिथिलाक प्रतिष्ठा बाहरक विद्वान लोकनिमे बनल रहए तँ ओतए कतेको प्रकारक पदवी विद्वान लोकनिकेँ देबाक प्रथा चलल, मुदा ओहि हेतु बहुत क्लीष्ट परीक्षा होइत छल-जेना कि श्लाका परीक्षा, उपाध्याय, महामहोपाध्याय आदि। मिथिलाक प्राचीनमे विदेह राजाक प्रतिष्ठाक आधार हुनक ज्ञान एवम् विद्वते छल। तहिना महेश ठाकुर ओ खांडववंशीय अन्य राजा लोकनि एवम् अन्य विद्या अनुरागी भेलाह आ मिथिलाक कीर्ति बढ़एबाक हेतु सभ तरहेँ प्रयास कएलनि ओ तदनुकूले प्रतिष्ठो प्राप्त कएलनि।

मिथिलाक सोनितमे भगौती जानकीक अंश सर्वत्र विराजमान अछि। घर-घरमे पसरल गोसाउनिक शिर भगवतीक आराधना स्थल अछि। प्रत्येक शुभ अवसरपर भगवतीक वंदना गएबाक प्रथा मिथिलाक संस्कार भए गेल अछि। विद्यापतिक वंदना **"जय जय भैरवि असुर भयाउनि, पशुपति भाविनी माया"**,मिथिलाक राष्ट्रगानक तुल्य अछि।

यत्र-तत्र पसरल भगवतीक सिद्धपीठ जेना उच्चैठ, उग्रतारा आदि शक्तिक आराधनाक सार्थकताकेँ प्रमाणित करैत छथि। उच्चैठक कालीक कृपासँ कालीदास मूर्खसँ एकटा महान विद्वान भए गेलाह। कहबी अछि जे ओ तेहने मूर्ख छलाह जे भदवारिक झर-झर पानि बहैत कालमे भगवतीक मुँहमे करिखा लेपए लगलाह जाहिसँ प्रसन्न भए भगवती हुनका वरदान देलथिन। मिथिलाक त्रिपुंडकसंग लालठोप ओ चाननक उर्ध्वपुणड करबाक परंपराक अर्थ ओकर शाक्त, वैष्णव ओ शैव संप्रदायमे समन्वय स्थापित करब छल। प्रति वर्ष हजारक हजार कमरथुआ वैद्यनाथधाम जाए महादेवकेँ गंगाजल ढ़ारि अवैत छथि। संगे गाम-गाम बनल महादेवक मन्दिर शिवक प्रति आस्थाकेँ प्रमाणित करैत अछि। "कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ" गबैत-गबैत कतेको भक्त लोकनिकेँ अश्रुपात भए जाइत छनि। एतबा होइतो शालीग्रामक रूपमे भगवान विष्णुक पूजा सगरे मिथिलामे पसरल अछि। तुलसी चढ़ाय चरणामृत लए भोजन ग्रहण करैत छथि। जँ गंभीरतासँ कहल जाएतँ मिथिलाक माटि-पानिमे अध्यात्म कुटि-कुटि कए भरल अछि। जन्मसँ मरण धरि हिन्दू धर्मशास्त्रमे जतबा संस्कार कएल जाइत अछि से मैथिल लोकनि बड़ धार्मिक भावनासँ निष्पादित करैत छथि। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ सेहो मिथिलाक मुड़न, उपनायन ओ विआहक परंपरा समाजक विभिन्न घटकमे समन्वय ओ धार्मिक भावनाक अभ्युदयक हेतु अतिशय महत्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि।

भारत भरिमे मिथिलाक विआहक परंपरा अपनामे विचित्रताक हेतु प्रसिद्ध अछि। बर्खक बर्खधरि पसरल अनेकानेक प्रकारक पर्व ओ त्योहार मिथिलामे विआहक अनिवार्य अंग थिक। विआह होइते चतुर्थी, चरुचन, मधुश्रावणी, कोजागरा, विदाइ, पुछारी, नागपंचमी ओ द्विरागमनक अवसरपर नाना प्रकारक भार पठएवाक परंपराकेँ लोक आबो ओहिना लदने चलि आवि रहल अछि जेना अट्ठारहम शताव्दीमे रहल होएत। एहि दृष्टिकोणसँ मिथिलाक लोक अखनो पछरले छथि। दहेजक प्रथा तेहन संक्रामक ओ घातक भए गेल अछि जे जिनका दू-तीन टा बेटी होन्हि तिनका दरिद्र बनबासँ भगवाने रक्षा कए सकैत छथि। आवश्यकता एहि बातक अछि जे मिथिलामे कन्यालोकनिक प्रति जे अन्याय भए रहल अछि से आबो बंद होइक। **बोराक आम आ घरक कनिआमे भेद करब कठिन थिक।**

एहि सम्बन्धमे सौराठसभा ओ ओकर परंपरागत इतिहासक वर्णन करब उचित होएत।ई भारतवर्षमे अपना-आपमे एकमात्र संस्था थिक जे बिना कोनो राजकीय हस्तक्षेपकेँ प्रतिवर्ष दस हजार मैथिल वृहमण लोकनिक विआह-सम्बन्ध स्थापित करबाक आधार बनैत अछि। एहिठाम एक निश्चित अवधिमे करीब लाख वृहमण जमा होइत छथि। सौराठसभाक स्थापना करीब सए साल पूर्व भेल छल। ओतए पंजिकार लोकनो होइत छथि जे कन्यापक्षकेँ सिद्धान्त दैत छथिन। ओकरा**अस्वजन-पत्र** सेहो कहल जाइत अछि। नियमानुसार सात पीढ़ी पाछा देखला संता पंजकार ई प्रमाणपत्र दैत छथि जे सम्बन्धित वर ओ कन्या पक्षमे सम्बन्ध भए सकैत अछि। यद्यपि ई व्यवस्था वंश परंपराक प्रतिष्ठा ओ शुद्धता वनयबाक हेतु कएल गेल, मुदा एकर जड़िमे पंजी व्यवस्था छल जे १३१० ई०मे महाराजा हरिसिंघ द्वारा चलाओल गेल। एहि व्यवस्थाक अनुसार मिथिलाक व्रहमण लोकनिकेँ चारिभागमे बाँटल गेलाह। (१) श्रोत्रिय, (२) योग, (३) पंजीवद्ध, (४) जयबार। प्रथम तीन कोटिक व्राहमण भलमानस कहल जाइत छलाह आ अन्तिम याने जयबार लोकनि कुलशीलक हिसाबे छोट व्राहमण कहल गेलाह। सौराठ साभामे बैसबाक स्थान ओहि हिसाबे निर्णीत भेल छल। ऐहि प्रथामे सबसँ बड़का दोष ई छल जे भलमानुष लोकनिक सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ि गेल आ ओ लोकनि क्यो सए क्यो पचास एनाकए विआह सम्बन्ध स्थापित करए लगलाह। कतेकठामतँ इहो सुनबामे अबैत छलजे भलमानुष लोकनिकेँ विआह केलाकबाद दोहराकए सासुर जेबाक समय ओ स्मृति नहि रहैत छलनि।

विभिन्न प्रकारक पाँजि रखनिहार लोकक मूलक संग गाम विशेष वा व्यक्तिविशेषक नाम जोड़ल रहैत अछि। जेना-महादेव ठाकुर पाँजि, शीलानाथ झा पाँजि आदि। यद्यपि आब एहि परंपराक कोनो सामाजिक महत्व नहि रहि गेल अछि तथापि पंजिकारलोकनि एकर भष्मावशेषकेँ उठओने फिरि रहल छथि कारण ओहिसँ हुनका लोकनिक जीविका चलैत छनि। आबक मिथिलाक पाँजि थिक-इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर ओ खूब धनिक लोक।

कोनो ठामक संस्कृतिपर ओके लिपि ओ भाखाक बड़ प्रभाव होइत अछि। मिथिलाक भाखा मैथिलीकेँ अपन लिपि तिरहुता किंबा मिथिलाक्षर कहल जाइत अछि। दुर्भाग्यक बात थिक जे मैथिलीमे देवनागरी लिपिक प्रयोग संग ओकर मौलिक लिपिक प्रयोगमे प्रचूर ह्रास भेल। एतबा धरि जे मिथिलाक्षरमे लिखा-पढ़ी करएबला लोक आंगुरपर गनलेसँ भेटि सकैत छथि।

मैथिली भाखामे साहित्यक प्रत्येकविधापर काज भेल अछि। प्राचीनकालसँ आइ धरि कतेको विद्वान लोकनि अपन कलमक जोड़सँ एहि भाखाकेँ कृतार्थ कएलनि अछि। चर्यापदमे दार्शनिक तथा धार्मिक मान्यताकेँ लौकिक रूपमे प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। एकर पद सभमे चौबीस प्रकारक राग-रागिनी सभक प्रयोग भेल अछि। ज्योतिरिस्वरक वर्णरत्नाकर, धर्तसमागम ओ पंचशायकक मैथिली भाखाकेँ अपूर्व योगदान अछि। वर्णरत्नाकरक ई विशेषता थिक जे हमरा लोकनिक आद्य ग्रंथ होइतो ई गद्यमे लिखल अछि जखन कि आन-आन भाखाक आदिग्रंथ पद्यमे अछि। मध्यकालमे मैथिली साहित्यक युग प्रवर्तक भेलाह विद्यापति जे संस्कृत, अवहट्ट, ओ मैथिली भाखामे कतेको सोरहि रचना कए अमर भए गेलाह। गाम-गाम पसरल विद्यापतिक सोहर, समदाउन, वटगबनी ओ नाना प्रकारक भक्ति गीत अखनो हुनकर साहित्यिक स्वरुपकेँ ओहिना जीवित रखने अछि जे चारि-पाँच सए बर्ख पूर्ब रहल होएत। विद्यापतिक बाद गोविन्ददास

झा, उमापति,मनबोध, लोचन, हर्षनात झा धरि अपूर्व शृंखला चलल जाहिमे विद्यापति साहित्यक शृजनात्मक छाप सतति परिलक्षित भेल।

चंदा झाकेँ आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत अछि। ओ बहुमुखी व्यक्तित्वक लोक छलाह। हिनक सात गोट प्रकाशित ग्रंथ भेटैत अछि तथा पाँच गोट एहनो ग्रंथसभक उल्लेख भेटैत अछि जे अप्रकाशित अछि। हिनक प्रकाशित ग्रंथक नाम थिक- (१) मिथिलाभाषा रामायण, (२) गीति सुधा, (३) महेषवाणी, (४) अहिल्या चरित नाटक (५) चंद्र पद्यावली, (६) लक्ष्मीश्वर विलास, (७) विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद। हिनक अप्रकाशित रचना अछि- (१) गीत सप्तशती, (२) मूलग्राम विचार, (३) छन्दोग्रन्थ, (४) वाताव्हान, (५) रसकौमदी। विद्यापतिकेँ जँ मैथिली साहित्यक सूर्य कहल जाए तँ निश्चय चंदा झा ओहि साहित्यमे चन्द्रमाक स्थान प्राप्त करबाक योग्य छथि।

चन्दा झाक बाद जीवन झा, म.म.परमेश्वर झा वख्सी, रघुनंन्दन दास, म.म.मुरलीधर झा, जनार्दन झा जनसीदन, ओ लालदासक नाम प्रमुख साहित्यकारक रूपमे अविस्मरणीय अछि। लाल दास क रचित रमेश्वर चरित रामायणमे सीताक महिमा बेसी स्थान पओने अछि अर्थात ई शक्तिक प्रधानता देलनि अछि जे मिथिलाक परंपरा ओ संस्कृतिकक अनुकूल अछि। महाकाव्यक क्षेत्रमे सीताराम झाक अम्व चरित, बद्रीनाथ झाक एकावली परिणय, मधुपजीक राधा विरह,तंत्रनाथ झाक झाक कीचक वदओ कृष्णचरित, सुमनजीक प्रतिप्रदा स्वतः स्मरण भए जाइत अछि।

एकरे संगे अंग्रेजी, संसकृत ओ मैथिली साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान होइतो मैथिली साहित्यकेँ गौरवान्वित करबामे डा. रमानाथ झा ओ डा. जयकांत मिश्रक नाम स्वर्णाक्षरसँ लिखए जोगर अछि। हास्यरसावतार प्रो० हरिमोहन झाक कृतिसँ मैथिली भाखाक कोष भरल-पूरल अछि। ओ अपन उपन्यास कन्यादान एवम् द्विरागमनक माध्यमसँ मिथिलाक कुप्रथापर अपूर्व चोट कएलनि। खट्टरककाक तंग, प्रणम्य देवता, रमगशाला, चर्चरी, आदिक रचनासँ ओ मैथिली साहित्यमे अमर भए गेलाह अछि। डा. शैलेन्द्र मोहन झा, कांशीनाथ झा किरण, श्री वैद्यनाथ मेश्र 'यात्री'क सेहो अपन-अपन योगदान अछि।यात्रीजी अपन साम्यवादी विचारक पुष्टि करैत बहुत रास ओजस्वि ओ क्रान्तिकारी विचारसँ पूर्ण रचना कएलनि। उदाहरणस्वरूप-

अगड़ही लगउ बरु वज्र खसौ, एहन जातिपर धसना धसौ,

भूकंप होउक फटौक धरती, माँ मिथिले रहि कए की करती?

डा. सुभद्र झाक'फारमेसन आफ मैथिली लिटरेचर'', 'हिस्टोरिकल ग्रामर आफ मैथिली ओ प्रवास,हुनक तीनटा पोथी मैथिली साहित्यके प्राण प्रतिष्ठा देबएमे अद्वितीय योगदानक रूपमे अविस्मरणीय अछि।

आधुनिक कालमे मिथिला मिहिरक संपादकगण एहि प्रकारे स्पष्ट अछि जे साँस्कृतिक दृष्टिए मिथिलाक माटि-पानि बड़ हरिअर अछि। मुदा दुर्भाग्यक बात ई थिक जे आलस्य किंवा प्रमादवश हमरालोकनि अपने साँस्कृतिक उपलब्धिकेँ बिसरि रहल छी। स्व० राजेश्वर झा, योगानन्द झा, स्व. चन्द्रनाथ मिश्र, राजकमल चौधरी, ललित, ओ रमानन्द रेणु, श्री सोमदेव आदि कतेको लेखक लोकनि ओ कवि लोकनि मैथिली

ejournal 'विदेह' २५५ म अंक ०१ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५५) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

साहित्यकेँ हिष्ट-पुष्ट करबामे सहायक सिद्ध भेलाह अछि। एही क्रममे पिलखवाड़वासी गंगेश गुंजनक चर्च सेहो उचित अछि जे अपन कथासंग्रह- “अन्हार इजोत” ओ कविता संग्रह” हम एकटा मिथ्या परिचय”क हेतु प्रसिद्ध छथि। एकर अलावा हिनक रेडिओ रुपक “जय सोमदेव” श्रोतालोकनिकेँ कतेक आनंदित कएलक अछि से वर्णन करब कठिन थिक।

एहि प्रकारे स्पष्ट अछि जे साँस्कृतिक दृष्टिए “मिथिलाक माटि-पानि बड़ हरिअर अछि। मुदा दुर्भाग्यक बात ई थिक जे आलस्य किंवा प्रमादवश हमरालोकनि अपने साँस्कृतिक उपलब्धिकेँ बिसरि रहल छी। “बारीक पटुआ तीत” जे कहल गेल अछि से सगरे मिथिलामे प्रयुक्त अछि। सीकींसँ नीक-नीक बासन बनाएब वा उपनायन, बिआह ओ आन-आन शुभ अवसरपर सुन्दर-सुन्दर कढ़ाइ करब मिथिलामे हजारक हजार वर्खसँ प्रचलित अछि। गाम-गाम एकसँ एक कलाकार एहि कलाके जीवित रखने रहलाह मुदा एकर महत्व लोक तखन बुझलक जखन कि हजारक हजार संख्यामे एहि वस्तुसभक मांग किछु वर्ख पूर्वसँ विदेशीसभ करए लगलाह।

जाहि मिथिलाक ध्वजा न्यायशास्त्रमे देशभरि मे फहराइत रहल, जतएक गायक लोकनि देशभरिक राज परिवारमे संमानक पात्र छलाह ओ कलाक दृष्टिसँजे सर्वत्र सम्माननीय छल ओहीठाम लोक भरि जाढ़मे घूरतर ओ गर्मीमे पीपड़क छहड़िमे गप्प मारि-मारि दरिद्राक सेवन करैत सब तरहेँ क्षीणशक्ति भए रहल छथि से चिन्ताक बात अवश्य अछि मुदा एकर अर्थ ई कदापि नहि जे हम अपन आत्मविश्वासकेँ परित्याग कए दी आ अन्धाधुन्ध आन-आन साँस्कृतिक ऐब सभकेँ अपना जीवनमे प्रश्रय दी। q

(१४ अगस्त १९८३क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित)

रबीन्द्र नारयण मिश्रक

दूटा लघुकथा

<u>फसाद</u>

भोरसँ साँझ धरि ओ टीशनपर प्रतीक्षा करैत रहल। जतेक बेर गाड़ी अबैक ओ सचेष्ट भए जाइत छल। आबए बला लोक सभ दिस टकटकी लगौने रहैत छल। मुदा सभ बेर ओकरा निराशेहोमए पड़ैक। साँझमे ओ थाकल-झमारल गाम लौटल तँ देखलक जे पलटनमाक घरवाली ओ पलटनाक माएमे मचल छलैक।लगैक जेना गंभीर विवाद भए गेलैक अछि। आँगन आएल। मुदा दूनूमे सँ क्यो सुनए लेल तैयार नहि छलैक। मामला बढ़ैत देखि ओ गरजल। मुदा बेकार। दूनू आपसमे एक-दोसरक गड़ा गाटि देबाक निश्चय कए चूकल छल। रमुआकेँ नहि रहि भेलैक। ओ उठौलक लाठी आ पलटनमा माएकेँ लगलैक सटाक, सटाक। पलटनमाक माए गरियबैत भागल।

मामला शान्त भेलैक। आइ तीन साँझसँ घरमे क्यो नहि खेने छलैक। पलटनमाक अबाइ छलैक आ तेँ ओ टीशन गेल छल। एमहर पलटनमा घरवाली मालिकक आँगनमे काज कए आएल छलैक। अबैत काल मालकिनी किछु देने छलखिन तकरे बटवारा करैत-करैत सासु-पुतोहुमे विवाद पसरि गेल छलैक।

साल भरिसँ पलटनमा बाहर छलैक। जहिआसँ गाम छोड़लकै तहिआसँ आइ धरि कोनो खोज-खबरि नहि आएल छलैक। गामक बहुत लोक कलान्तरमे भोज करैत छलैक आ ओहिठामसँ सभ मास क्यो ने क्यो अबिते रहैत छलैक। ओकरे सभसँ पलटनमाक समाचार गाममे पहुँचैत रहैक।

पूरबारि टोलक कए गोटा पछिला मास आएल छलैक आ ओकरा दिया पलटनमा समाद देने रहैक जे आगा मास पुर्णिमा दिन गाम आएत। मुदा नहि अएलैक। एहि बातक अंदेशा रहैक रमुआकेँ। टीशनसँ घुरैतकाल ओ बड़ अछता-पछता रहल छल। एही गुन-धुनमे गाम आएले छल रमुआ कि घरक गरम वातावरणमे आओर गरमा गेल। पलटनमा माएकेँ तामसपर नीक मारि पड़ि गेल छलैक आ ओ मारि खा कए पता नहि कतए निपत्ता भए गेलि।

रमुआक कतेको पुस्त ओही गाममे गुजर केने छल। मुदा पलटनमा गामक सीमान नांघि देलकै। पलटनमाक एहि काजसँ मालिक सभ बड़ अप्रशन्न भेल रहैक। मुदा ओ ककरो नहि सुनलक। माए जाए काल बड़ कनैत रहैक। मुदा की कए सकैत छलैक। पलटनमा कलकत्ता पहुँचते देरी काज शुरू कए देलक। आमदनी नीक होइक। मुदा रखबाक लूरि नहि रहैक। संगी-साथी सभ आगत-भागत कए ओकरासँ सभटा पैसा खर्च करा लैक।

एक दिन ओहि मीलमे आन्दोलन भेलैक। मजदूर सभ मालिकक अत्याचारक खिलाफ अबाज उठौलक। ओहि आवाजक पलटनमाक मोनपर बेस प्रतिकृया भेल रहैक। पलटनमा लोककेँ नारा लगबैत देखि चिकरि उठल-

“नहीं चलेगी, नहीं चलेगी, यह बैमानी नहीं चलेगी।”

पूरा मीलमे तालाबन्दी भए गेलैक। मजदूर सभ मील मालिकक घरक घेरा कए देलक। मीलक मालिक लाख प्रयास केलक मुदा पलटनमा टससँ मस नहि भेलैक। मीलक गेटपर एक सएसँ अधिक मजदूरक संग अनशनपर बैस गेलैक। आन्दोलन तीव्रतर होइत गेलैक। अन्ततोगत्वा पलटनमा गिरफ्तार भए गेल। ओकर संगी सभ सेहो जहल गेल। नारा लगैत रहलैक-

“नहीं चलेगी, नहीं चलेगी...।”

ई सभ घटना अनायास भए गेल छलैक। पलटनमा तेँ अपन रोजी-रोटीक कमाइमे लागल छल। मुदा ओकर सोनित कहि नहि किएक एकाएक खौल उठलैक।

पलटनमा जहल गेल मुदा जेना एहि घटनासँ ओकर संस्कारमे अप्रत्याशित परिवर्तन आबि गेल छलैक। गामक वातावरणमे रहैत रहैत ओ मौन सभ प्रकारक प्रतारणा ओ अन्याय सहैत रहल। मुदा एहि घटनासँ जेना

ओकर अन्तरात्माक ज्वालामुखी फुटि पड़ल छलैक। ज्वालामुखी जे संघर्षक आगिसँ अन्यायकेँ जरा देबए चाहैत छल।

जाहि दिन ओकरा जयबाक प्रोग्राम छलैक ओहि दिन ओ पकड़ल गेल। जहलमे एकान्तमे ओकरा कहि नहि की की फुराइत रहलैक। रमुआक टुटल खोपरी आ चारूकात गामक मालिक सभहक बड़का-बड़का दलान। पण्डितजीक बड़का दलान। दनानक अगवासमे बैसार होइक। साँझक साँझ गामक सभ प्रतिष्ठित व्यक्ति सभ अबैत छलाह आ अपन-अपन विचार व्यक्त करैत छलाह। लहना-तकादा सेहो ओतहि होइत छलैक।

बुधदिन छलैक गाममे हाट लागल छलैक। पण्डितजीक ओहिठामबैसार भेल। पूरा गामक लोक जमा भेल छल। रमुआ ओतए बुधन बाबूक किछु कर्जछलनि। ओही कर्जकेँ सधएबाक हेतु बैसार छलैक। पँच लोकनि ई फैसला केलनि जे रमुआ अपन घराड़ी बुधन बाबूक नामे कए देथि आ पलटनमा हुनका ओहिठाम चरबाही करए। कारण जे घराड़ीक मुल्यसँ मात्र मूर सधैत छलैक आ सूदक तरीमे ओ चरवाही करत। एहि निर्णयक संग ओहि दिन बैसार खतम भए गेल।

रमुआ आँगन पहुँचले हेताह कि पलटनमाक माए देहरियेपर भेटलनि आ समाचार पुछि गरजए लागलि-

''नहि जानि ई सभ की की करत? गे दाइ !गे दाइ !हमर घराड़ी एकरा सभ नहि देखल जाइत छैक।''

मुदा किछु ने चललैक। दोसर दिन रमुआ बेनीपट्टी जा कए अपन घराड़ी बुधन बाबूक नामे रजिष्ट्री कए देलखिन। रजिष्ट्री घरसँ निकलैत हुनका होनि जेना आँखिक डिम्हा क्यो बहार कए लेने हो। सगतरि अन्हारे अन्हार।

साँझ पड़ैत-पड़ैत रमुआ गाम पहुँचल। मुदा एतबेसँ बुधन बाबूक मोन नहि भरलनि। पलटनमाकेँ खबरि देबए लगलखिन जे तोरा हमरा ओतए काज करए पड़तौक। हँसि कए कर आ कि कानि कए कर।

पलटनमाक मोनकेँ ई सभ असहज लगलैक ओ दोसर दिन दुपहर रातिमे चुप्पे-चाप गामसँ पड़ाएल। पलटनमा जहलमे पड़ल-पड़ल ई सभ सोचैत रहल मोन कहैक-

''छोड़ पलटनमा ई रस्ता। कमो खो। की राखल छैक फसादमे। आखिर हमरा लोकनिक कै पुस्त तँ एहिना बीति गेल। सभ अपन चैनसँ जिनगी कटलक। फेर ई आफद किएक।''

दोसर मोन कहैक-

''नहि, नहि लड़ पलटनमा लड़। संघर्ष केनहिसँ परिवर्तन हेतैक। आखिर अपने लेल लोक नहि जीबैत अछि। भविष्यक हेतु भावी पीढ़ीक हेतु आधारशिला तँ वर्तमाने पीढ़ी तैयार करैत अछि किने।''

इएह सभ सोचैत रहए कि जेलर साहेब आबि गेलखिन आ ओकर चिंतन क्रम टुटि गेलैक...।

जेलमे सात दिन बिता चूकल छल पलटनमा। मीलक मालिक मीलमे तालाबंदी कए देलक आ संगे मीलमे काज केनिहार नवका कर्मचारी सभकेँ छँटनी सेहो कए देलक। ई सभ समाचार पलटनमाकेँ जेलेमे भेटैत रहैत छलैक।

ओहि दिन रातुक बारह बाजि रहल छलैक। जेलर पहरेदार फोंफ काटि रहल छल। पलटनमा आ ओकर दूटा संगी जेलक चाहरदीवारी फानि गेल। जेलमे खतराक घण्टी बाजए लागल। मुदा पलटनमा ओ ओकर संगी नदारद। कतहुँ ओकर थाह पता नहि चललैक। पलटनमा दौड़ैत गेल, दौड़ैत गेल आ बहुत दूर एकटा अज्ञात जगहमे जा कए अचेत खसि पड़ल। ओकर दूनू संगी ओकर पछोर देने ओतए पहुँचलैक।

दुपहर छलैक। बारह घन्टा लगातार दौड़ैत रहलाक बाद तीनू गोटे असोथकित भए गेल छल। पलटनमा अचेत छल आ ओकर दूनूटा संगी गमछीसँ ओकरा हवा करैत छलैक।

संघर्ष, संघर्ष, संघर्ष। पलटनमा अपढ़ छल। गरीब छल। मुदा हालतसँ लड़ए चाहैत छल। ओकर सभसँ बड़का अपराध इएह छलैक। गाममे ओकरा सन-सन कतेको मजदूर ओहि हालातसँ गुजरिकए नियतिसँ सामंजस्य कए चूकल छल। मुदा ओ नहि सहि सकल। तँ गाम छोड़ए पड़लैक। शहरमे पुनश्च ओकरा असह भए गेलैक। यातना, शोषण ओ प्रतारणाक खिलाफ नारा लगा देलकैक। मुदा आब कतए जाएत! गाम छुटलैक, तँ शहर आएल। शहरसँ पड़ा कए जंगल आएल। आब कतए जाए। की करए। खैर! अखन तँ ई सभ सोचबाक समय नहि छलैक। चेतनतासँ कष्टक अनुभूति होइत छैक। तकरो अखन ओकरामे अभाव भए गेल छलैक। ओअचेत पड़ल छल। ओकर दूनू संगी ओकरा गमछासँ हवा करैत रहलैक।

दिन लुक-झुक कए रहल छलैक। पलटनमा सुगबुगेलै। पलटनमाक संगी सभ खुश भेल। कनी-मनी कछमछ कएलाक बाद पलटनमा फुरफुरा कए उठि गेल जेना किछु भेबे नहि कएल रहैक।

पलटनमा ओहि राति जंगलेमे बितौलक। चारूकात जंगलक भयानक जानवर सभक आवाज अबैत रहल। भोरहोमए पड़ छलैक। पलटनमा गंभीर चिन्तनमे लीन छल। की गरीबक हार-काठ पाथरक बनल होइत छैक? नहि, तखन ओकरापर जनमिते समाज एहन कठोर किएक होइत छैक। एक-एक पल जीवनक हेतु संघर्षमे बीत जाइत छैक। की संसारक सौन्दर्यक आनन्द लेबाक ओकरा कोनो अधिकार नहि? जीबाक हेतु प्रयत्न करैत-करैत ओ मृत्यु दिस अग्रसर भए जाइत अछि। इएह छिऐक गरीबक जीवनवृत..?

इएह सभ सोच-विचारमे ओ छल कि कनेक दूरपर पुलिसक जीप अबैत ओकरा नजरि अएलैक। एक बेर पुन: पलटनमा अपन संगी सभक संगे भागल। मील मालिक पलटनमाक पकड़बाक हेतु पुलिसकेँ जेब गरम कए देने छलैक आ पुलिस ओकरा पाछू हाथ धो कए पड़ि गेल छल। पलटनमा भागिते जा रहल छल। मुदा जंगलकेँ चारूकातसँ घेर लेल गेल छलैक।

पलटनमा ओ ओकर संगी पकड़ल गेल। पकड़लाक बाद ओकर हाथ पाछू कए बान्हि देल गेलैक। थानामे पलटनमाकेँ एकटा घरमे एसगर बन्द कए देल गेलैक। प्रात भेने ओहि घरसँ पलटनमाक लाश निकललैक। कहि नहि राति भरि ओकरा की की यातना देल गेलैक। पलटनमा आब एकटा मुर्दा छल।

पोस्टमार्टम रिपोर्टक अनुसार ओकर मृत्यु जंगलमे कोनो जहरीला जानवरक कटलासँ भेलैक। प्रात:काल अखबारमे छपि गेलैक-

“भगोरा कैदीक लाश जंगलसँ आनल गेल।”

पलटनमाक पिता ओहि राति सूति नहि सकल छल। प्रात: काल ओकरा एकटा तार भेटलैक।

“पलटनमा जंगलमे जानवरक प्रकोपसँ मरि गेल। लाश लए जाउ।”

पलटनमाक पिता सुन्न पड़ि गेल। शून्यतामे ओकर आँखि देखैत रहि गेलैक। पलटनमाक माए एक बेर फेर चिचिआ उठलैक आ तुरन्त शान्त भए गेलैक। एक दिस पलटनमाक माए आ दोसर दिस पलटनमाक पिता निस्तब्ध, चुप, चेतना विहीन पड़ल रहल। गामक लोक कनीकाल तमासा देखलक आ अपन-अपन काजमे लागि गेल। क्यो-क्यो कहैत रहैक-

“पलटनमा अनेरे फसाद केलक। गाममे एतेक गोटे गुजर करैत अछि, मरि जाइत अछि। गरीबो बहुत अछि मुदा एना उजाहटि तँ ओकरे ने छलैक आ तकर फलो तँ वएह भोगत।”

पुनर्मिलन

ओकरामे प्रतिभाक कतहुँसँ अभाव नहि छलैक। पूरा गाम ओकर यशगान करबाक लेल तत्पर छलैक। नीक, सुन्दर, सुशील आ मेघावी छल अरूण। माए और बापक कोनो स्मृति ओकरा नहि छलैक। जीबनक प्रत्येक डेग ओ लड़ि कए आगा बढ़ल छल। अपमानक अलावा समाजसँ ओकरा किछु प्रतिदान नहि भेटल छलैक मुदा ओ ओकरे, प्रेरणाक आधार बना जीबनमे विजयश्री प्राप्त करबाक हेतु कृतसंकल्पित छल। ओकर जन्मसँ लए कए अखन धरि जतेक घटना घटल छलैक सभ स्वयंमे एकटा वृतान्त छल।

प्रतिभा जेना ओकरा प्रकृतिसँ पुरस्कारक रूपमे भेटल होइक। बच्चेसँ छात्रवृत्ति ओकरा भेटए लगलैक। शिक्षक लोकनि एक पृष्ठ पढ़ावथि तँ ओ दू पृष्ठ स्वयं पढ़ि लैत छल। ओकर प्रतिभासँ सभ क्यो दंग रहैत छलाह। यद्यपि ओकरा रस्ता देखौनिहार क्यो नहि छलैक, ओ स्वयं जेना सभ किछु जनैत हो, की करक चाही,ककरासँ की बाजक चाही आ की करी जाहिसँ आबएबला समय नीक हो से ओकरा खूब नीकसँ बूझल छलैक। हाई स्कूलक परीक्षा प्रथम श्रेणीसँ उतीर्ण केलक आ पूरा राज्यमे प्रथम स्थान ओकरा प्राप्त भेलैक।

कालेजक शिक्षा प्राप्त करबाक प्रबल आकंक्षा ओकरा छलैक मुदा आर्थिक परिस्थिति अति दुखद छलैक। गामपर घराड़ीटा बाँटल छलैक। माए, बाप,भाए, बहिन ककरो कोनो सहारा नहि छलैक।

थाकल, ठेहिआएल, ओ दरिभंगा महराजक राजधानीक महल सभमे घुमि रहल छल। पैरमे पनही नहि, देहपर एकटा नीक कपड़ा नहि, मुदा अपनापर तेज,स्वभावमे सौम्यता ओ व्यवहारक नम्रता अनेरे लोकक ध्यान ओकरापर आकृष्ट कए लैत छल।

संयोगसँ चौधरीजी रिक्सासँ उतरलाह। अरूण हुनका नमस्कार केलक। अरूणक प्रतिभाशाली मुखमण्डल देखि ओ चकित भए गेलाह। चौधरीजीक धिया-पुताकेँ पढ़एबाक काज ओकरा भेटि गेलैक। हुनकासँ ज्येष्ठ सन्तान उर्मिला नवम् वर्गमे पढ़ि रहल छलीह। देखयमे खूब सुन्दरि, स्वभावसँ विनम्र ओ प्रतिभामे अद्वितीय। उर्मिलाकेँ देखितहि अरूणकेँ ठकविदरो लागि गेलैक। जेना पूर्व जन्मक संगी रहल हो। उर्मिलाक पढ़ाइमे अद्भुत प्रगति भेलैक। अरूण सेहो प्रशन्नचित्त अपन गाड़ी आगा पढ़बए लागल। मुदा एक दिन बड़ विचित्र घटना घटलैक। अरूणक सभटा स्वप्न देखिते-देखितेमे भंग भए गेलैक। उर्मिला स्कूल गेलैक आ ओहिठामसँ लौटितहिँ दर्द-दर्द कए चिचिआए लगलैक। कतेको ओझा-गुनी, डाक्टर-वैद्य अएलैक मुदा ओकरा कोनो सुधार नहि भेलैक। हालत बदतर होइत गेलैक आ ओ प्रात: होइत-होइत निष्प्राण भए गेल। सौंसे गर्द चढ़ि गेल। दुर्भाग्य ओकरा ओतहुँ संग नहि छोड़लकै।

उर्मिलाक आकस्मिक निधनसँ ओकर सपना सभ छिन्न-भिन्न भए गेलैक। अरूणकेँ आब एकहुँ दिन ओतए रहब असम्भव भए रहल छलैक। ओ चुप-चाप ओतएसँ खसकल। पैरे-पैरे दड़िभंगासँ समस्तीपुरक रस्तामे ओ बहुत दूर आगा आबि गेल छल। पाकरीक गाछतर छाहरिमे बैसल। कण्ठ जरि रहल छलैक। कतहु पानिक दर्शन नहि छलैक। थाकियो नीक जेना गेले छल। बैसल कि आँखि लागि गेलैक। सुतले-सुतल ओ स्वर्ग लोकक परिभ्रमण कए रहल छल। उर्मिला अत्यन्त प्रशन्न मुद्रामे ओकरा नमस्कार कए रहल छलैक।

“आ अरूण तों। बड्ड नीक छेँ तूँ। तोरे ताकि रहल छियौक। जहिआसँ एतए एलहुँ एकहु दिन चैन नहि अछि। दिन-राति बस तोरे ताकि रहल छी। आ जल्दी आ। देख हम कतेक परेशान छी। देख हमर कण्ठ जरि रहल अछि। हमर हृदयक पियास कण्ठ तक पहुँच रहल अछि। एक गिलास पानि दे। अरूण पानि दे। कनी सुन।”

कहि नहि ओ की की कहैत रहि गेलैक। अरूण किछु नहि बजलैक आ क्रमशः ओनेपत्ता भए गेल। अरूणक निन्न सेहो उचटि गेलैक। मुदा ताधरि किछु नहि रहि गेल छलैक। अरूणक अन्तर्मनमे दिन-राति ई सपना घुमैत रहैत छल। उर्मिलाक स्नेहिल व्यवहारक अमिट छाप ओकर हृदयसँ मेटने नहि मेटा रहल छल। सएह सभ गुन-धुनमे ओ आगा बढ़ैत रहल।

समस्तीपुर टीशन बहुत करीब आबि गेल छलैक। रेलगाड़ीक चलबाक आबाज कान तक पहुँचि रहल छलैक। मिथिला एक्सप्रेस लागल छलैक। दौड़ल दौड़ल ओ टीकस कीनलक आ गाड़ीमे कहुनाक ठूसा गेल। गाड़ी झिक-झिक करैत छलैक। एक कदम आगा बढ़ैक, दू कदम पाछा बढ़ैक आ ठामहि ठाढ़ भए जाइक। आगू घुसकैत-घुसकैत गाड़ी रूकि गेलैक। ड्राइभर साहेब चाह पीबैत छलैक कि गार्ड साहेब हरी झंडी

देखौलकै आ गाड़ी स्पीड धए लेलकैक। छक-छक-छक...। अरूणकेँ बैसबाक जगह भेटि गेल रहैक। बगलमे एकटा महिला सहयात्री ओकर, दूटा बच्चा, एकटा अधबयसू पुरूष आ कहि ने के के सभ..? कलकत्ता जाएबला गाड़ीक समय विशेषता ओहि गाड़ीमे छलैक। आधासँ आधिक यात्री नौकरीक खोजमे महानगरीक प्रयाण कए रहल छलाह। बरौनी जक्सनसँ गाड़ी आगा बढ़ि गेल छलैक। ओकरा फेर आँखि लागि गेल छलैक। फेर आबि गेलैक उर्मिला। एहि बेर आओर व्यथित आओर अधिक करूण स्वरमे निवेदन करैत एक तरफा अपन मोनक बात ओ कहैत गेलैक।

"अरूण। अरूण। हम नहि रहि सकब। हम नहि रहि सकब एसगर अरूण। देख हमर की हाल भेल अछि। देहक आभा झूस पड़ि रहल अछि। अरूण चल, हमरे गाम चल, मुदा...। मुदा...। मुदा...।"

गाड़ी सरपट आगा बढ़ैत गेल। आसनसोल स्टेशन करीब आबि गेल छल। गाड़ी टीशनपर रूकल आ बहुत रास यात्रीक चढ़ब ओ उतरब सुनि ओकर निन्न उचटि गेलैक। सपना एक बेर फेर सपना भए गेलैक।

दोसर दिन साँझमे ओ कलकत्ता शहर पहुँचि गेल। मुदा रस्ताक सपना ओकर माथासँ हटि नहि रहल छलैक। कलकत्ता शहरक नाम बड़ सुनने छल। मुदा कतए जाए? ककरा ताकए? कुनु ठौर ठेकान नहि रहैक। आगा बढ़ल जाए। चारूकात बंगला भाखाक सोर। चलैत-चलैत थाकि गेल। ताबतमे उर्मिलाक आबाज ओकर कानमे पहुँचलैक। अरूण अकचका गेल-

"ई तँ उर्मिला लागि रहल अछि!"

आश्चर्यचकित ओ ऊपर ताकए लागल। किछु देखा नहि रहल छलैक। ताबतमे फेर वएह आबाज-

"डरा नहि। हमहीं छी- उर्मिला, तोहर चिंर परिचित संगीनी। देख हम कतेक परेशान छी। तोरा पाछू-पाछू बिहारि जकाँ गाड़ीक संगे आबि रहल छी। मुदा घबरो नहि। आखिर हम तोहर विद्यार्थी छियौक ने। ले दस हजार टाका। एहिसँ काज चल जेतौक ने? बाज! बजैत किएक नहि छँ?"

अरूण अपन आगामे नोटक पुलिंदा सभ देखि कए गुम रहि गेल। फेर वएह आबाज-

"उठा। जल्दी उठा। लुच्चा, बदमास आबि रहल छौक। अच्छा तँ हम जा रहल छी।"

अरूण झट दए टाकाकेँ फाँड़मे राखि लेलक। राखिते देरी मनमे उठलै- एतेक रास टाका कतएसँ अनलक उर्मिला? नाना प्रकारक प्रश्न अरूणक मनमे उभरि रहल छलैक। संगे डरो भए रहल छलैक। मुदा पासमे टाका आबि गेलासँ हिम्मत सेहो बढ़ि गेल छलैक। एतेक आसानीसँ ओकर आर्थिक समस्याक समाधान भए जेतैक से ओ सपनोमे नहि सोचने छल। टांग तेज ओ मोन सुस्त भए रहल छलैक। आगामे एकटा होटल नजरि अएलैक। होटलक कोठरी नम्बर पाँचमे ओ डेरा ललेक। बेस थाकि गेल छल। विश्राम करबाक तीव्र आवश्यकता छलैक। कपड़ा-लत्ता खोललक। हाथ-पैर धोलक। घंटी बजबैत नौकर दौड़लैक। मीनू हाथमे दए देलकै आ किछु-किछु पूछए लगलैक। मुदा बंगला बजैक। अरूण किछु नहि बुझलकै।

नोकरबा तमसा कए चल गेल। अरूण स्नान कएलक आ कपड़ा-लत्ता पहीरि कहि नहि कतेक गाढ़ निन्नमे सुति रहल।

उर्मिला फेर हाजिर। अरूणकेँ भेलैक जेना क्यो ओकरा उठौने चल जाइत होइक। ओ चुप-चाप सन देखि रहल हो। बहुत दूर एकटा झीलक कातमे ओकरा राखि देलकै। बहुत काल धरि ओ सभ कहि नहि की की गप्प सप करैत रहल। ओ कहैत रहलैक-

"अरूण, तूँ बड़ नीक लोक छेँ। तोहर स्मृति एक क्षणक लेल हमर मोनसँ नहि जाइत अछि। सून, एकटा काज करऽ। हमरे संगे चल। तोरा सभ किछु भेटतौक।"

पता नहि आओर की की ओ कहैत रहलैक...।

भोर होमए पड़ छलैक। अरूणक आँखि खुजलैक तँ ओ आश्चर्यचकित भए गेल। ओकर कोठरीमे उर्मिलाक वएह वस्त्र राखल छलैक जे ओ मरबासँ किछु पूर्व पहिरने छल। वोहि वस्त्रकेँ ओ हटौलक तँ आओर आश्चर्यचकित भए गेल। बहुत रास हीरा-जबाहरात ओतए राखल छलैक। अरूण परेशान छल जे ई सभ की भए रहल छल। देखिते-देखिते अरूण कड़ोर पति भए गेल छल। सभ सामानकेँ ओ सावधानीसँ रखलक आ चुप-चाप होटलसँ प्रस्थान कए गेल।

मास-दू-मासक अन्दरमे ओ एकटा नीक होटलक मालिक भए गेल। दस-बीस नोकर-चाकर ओकर आगा-पाछा करैत छलैक। प्रतिदिन हजारो टाका कमाइ ओ करैत छल।

छह मासक भीतरेमे ओ गाममे १० बीघा जमीन कीनलक आ इलाकाक संमपन्न व्यक्तिक रूपमे प्रतिष्ठित भए गेल। अरूणक समय देखिते-देखिते साफ बदलि गेलैक मुदा ओकरा खूब नीक जकाँ एकर रहस्य बूझल छलैक। ओ जखन कखनो एकान्त होइत कि उर्मिलाक छाया ओकर सामनेमे उपस्थित भए जएतैक। अस्त-व्यस्त,भाव विह्वल, उर्मिलाक आकर्षक मुद्रामे आह्वान देखि अरूण स्तब्ध रहि जाइत छल...।

ओहि दिन अरूणसँ नहि रहल गेलैक आ पूछि बैसलैक-

"उर्मिला, एतेक परेशान किएक छेँ? हम तोरा संगे कोना भए सकैत छी? हम जीवित छी। तों शरीर मुक्त छेँ। हमरा तँ शरीर चाही।"

उर्मिला ई गप्प बड़ ध्यानसँ सुनलकै। ओ बेर-बेर बजैत रहलैक-

"हमरा तँ शरीर चाही। हमरा तँ शरीर चाही।"

आ ठहाका मारि कए हँसय लगलैक।

अरूण डरा गेल। उर्मिला ओतएसँ गाएब भए गेलैक।

अरूणक बिआह एकटा संपन्न परिवारक सुन्दरि कन्यासँ भए गेलनि। कनियाँक द्विरागमन बेस धूम-धामसँ बिआहक ९ दिनक भीतरे संपन्न भेलैक। पूरा भरल-पूरल परिवारमे आबि ओ कनियाँ बेस प्रशन्न छल। रातिमे अरूण जखन ओकरासँ भेँट करए गेलाह तँ ओकर आबाजमे आश्चर्यजनक परिवर्तन देखि दंग रहि गेलाह। ओ कनियाँ हँसल आ हँसिते रहल-

“नहि चिन्हलौं हमरा..! हम छी उर्मिला। अहाँक पुरान संगीनी। अहाँ तँ हमरा बिसरि गेलहुँ मुदा हम अहाँकेँ नहि बिसरि सकलहुँ। हमरा शरीर नहि अछि आ अहाँकेँ तँ शरीर चाही। मुदा अहाँई गप्प नहि बुझलहुँ जे शरीर सीमित अछि। मोनक कोनो सीमान नहि अछि। छोड़ू ई क्षुद्र शरीरकेँ। आउ। अएबे करू। मौन भए जाउ।”

गाममे सौंसे हल्ला भए गेलैक। अरूणक शरीर चेतना शून्य पड़ल छल। नव कनियाँ ओकरा देखि-देखि कानि रहल छलीह। कतेको डागडर, वैद्य, ओझा, गुनी आँगनमे पथरिया देने छलाह। मुदा अरूण नहि उठल। ओ मौन भए गेल छल। शरीरक सीमानसँ ऊपर उठि गेल छल। उर्मिला अरूणक मोन एकाकार भए गेल।

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

आगाँ...

१६.

प्रगतिशील मंचक कार्यकर्ता सभ ओना छल देशभक्त, समाजक हितकारी विचार रखैत छल, सौंसे पसरल अन्याय, शोषण, भेद-विभेदकेँ समाप्त कए समता मूलक व्यवस्था स्थापित करए चाहैत छल, मुदा ओकरा सभकेँ साधन सीमित छलैक। सामान्य आदमी धरि पहुँचबाक अवसर कम छलैक कारण फिरंगीओकरा सभक पाछा हाथ धो कए पड़ल छल। झूठ-फूस मोकदमामे नाम धए देब, तरह-तरहसँ प्रतारित करब आम बात छल।

जनाधार पार्टीक लोक सेहो प्रगतिशील मंचक विरोधी छल। तकर मूल कारण आपसी प्रतिद्वंदिता तँ छलहे, सैद्धान्तिक मतभेद सेहो छल। मुदा ओकरो सभकेँ कतहुँ-ने-कतहुँ एहि बातक एहसास रहैक जे प्रगतिशील मंचक युवक, युवती सभ राष्ट्रभक्त अछि, भनेओकर रस्ता फराक होइक।

ओनातँ बने-बने भटकैत, समाजमे आतंक, लूट-पाट करैत जीबैत छल डकैतक गिरोह। मुदा ओहो सभ कतहु-ने-कतहु सताओल गेल छल। अन्यायक मान्य एवम् कानूनी प्रतिकार नहि कए सकल छल, तँ हथियार उठा लेने छल। कतेको हत्या, लूटपाटक घटना सभमे सामिल छल। जाहिर छैक जे कानून ओकरा सभक

पाछा पड़ल छलैक। कखन के पकड़ाएत, के जीत के मरत तकर कोनो ठेकान नहि छल। एक हिसाबे जान हाथमे राखिएकए ओ सभ रहैत छल।

मोछा ठाकुरक मृत्युक बाद गरम सिंह ओहि डकैतगिरोहक सरगना भेल। नामे गरम सिंह रहैक। सोचल जा सकैत अछि जे ओ केहनरहल होएत।

इलाकामे डकैतीक घटना बढ़ए लागल। संगे प्रगतिशील मंचक गतिविधि सेहो गाम-गाम पसरए लागल। फिरंगीसभक सूचना तंत्रकेँ ई बात नहि बुझाइक जे आखिर एकरा सभकेँ आर्थिक मदति कतएसँ आबि रहल अछि। प्रगतिशील मंच फिरंगी ओ जनाधार पार्टीक नेता दुनूक हेतु संकट भए गेल छल। तकर मूल कारण छलैक जे ओ सभ भाषणमे कम आओर त्वरित कारबाइमे बेसी विश्वास रखैत छल। प्रगतिशील मंचक महिला कार्यकर्ता सभ फिरंगीसभक नाकमे दम कए देने छलि कारण ओ सभ आसानीसँ घरे-घर घुसिआ जाइत आओर जरूरी संवाद कतएसँ कतए पहुँचि जाइत। ओकरा आगू फिरंगीसभक सूचना तंत्र पछड़ि गेल छल।

मास्टर साहेब ओ पुष्पा जखन कखनो गप्प करथि तँ लोक गुम्म पड़ि जाए। कोनो प्रकारसँ मानसिक असंतुलनक संकेत नहि बुझाइक। देखनाहर, सुननाहर सभ गुम्म पड़ि जाइत छल। बताहोक कतेको प्रकार होइत छैक ताहि बातपर लोककेँ विचार करबाक उत्तम अवसर छलैक- ई दुनू गोटा। एक दिन मास्टर साहेब पुष्पाकेँ संकेत कए भाषण करए लगलाह। हुनका कहबाक तात्पर्य जे पुष्पाकेँ अपन हक छोड़क नहि चाही। आब जखन ओकरा अपन एक मात्र संतान आपस भेटि गेलैक अछि आओर ओ सशक्त अछि, तँ अपन सम्पत्तिकेँ दियाद-बादसँ मुक्त करा लेबाक चाही। मुदा पुष्पा किछु बजबे नहि करैक। ओकरा अन्तर्मनमे डर पैसल रहैक से हटबे नहि करैक। मास्टर साहेब ओकरा बेरि-बेरि सुनबथि :

अधिकार खो कर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी, दण्ड देना धर्म है।

परन्तु पुष्पा अपन बेटाकेँ किछु नहि कहैत। ओकरा डर होइक जे कहीं ओकरा एकमात्र संतान फेर ने बिला जाइक। यएह सभ सोचैत सोचैत ओ फेर अपन पुरान समयमे लौटि जाइत। किछु, किछु बड़बड़ाइत आओर गुम्म भए जाइत।

डकैत सभक सरगना गरम सिंह हमरे गामक छल। ई बात तँ तखन खूजल जखन कि एक दिन प्रगतिशील मंचक जंगलमे बैसार भए रहल छल। गरम सिंह अपन दल-बलक संगे ओहि ठामसँ गुजरि रहल छल। प्रगतिशीलमंचक बैसार देखि ओ सभ कात भए ओकर सभक बातसभ सुनलक। ओकरा रामकुमार चिन्हएमे आबि गेलैक। बच्चामे दुनू गोटे गामक स्कूलमे पढ़ैत छल। हमहूँ ओही स्कूलमे पढ़ैत रही। मास्टर साहेबकेँ ओ सभ धर दए चिन्हि गेल।

गरम सिंहक भेँट रामकुमारसँ भेलैक तँ दुनू गोटेक आनन्दक वर्णन नहि छल। दुनू दलक लोक सभ छगुन्तामे पड़ि गेल।

٩

१७.

राम कुमार आओर गरम सिंहक आपसी दोस्ती बढ़िते गेलैक। एहिसँ प्रगतिशील मंचक आओर लोक सभ गरम सिंह एवम् ओकर संगी सभक सम्पर्कमे आएल। एक हिसाबे गरम सिंहक गुट प्रगतिशील मंचक सदस्य बनि गेल छल मुदा खुलि कए एहि बातकेँ प्रकट करबासँ सभ परहेज करए, कारण जँ बात खुजितैक तँ प्रगतिशीलमंचक जनतामे सद्भावना घटतैक। ओ सभ अराजकतावादी तँ कहबिते अछि, डकैतक सहयोगी हेबाक कारण सामाजिक ओ कानूनी रूपसँ प्रताड़ितो कएल जाएत। मुदा भितरिआ सम्पर्क दुनू गुटमे बढ़िते गेल। मास्टर साहेब एवम् पुष्पा सन-सन कतेको लोकक शरणस्थली छल प्रगतिशील मंच। एहि कारणसँ ओकरा सभकेँ समाजमे सहयोग बढ़ि रहल छल। जनमानसमे ओकर सभक मानवतावादी छबि बनि रहल छल जे जनाधार पार्टीक लोक सभकेँ बेचैनीक कारण छलैक। मुदा ओकरा सभकेँ प्रगतिशीलमंचक तोड़ नहि भेटि रहल छल। रामकुमारक समस्या मात्र ओकर माएटा नहि छलैक। मास्टर साहेबक देखभाल सेहो ओकरे करए पड़ैक। आओर कतेको असहाय, असमर्थ लोक सभ ओकरा सभक संस्थासँ जुड़ि गेल रहैक। ओहिमे किछु गोटे तँ ओकरा सभक संगे रहैक, किछु गोटे यत्र-तत्र पसरल रहैक आओर मौका-कुमौका अबैत जाइत रहैक।

यद्यपि समाजमे सती प्रथा रुकि गेल रहैक, तथापि गाहे-बगाहे एहन प्रसंग सुनएमे अबैत। लोक तखनहुँ ओकरा महिमामण्डित करबासँ पाछा नहि रहैत। मुदा एहन घटना सभ आब अपबाद भए गेल रहैक। लेकिन समस्याक ई अन्त नहि छल अपितु अधिकांश मामलामे ई नव-नव समस्या सभक प्रारम्भ छल।

समाजमे विधबा सभ जीबैत लहाश छलि। कोनो अधिकार नहि। जँ बेटा भेल तखन तँ पारिवारिक सम्पत्तिमे ओकरा हिस्सा भेटि सकैत छलैक, अन्यथा ओहो नदारद। विधबा माए किंवा ओकर बेटीकेँ पारिवारिक सम्पत्तिमे मात्र जीवन निर्वाह योग्य खोरिसक अधिकारी बूझल जाइक। एक हिसाबे तँ अन्यायक पराकाष्ठा रहैक। बेटा, बेटीमे जन्मजात भेदभावकेँ धार्मिक, सामाजिक एवम् कानूनी मान्यता रहैक। तँ बेटीकेँ जनमिते कतेको ओहिठाम उदासी भए जाइत छल। प्रगतिशील मंच समाजमे महिलाक पराभवसँ चिन्तित छल। ओहि काजकेँ आगा बढ़ाबए हेतु समाजमे जनचेतना आनबाक हेतु ओ सभ प्रयत्नशीलो छल मुदा परिणाम अपेक्षाकृत निराशाजनक छलैक कारण समाजक अधिकांश लोक धरि ओकरा सभक पहुँचे नहि रहैक। लोक सभ सीमित स्वार्थ एवम् सहज प्रवृतिक कारण कोनो तरहक नव प्रयोग करएसँ बचैत छल। जे किओ सुरखुरेबो करथि तिनका ततेक झंझट होमए लगलनि जे आगा क्यो एहन प्रयास करएसँ बचैत छल। मास्टर साहेबक उदाहरण सामने छल। एकटा एकदम निर्दोष आदमीक सत्यानाश भए गेल छल। ओकर परिवार तहस-नहस भए गेल छल आओर कर्मक्षेत्र, जे गामक पाठशाला छल, तकरा नष्ट कए देल गेल छल। एहिसँ ककरो की लाभ भेल? मुदा से सभ सोचबाक ने ककरो फुरसति रहैक आओर ने प्रयोजन बुझाइक। एकाध गोटा जे सम्पन्न छल से अपन सम्पत्तिक रक्षामे लागल रहैत छल आओर शेष अपन जीवन बचबएमे निरंतर

ejournal 'विदेह' २५५ म अंक ०१ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५५) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

एहि प्रयासमे जे कहुना एकहु साँझ भोजन होइक आओर जान बाँचि जाइक। एहि सभ विषयपर प्रगतिशीलमंचक रामकुमार ओ डकैत सभक सरगना गरम सिंहकेँ बीचमे कतेको बेर गरमागरम बहस होइत रहैत छलैक। निर्दोष आदमीक लूटपाट, हत्या कए ओकर धन-सम्पत्ति हरण कए लेब कोनो तरहेँ वाजिब बात नहि लगैत छल। एही बिन्दुपर दुनू गोटेमे कै बेर मतान्तर टकरावक रूप धए लैत छल। बात बढ़ैत देखि दुनू दिसक लोक सभ थोड़ थाम्ह लगा दैक आओर सभ अपन-अपन काजमे चल जाइक।

मास्टर साहेबक घरमे डकैती एवम् ओकर पत्नीक डकैत सभ द्वारा हत्याक गप्प राजकुमारकेँ नहि बिसराइक। रहि-रहि कए ओकर मोनक कचोट गप्प-सप्प लक्षित होइत छल। मुदा ओकरा ई नहि बूझल छल जे एहि कुकृत्यक नायक गरमसिंह आओर ओकर गुटक लोक छल। एहि घटनासँ गरमसिंह सेहो दुखी छल।

असलमे ओ सभ मास्टर साहेबक ओहिठाम धोखासँ पहुँचि गेल रहए। ओकर सभक लक्ष्य ओही गामक जमिन्दार हरिहर राय छलै। ओ मास्टर साहेबक पड़ोसी छल। डकैत सभ हरिहर रायक घर दिस बढ़िए रहल छल कि मास्टरक घरसँ ओकर जवान होइत बेटा टार्चक लाइट बारलक। हल्ला सुनि ओ घरसँ बहराए लागल। डकैतक सरगना गरम सिंह ओकरा चेतओलकै जे भागि जो। मुदा ओ हल्ला करए लागल। ताबतेमे मास्टरक पत्नी घरसँ बाहर भेलखिन। बेटाकेँ ओझराइत देखि ओहो चिकरए-भोकरए लगलीह। डकैत सभ एहि बातसँ फिरसान भए गोली चला देलक। मास्टरक पत्नी ठामहि रहि गेलीह। प्रात भेने डकैतक सरगनाकेँ जखन सभ बातक अखिआस भेलैक तँ बहुत दुखी भेल मुदा आब की? मास्टरक सर्वस्व नष्ट भए गेल रहैक।

प्रगतिशील मंचक लोक सभ आपसी चर्चामे एहि घटनाक उल्लेख करिते छल। संगहि डकैतक गिरोहसँ फराके रहबाक चर्चा सेहो करैत छल। मुदा कहबी छैक जे मजबूरी जे ने करा दिऐ। ओकर सभ आर्थिक तंगी बढ़ल जाइत रहैक। सामाजमे जनाधार पार्टी लोकक वर्चस्व बढ़ल जाइक। सरकारो ओकरे संग दए दैत कारण प्रगतिशील मंचक उग्र रुखिसँ ओ सभ बेहतर विकल्प बुझाइत छलैक। अंततोगत्वा डकैत सभक प्रगतिशील मंचमे बिलए भए गेल। एहि हेतु रामकुमार ओ गरम सिंहक आपसी सम्पर्क बहुत कारगर साबित भेल। ई तय भेल जे डकैत गिरोहक सदस्य आब ओतबे डकैती करताह जाहिसँ प्रगतिशीलमंचक आर्थिक आवश्यकताक पूर्ति भए सकए। ओहो फिरंगी द्वारा संचालित सरकारी बैंक, रेलबेक वा सार्वजनिक सम्पत्ति सभकेँ मूलत: ठेकाना लगाओल जाएत। शेष समयमे समाजमे प्रगतिशील मंचक गतिविधिपर ध्यान देल जाएत।

प्रगतिशील मंचक संशोधित नाम प्रगतिशील विचारमंच भए गेल। एकर मूल उद्देश्य सामाजिक परिवर्तनक संग देशकेँ अंग्रेजक चंगुलसँ मुक्त कराएब छल। एहिमे सभसँ बाधक जनाधार पार्टीक टोपीधारी नेता सभ छलथि जे ओकरा परास्त करए हेतु अंग्रेजो सभसँ गुप-चुप बैसारकरएसँ परहेज नहि रखैत छलाह। मुखमे राम बगलमे छुड़ी। मुदा प्रगतिशील विचार मंच एकर किछु परवाह केनहिबिना अपन काजमे लागल रहैत छल।

q

१८.

द्विरागमनक बाद दोंगामे बेस चीज-बस्तु हमरा नैहरसँ आएल छल। हम एकबेर फेरसँ अपन सासु-ससुरक चास-बासपर बिराजमान भए गेल रही। लोक सभक आबाजाही तँ लगले रहैक। हमर नैहरसँ खबासनी मासमे दूबेर अवस्से आबि जाइत छल जाहिसँ हमरा ओहिठामक समाचार सभ भेटि जाइत छल। नैहरक चर्चा होइक आओर नोर नहि खसए से भइए नहि सकैत अछि।

माए कोना अछि? कक्का कोना छथि? कोनो अछि हमर संगी-साथी। स्कूलिआ विद्यार्थी सभक तँ विशेष जिज्ञासा रहिते छल कारण कनिके दिनका नेन्नाक सुखद स्मृतिमे ओकर पैघ स्थान छल। ओतए नित्य किछु काल हम स्वतंत्रतापूर्वक अपन संगी सभक संगे गप्प करी, खेल धूप करी। आब सुनै छी जे स्कूल टुटि गेल। मास्टर साहेब बताह भए गाम छोड़ि देलनि। कक्का नित्यप्रति भांग खाए ओहिना अलमस्त रहैत छथि।

हमर दोंगाक थोड़बे दिनक बादहमर सासुर डीहगामामे अगिलग्गी भेलैक। बहुत रास घर सभ जरि कए खाक भए गेल। बोराक बोरा अन्न पानि स्वाहा भए गेल। बखारी सभसँ तँ कहि नहि कतेक दिन धरि धुँआ उठैत रहल। सौंसे गामक लोक यत्र-तत्र शरण लेने छल।

ओहि समयमे सरकारी सहायता नाममात्रक होइत छलैक। विदेशी सभक हुकूमत छलैक जे स्थानीय चापलूस सभक मदतिसँ देशकेँ सालोंसँ गुलाम बनौने छल। अगिलग्गीक बाद जनाधार पार्टी ओ प्रगतिशील विचारमंचक कार्यकर्त्ता सभक गाममे कैम्प खसल छल। ओ सभ यथासाध्य लोक सभक कष्टकेँ कम करबाक प्रयास भेल।

एही क्रममे पहिल बेर हमरा रामकुमार ओ गरमसिंहसँ भेँट भेल। ओ सभ डीहगामा अबितहि हमर खोज केलक आओर भेँट होइतहि बड़ प्रशन्न भेल। ओकरा सभक स्वागतमे कोनो कसरि नहि रहल। हमर सासु ससुर ओहनो हालतमे ओकरा सभक पर्याप्त ध्यान रखलथि। एहि बातसँ ओहो सभ बहुत प्रशन्न रहथि जे हमर नैहरक लोक सभ हाल-चाल लेबए आएल अछि।

गप्प सभक दौरान आओर-आओर संगी सभक चर्चा स्वाभाविक छल। ओतेक रास विद्यार्थीमेसँ बूधन काकाक पुत्र रमणकचर्चा जोर-सोरसँ भेल कारण ओ बहुत पढ़ाइ केलक। ततबे नहि, ओ विदेशमे परीक्षा सभ पास कए कलक्टर भए गेल छल। आओर कोनो विद्यार्थीक एहन भविष्य नहि बनलैक।

गामक स्कूल बन्द भए गेलाक बाद बेसी विद्यार्थी तँ पढ़ाइ छोड़ि खेती-बारीमे लागि गेल छल। मुदा रमण पढ़ए हेतु गाम छोड़ि दड़िभंगा चल गेल। पढ़ाइमे औवल आबए लागल। तँ घरक लोक सभ ओकरा पटना पठाए देलखिन। ओहीठामसँ आगाक रस्ता खूजल। प्रतियोगिता परीक्षा देबए लन्दन चल गेल। तकर बाद कलक्टर बनि गेल।

ओहि समयमे कलक्टर बनब अपना देशक लोकक हेतु भारी बात छलैक। अंग्रेजी पढ़ाइ करब सभक बसक बात नहि छल। फेर कलक्टर बनए हेतु तँ विदेशमे अंग्रेज सभ द्वारा संचालित प्रशासकीय सेवा परीक्षा पासकरब बहुत दुरुह काज छल। अंग्रेजक अधीन काज करए हेतु कतेको गोटे तैयारो नहि होथि। एहने

समय साल रहैक जे राष्ट्रभक्त सभ प्रशासकीय सेवा पास केलाक बादो ओकरा त्याग कए राष्ट्रीय आन्दोलनसँ जुड़ि गेलाह। ई मामूली त्याग नहि छल।

रमणक एहि सफलतासँ सौंसे जिला-जबार गौरवान्वित भेल। देश भरिमे इनल-गिनल लोक सभमे ओकर नाम अबैत छल। एहि बातसँ कोनो बापकेँ फक्र भए सकैत छलैक। बूधन ककाक तँ पैर जमीनपर रुकबे नहि करनि। ओ हमर पितिऔत कका छलाह। हमर बाबा हुनकर पिताक सहोदर भाए रहथिन। मुदा खानदानमे शिक्षा ओ पदमे ओ औअल आबि गेल रहथि। सभ ठाम हुनके चर्च होइत रहैत छल।

रामकुमार ओ गरमसिंह अपन संगी सभक संगे राति भरि डीहगामामे काज करैत आओर भोर होइते निपत्ता भए जाइत। लोक सभ ओकर सभहक अनुग्रहित भए गेल छल। जकरे देखू, सभक मुहेँ ओकरा सभक प्रशंसा सुनएमे अबैत। मुदा क्यो ओकर सभक नाम नहि जानैत। बुझैत-बुझैत लोक एतबे बुझलक जे ओ सभ प्रगतिशील विचार मंचक कार्यकर्ता अछि। आओर किछु नहि। नित्य नव ढवमे ओ सभ प्रकट होइत। गाममे ओकर सभक यश पसरि गेल।

हम तँ एतबे बातसँ खुश रही जे हमर नैहरक लोक बेरपर काज आएल। हमरे घरक नहि अपितु कोनो-ने-कोनो रूपे पुरा गामक मदति केलक। आओर कोनो अपेक्षा नहि रखलक। प्राय: हमरा छोड़ि क्यो ओकर सभक नाम-गाम धरि नहि बुझि सकल।

हमर धिया-पुताक संगी सभ एहन नीक काज केलक ताहि बातसँ हम आनन्दमे रही। रमणक समाचार सुनि सेहो बहुत खुशी भेल। मुदा एहि बातसँअखनो दुख होअए जे हम नहि पढ़ि सकलहुँ।

q

१९.

प्रगतिशील विचार मंचक बैसारमे सभक मत रहैक जे मास्टर साहेब, पुष्पा ओ एहने आन-आन लोक सभकेँ मानिसक स्वास्थ लाभक हेतु प्रयत्न कयल जाय। ताहि हेतु हुनका सभकेँ मानसिक चिकित्सालय, काँके (राँची) लए जयबाक कार्यक्रम छल। सभक ई सोच छलैक जे एहन प्रताड़ित, दुखी आत्मा सभकेँ सहायता करब मानवीय कर्तव्य थिक। देशक स्वतंत्रतासँ बेसी जरूरी थिक जे ओहिमे रहनिहार लोक मनुक्खक जीवन जीबए। एही मुद्दापर ई सभ जनाधार पार्टीक पछाड़ि रहल छल। कारण ओ सभ तँ खाली उपरे-झापरे काज करए। बैसार, भाषणबाजीसँ लोककेँ जोशा तँ दैक मुदा जाहि घरमे चुल्हि नहि फुकाइत छल से कि जानैत स्वतंत्रताक स्वाद। आर्थिक परतंत्रता मनुक्खक सर्वस्व हरण कए लैत अछि चाहे ओ जकरा द्वारा आओर जाहि स्तरपर हो। अंग्रेज चल जेतैक तँ क्यो दोसर ठाढ़ भए जेतैक। शोषणमुक्त, समतामूलक, समन्वयवादी समाजक स्थापना होएत तखनहि स्वतंत्रताक लाभ समाजक दलित, शोषित वर्ग धरि पहुँच सकत अन्यथा ओकर सम्पूर्ण लाभ बलगर वर्ग सोखि लेत। से कहब छलैक ओकरा सभक।

प्रगतिशील विचार मंचक जन कल्याणकारी कार्यक्रमक तहत मास्टर साहेब, पुष्पाकेँ काँकेक मनोचिकित्सालयमे भर्ती कराओल गेल। किछु आओर एहने लोक सभकेँ ओतए आनल गेल। जानि बुझि कए ओकर सभक नाम लोककेँ नहि बताओल गेल कारण ओकरा सभक पाछा फिरंगीसभहाथ धो कए पड़ल छल आओर ताहीसँ ओ सभ ततेक उत्पीड़ित होइत गेल जे अपन-अपन माथपर सँ नियंत्रण खतम कए लेलक। आओर भए गेल आजाद... ।

कतेक दुखद परिस्थिति रहैक तकर वर्णन सुनि क्यो उद्वेलित भए सकैत छल। उद्वेलित मास्टरो भेलाह, पुष्पा सेहो भेली आओर कतेको एहने उद्वेलित होइत-होइत काँके पहुँच जाइत गेल।

रामकुमार स्वयं हुनका सभकेँ दूटा आओर संगी सभक संगे काँके मानसिक रोगी अस्पताल काँकेमे भर्ती करओलक। ओहिठामसँ लौटएमे कै दिन लागि गेलैक।

रामकुमार आपस अपन अड्डापर आबि रहल छल कि डकैतक गिरोह सभपर फिरंगीसभक बढ़ैत चोटक समाचार भेटलैक। जहिआसँ रमण ओहि जिलाक कलक्टर भेलैक एहन लोक सभक पराभव भए गेल छल। यद्यपि ओ रमणकेँ नीकसँ जनैत छल मुदा ओकरा भेँट करबासँ कोनो लाभ नहि लगैत छल कारण ओ आखिर छल तँ फिरंगीसभकनौकर। ओकरे आदेशपर चलैत छल।

ओना किछु मामलामे रमण समाजमे यश प्राप्त केने छल। चोरी-चकारी लूट-पाट सभ ओकरा अएलाक बाद बहुत कम भए गेल छल। मुदा तकर लाभ तँ समाजक सम्भ्रान्त वर्ग धरि सीमित रहि गेलैक। जकरा किछु छलैहे नहि, तकर की लुटेतैक? तँ ओकर प्रयास एकभगाहे रहि गेल छल। अंग्रेजक अफसर रहैत ओ आओर कइए की सकैत छल? जहिआसँ रमण ओहि जिलामे आएल गरम सिंह ओ ओकर गुटक लोक हालत पातर भए गेल छल।

q

२०.

खबासिनीक आबाजाही लागले रहैक। ताहि माध्यमसँ नैहरक आओर आस-पासक घटना क्रमसभ हमरा पता लगैत रहैत छल। मास्टर साहेब आओर पुष्पाकेँ काँकेमे भर्ती केलाक समाचार सेहो खबासिनीक माध्यमसँ भेटल। आओर गप्प सभ होइते रहैक कि लागल जेना धरती जोर-जोरसँ हीलि रहल अछि। सभ भूकम्प-भूकम्प बजैत घर छोड़ि पड़ाएल।

मुदा भागैत कतए? भयानक गुड़गुड़ीक आबाजक संग लगैक जेना पृथ्वी फाटि जाएत। जमीनपर ठाढ़ रहब पराभव छल।क्यो खुट्टा पकड़ने ठाढ़ छल तँ क्यो किछु। माल-जाल सभ चिकड़ि भोकरि रहल छल। कुकुर सभ पहिनहिसँ भुकए लागल छल।

कतेको घर ढनमनाए खसि पड़ल। कतेकोमे दरारि पड़ि गेलैक। अन्न-पानि चीज-वस्तु सभ बर्बाद भए गेलैक। कतेको गोटे घायल भए गेल। कतेकोक हार-पाँजर टुटि गेलैक। के ककरा सम्हारत? कतहु पैर रखबाक जगह नहि रहैक।

ओहि दिन पहिल बेर डीहगामामे घरसँ दरबाजा दिसि हम आएल रही। कनिआ, पुतरा सभ भागली। घरक घर स्वाहा भए गेल। थोड़बे कालमे पृथ्वीक ई गति भए गेल छल। जकरा सम्हारएमे सालो लागि गेल। गामक गाम उजरि गेल।

हम ताबे सासुरमे पुरान भए गेल रही। तीनटा धिया-पुता सभकेँ सम्हारक छल। वयोवृद्ध सासु, ससुरक देखभालक हुनको देखबाक छल। मुदा घर उसरि गेल छल।

सरकारी सहायता मुँहगर लोक धरि सीमित छल। प्रगतिशील विचार मंच ओ जनाधार पार्टीक लोक सभ गामे गाम घुमि- घुमि लोकक मदतिक प्रयास करैत छल मुदा कारगर मदति तँ गरम सिंह आओर ओकर गुटक आओर आओर लोक सभ केलक जकर नामो क्यो नहि जनैत छल।

कहबी छैक जे कलियुगमे नीक करू तैओ अधलाह होइत अछि। सएह परि भेलैक गरम सिंह आओर ओकर गुटक लोक सभकेँ। लोक सभक उपकार तँ ओ सभ दिन केलक मुदा गाहे-बगाहे ओकर भेद खुजि गेलैक। समाचार जिलाक कलक्टरक कान धरि गेलैक।

खुफिआ तंत्र तँ कतेको सालसँ एकर सभहक गतिबिधिक टोह लैत रहैत छल। अपना भरि पकड़बाक प्रयत्न सेहो करैत रहैत छल। मुदा गरम सिंहक जनतामे बहुत समर्थन रहैक। गरीब गुरबा सभक हेतु तँ ओ भगवाने छल। तँ जखन कखनो आपत्तिकाल होइक, एकरा सभकेँ स्थानीय लोक सभ घरे-घर नुका लैत छल। बादमे ओ सभ अपन काजमे परिबर्तन आनए चाहलक, ओही उद्देश्यसँ ओ सभ प्रगतिशील विचार मंचसँ आबाजाही केलक। मुदा रमणकेँ अएलाक बादसँ दृष्ये बदलि गेलैक।

रामकुमारकेँ रमणकेँ सम्पर्क रहैक। आखिर ओकर नेन्नेक दोस्त छलैक। मुदा गरम सिंहक सही पहचान देबएमे ओहो डरैत छल। ओकरा डर रहैक जे रमण बड़ सख्त आदमी अछि। अंग्रेजक अधीन काज करैत अछि। तँ ओकरा जँ गरमसिंहक पता चलि गेलैक तँ ओ ओकरा छोड़त नहि।

एक दिन तँ गरम सिंह पकड़ाइत- पकड़ाइत बँचल। ओ आब अपन जीवनक दिसा बदलए चाहैत छल मुदा हालत ओकरा संग नहि दए रहल छलैक। कहबी छैक जे मनुक्खक पछिला कर्म ओकरा पछोड़ करैत छैक। सएह ओकरोपर लागू छल।

एकराति ओकर सभक बासापर एकाएक पुलिस छापा मारलक। दुनू कातसँ फायरिंगक आवाज आबैत रहल। एक बेर तँ हल्ला भए गेलैक जे गरम सिंह मारल गेल। पुलिस जश्न मनाबए लागल मुदा सत्य बात ई छल जे ओ जान बचाए भागएमे सफल रहल।

q

२१.

पहिने अगिलग्गी, फेर भूकम्प दुनू मिलि कए गामक लोक सभक रीढ़ तोड़ि देलक। लोकक घर नष्ट भए गेल। घरमे राखल चीज, वस्तु सभ स्वाहा भए गेल। बखारी सभ ढनमनाए खसि पड़ल। लोकक संग रहि गेल मात्र अपन परिवार। मुदा ओकर भरण-पोषण एकटा जबरदस्त समस्या छल।

एहन विषम परिस्थितिमे हमर माए टैर गाड़ी भरि-भरि सामान सभ पठओलक। एहिसँ परिवारकेँ कतेक उपकार भेल तकर वर्णन नहि।

ओही समयमे हमर नैहरसँ खबासनी सेहो आएल छलि। ओकरा अएलासँ एकटा अपूर्व आनन्द हमरा होइत छल। बुझाइत छल जेना हम एक बेर फेर अपन नैहर पहुँचि गेलहुँ। माएक समाचारसँ प्रारम्भ भए गप्पक अनबरैत श्रृँखला पता नहि कतए कतए पहुँचि जाइत।

ओहिमे मास्टर साहेब, पुष्पा, रमण, रामकुमार आओर गरम सिंहक तँ कतेको बेर चर्च होइत। ई गप्प-सप्प होइते छल कि खबासिनी गुम्म भए गेल। लाख कोशिश करिऐक, ओकरा घिघरी लगलैकसे लगले रहि गेल। बहुत मोसकिलसँ ओकरा अबाज लौटलैक। कतेको बेर पुछलाक बाद ओ बाजि सकल जे गरम सिंह गुटक अधिकांश डकैत मारल गेल जे बाँचल से पकड़ि लेल गेल। मुदा गरम सिंह स्वयं चम्पत अछि।

“जीवितो अछि कि नहि?”

तकर ओ किछु जवाब नहि दए सकल छलि।

“ई सभ कोना भेलै?” हम पुछलिऐक।

“नवका कलक्टर हाथ धो कए एकरा सभक पाछा पड़ि गेलैक।” खबासिनी कहलक।

ओओर कतेक तरहक गप्प भेल रहैक। मुदा गरम सिंहक पराभवक समाचार सुनि बच्चाक बात सभ मोन पड़ए लागल। ओकर घरक हालत बहुत खराब रहैक। ओ तथापि स्कूल अबैत छल। खेल-धूपमे औवल छल। मुदा पढ़ाइमे मोन नहि लगैक। मास्टर साहेब लाख बुझबितथि ओकरापर कोनो असर नहि होइक।

बहुत दिन धरि गरम सिंहकेँ रहस्यमय ढंगसँ गायब भए जेबाक चर्च इलाका भरिमे होइत रहल। जकरा जे फुराइक से कहितथि। किछु गोटेक हिसाबेओहो पुलिस संगे मुठभेड़मे हताहत भए गेल। मुदा फिरंगीसभ आश्वस्त रहैक जे ओ जीबिते अछि। ताहि बातकेँ स्थानीय समाचार पत्र प्रमुखतासँ छपने छल। मुदा ओ गेल कतए?

हमर नैहरक लोक सभ क्रमश: फेरसँ अपन-अपन खेती-बाड़ीमे जुटि गेल रहथि। सम्पन्न गाम छल। यद्यपि अगिलग्गी आओर तकर बाद भेल भूकम्पसँ बहुत क्षति भेल रहैक, तथापि लोक सभ अपन मेहनतिक बदौलत फेरसँ ठाढ़ भए गेल।

धिया-पुता सभ छेटगर भए गेल छल। ओकर सभक उपनायनक कार्यक्रम बनल। सभ कुटुम्बकेँ आमंत्रित कएल गेल। हमर माए नाना प्रकारक उपहार पठओलक। मास दिन धरि तरह-तरहक विध-विधान होइत रहल। उपनयनक दिन नाच गानक सेहो प्रबन्ध छल। दरबाजापर सामिआना लागल छल। गाम भरिक लोक गीत-नादक आनन्द लैत रहलाह। भोज- भात तँ भेबे कएल।

सभसँ मनोरंजक दृष्य तखन भेल जखन एकटा पाहुन टेबुल घड़ीकेँ चोरा कए अपन धोती तरमे रखने छलाह। ओ कनी दिमागसँ हिलल सेहो रहथि। घड़ीमे एलार्म भरल रहैक। ओ जोर-जोरसँ घनघनाए लागल। चारूकातक लोक एकट्ठा भए गेल। लोक सभमे ठहाका पड़ि गेल। हराएल घड़ी भेटि गेल। मुदा ओ पाहुनजे भगलाह से घुरि नहि अएलाह।

उपयनक पाहुन सभ क्रमश: अपन-अपन गाम आपस चलि गेलाह। सभक यथासम्भव विदाइ कएल गेल। भोजक ततेक सामग्री बाँचल छल जे गाम भरि बएन परसल गेल। लोक सभ खाइत-खाइत तंग भए गेल।

भोरे-भोर बरुआ सभ संध्याबन्धन करैत छलाह। पण्डितजी नित्य भोरे आबि कए ओकर व्यवस्था करथि। गीत-नाद तँ कतेको दिन धरि चलैत रहल। रातिक समयमे पोखरिक भीड़पर जाए बरुआ सहित कतेको लोक की-की बिध सभ केलाह। सत्य नारायण भगवानक पूजा भेल। तकर बाद उपनायनक प्रकृया सम्पन्न भेल।

हमर नैहरसँ आएल खबासिनी सेहो आपस जाए चाहैत छल। ओकरा एकाध दिन रोकि लेलिऐक जाहिसँ गप्प-सप्प कए सकी।

काजसभसँ चैन भए खबासिनीकेँ बैसाए नैहरक समाचार सुनए लगलहुँ। ओही क्रममे गामक कैटा नव-नव समाचार भेटल। कैटा विधबा सभ गाम-घर छोड़ि वृन्दावन चलि गेलीह। परिवारमे समावेश नहि भेलनि।

ओहि समयमे विधबाक दुर्गति कोनो नव बात नहि छल। ककरो पति मरि गेल ताहिमे ओकर की दोष? मुदा से बात समाज ओ कानूनकेँ बुझाइक तखन ने?एक तँ ओकर पति चल जाइक, ताहि संगे सर्वस्व स्वाहा! पहिने तँ देहोमे आगि फूकि दैक आओर हल्ला कए दैक जे सती भए गेलैक। तकर बाद ओकरा देवीक दर्जा प्राप्त होइक। ओकर छाउरपर सती मन्दिर बना दैक आओर चैन भए जाए।

क्रमश: सती प्रथापर रोक लागल। विधबा अपन जान तँ बचओलक मुदा कोन कीमतपर? ई सभ प्रश्न हमरा मोनकेँ उद्वेलित कए दैत छल। ई सभ सोचैत-सोचैत ध्यान माएपर चलि गेल। कनैत देखि खबासिन सेहो कानए लागलि। थोड़बेकालमेसभ सामान्य भए गेल। ओ आपस हमर नैहर दिस विदा भेलि आओर हम अपन काजमे व्यस्त भए गेलहुँ।

q

२२.

गरम सिंह दलक एतेक जल्दी पराभव भए जेतैक से सरकारो नहि सोचने छल। मुदा गरम सिंह स्वयं नहि पकड़ाएल रहैक।ताहि लए कए सरकारी व्यवस्थाक चिन्ता तँ रहबे करैक। ओ सभ रने-बने गरम सिंहकेँ तकैत रहल आओर क्रमश: ढील पड़ि गेल। डकैतक गुट कमजोर भए गेल छलैक। सरकारी अधिकारी सभकेँ निश्चिन्त हेबाक सेहो कारण छल।

असलमे बचल डकैत सभ प्रगतिशील विचार मंच धए लेने छल आओर ओकर आर्थिक पक्षकेँ मजगूत करएमे प्रयुक्त होइत छल। ताहिसँ प्रगतिशील मंचकेँ जनाधार पार्टीकेँ टक्कर देबामेआसानी भए गेलैक। गाम-गाममे प्रगतिशील विचार मंचक समर्थक लोक भए गेल छल। सक्रिय सदस्यक संख्या सेहो बढ़िते जा रहल छल।

गरम सिंह पुलिसक गिरफ्तसँ भागि सोझे वृन्दावन पहुँचि गेल। ओहिठाम एकटा मन्दिरक स्थापना कए ओकर मठाधीश भए गेल। ओकरा संगे चारिटा डकैत सभ सेहो भागएमे सफल भेल छल। ओहो सभ अपन-अपन चोला बदललक आओर सन्यासी भए गेल।

गेरुआवस्त्र पहिरने कृष्णक भक्त स्वांग धेने दिन राति ओ सभ अपन नव कलेवरमे निश्चिन्त भए वृन्दावनवासी भए गेल। क्यो ओकरासभक पछिलका जीवनक जिज्ञासा नहि केलक।

गरम सिंह अपना संगे पर्याप्त धन अनने छल जाहिसँ वृन्दावनमे शीघ्र स्थापित भए गेल। स्थानमे भव्य मन्दिर, अतिथि गृह सहित सभ प्रकारक सुविधा भरि गेल। क्रमश: ओकर चेला सभक संख्या बढ़िते गेल। ओहिमे तँ कतेको यत्र-तत्रसँ आएल विधबा सभ छलीह जिनका सभकेँ कहुना कए रहबाक एकटा ठौर तँ चाही, से ओतए भेटि गेलनि। एहि प्रकारेँ गरम सिंह भजनानन्ददासक नामसँ प्रसिद्ध भए गेलाह।

भजनानन्ददास जखन प्रवचन दैत छलाह तँ चारूकात ओकर चेला सभ मण्डपमे पसरि जाइत छल। किछु गोटे काते-कात ठाढ़ भए जाइत छल। प्रवचन,भजनक बीच-बीचमे ओ सभ ततेक मगन भए कीर्तन करैत, नृत्यक नाना प्रकारक भंगिमा करैत, जे लगैत जेना भजनानन्ददास साक्षात कृष्ण होथि।

पीअर वस्त्र, पीअर चानन, सौंसे कृष्णे कृष्ण। एहि वगएसँ ओ सन्त समाजमे अपन स्थानतँ बनाइए लेलक संगहि भूतकालक कुकाण्ड सभसँ निवृति सेहो भए गेल। ओकरा शास्त्रक कोनो ज्ञान तँ छलैक नहि, मुदा आगन्तुक भक्त सभ अपनेमे ततेक फिरसान रहैत छल जे बिना किछु सोचने विचारने भजनानन्ददासक पैरपर खसैत छल आओर कल्याणक हेतु, नाना प्रकारक कष्ट सभसँ मुक्तिक हेतु हुनकर प्रार्थना करैत रहैत छल। ओहि क्रममे कतेको भक्त तँ अपन धन-सम्पत्ति धरि दान कए हुनकर पक्का चेला बनि गेल छल।

१

२३.

अगिला बेर खबासिनी जल्दीए चंगेरा लए आबि गेलि। ओकरा माए ततेक ने कहलकै जे ओहो तैयार भए गेलि। उठेलक चंगेरा आओर हमर सासुर दिस विदा भेलि। ओकरा अखन आबक इच्छा नहि रहैक, कारण ओकर बेटी नैहर आएल रहैक आओर कए दिनसँ नातिक पेट झड़ैत रहैक। पाँच वर्षक नातिक संगे ओ दिन-राति प्रशन्न रहैत छलि। ओकर अस्वस्थतासँ खबासिनीकेँ दिक्कत भए गेल छलैक। मुदा हमर माए नहि मानलकै आओर नातिकेँ गामक डाक्टरसँ इलाजोमे मदति कए देलकै।

खबासिनीकेँ अबिते हमरा बहुत प्रशन्नता होइत छल। नैहरक सभ समाचार तँ ओ दैते छल, संगहि एहूठामक गतिविधि सभमे ओ बहुत रूचि लैत छल। एहि बेर ओकरा जल्दी अएबाक कारण छल जे माए एकटा खराप सपना देखलक। ओ रातिएमे जोर-जोरसँ चिकरए-भोकरए लागलि। सौंसे ऑंगन लोक भरि गेल। सभ एतबे पुछैक जे एतेक रातिमे हुनका की भए गेलनि? भेल-तेल तँ किछु नहि रहैक मुदा सपनाकेँ ओ सच बुझि लेने छलि। सपना की देखलक से ककरो कहबे नहि कहैक।

खबासिनी हमर नैहरक खिस्सा सुनबैत-सुनबैत रमणक चर्चा करए लागलि। ओ कलक्टर भेलाक बाद गाम कमे काल जाइत छल। बेसी काल दड़िभंगेसँ घुरि जाइत छल। तथापि पैघ लोकमे सभक अनायसे रूचि भए जाइत छैक। खबासिनीक मुहेँ रमणक नाम खसिते हमर उत्सुकता बढ़ि गेल। की बात भेलैक जे एहि बेर ई अबिते रमणक चर्च कए रहल अछि?

हमरा उत्सुक देखि खबसिनी परिछेलक जे रमणक घरवाली ओकरा छोड़ि देलक। कारण पूछलापर ओ किछु बजितेनहि छल। बहुत प्रयास केलापर ओकर मुँह खूजल।

कहाँ दनि रमण जखन इंगलैंडमे पढ़ाइ करैत रहए तँ ओहिठाम एकटा मेम साहेबसँ लकड़ी लागि गेलैक। से ततेक परमान चढ़लैकजे रमण चर्चमे जा कए पूजा-पाठ कए लेलक। ओइ अंग्रेजनिऑंकेँ पता नहि चलए देलकै जे रमणक बिआह पहिनहिसँ भेल अछिमुदा ओहो अन्हरा गेल रहैक। ऑंखि मुनि देलकै। रमण कलक्टरीक परीक्षा पास कए अपन देश लौटए लागल तँ ओहो पछोड़ धए लेलकै। कतबो प्रयास केलक जे ओ ओतहि रहि जाए, से ओ टस सँ मस नहि भेलैक।

रमणक तँ सिटीपीटी गुम्म भए गेलैक। अपना ओहिठाम अंग्रेजनिआँकेँ लए कोना जाइत? की ओकर पहिल पत्नी ई बर्दास्त करत? कृत्घन्ता तँ ओ कइए चुकल छल। ओकरा इंगलैंड जेबाक खर्चा ससुर अपन खेत बेचि कए केने रहथि। दू साल धरि मासक मास ओ इंगलैंड टाका पठबैत रहलाह। संगहि अपन बेटी ओ नाति,नातिनक भरण-पोषण करैत रहलाह, एहि उमीदमे जे जमाए बड़का हाकिमभए जेथिन तँ बेटीक सुख-सुविधा, मान-सम्मानक पराकाष्ठा भए जाएत। अपन संतानक सुख के नहि चाहैत अछि? ताहि लेल जँ कनेक कष्टो होइक तँ लोक सहि जाइत अछि।

मुदा रमण तँ सभटा पर पानि फेरि देलाह। सिगरेट, सिगार ओ विदेशी दारूक संग अंग्रेजी भाषी कनिआक चस्का पड़ि गेलिन। आब तँ वएह सभ हुनकर जिनगी भए गेल अछि। भोरेसँ तरह-तरहक नशाक सेवन करैत अंग्रेजनी संगे रंग-रभस करैत रहैत छथि। कहि नहि कलक्टरीक काज कोना करैत छथि?

मुदा काजमे ओ पक्का रहथि। अंग्रेजक स्वामी भक्त रहथि। ताहिसँ अंग्रेज पत्नीओ लए अनने रहथि। एहि बातसँ तँ अंग्रेज सभ बेहद प्रशन्न भेल रहए। गाहे-बगाहे हुनक अंग्रेज पत्नी (एंगल) सँ सम्पर्को ओ सभ करैत रहैत छल। अंग्रेजकेँ आओर चाहिऐ की? ओ सभ पिट्ठू, अन्धभक्त अधिकारी तकैत छल जे सुख, सुविधा ओ सोनाक टुकड़ीक लालचमे अपनहि देश ओ धर्मसँ दगाबाजीकए सकैत छल आओर करितो छल, रमण ओकर सबहक फर्मामे एकदम फिट कए गेल छल। उपरसँ अंग्रेजिनीक आनि कए सोनामे सुगन्ध कए लेने छल।

ई बात नहि छैक जे अंग्रेज सरकार ओकरापर आँखि मूनि विश्वास कए लेने छलैक। ओकरो चारूकात जासूस लागल रहैत छलैक। एहि बातक ओकरा पक्का सबूत तखन भेटल जखन प्रगतिशील विचार मंचक नायक रामकुमारक ओकरा घर अएलाक तुरन्त बाद कमीश्नर साहेबक फोन आबि गेलैक। ततबे नहि ओकरासँ विस्तृत आख्या सेहो मांगल गेल। रमणकेँ जवाब दैत-दैत पराभव भए गेल छल।

खबासिनीक मुहेँ एतेक रास गप्प सुनि हम पहिल बेर छगुन्तामे पड़ि गेल रही। खबासिनी कतेक दिन रहितए? ओकरा अपन काज सभ मोन पड़ए लगैक आओर तखनसँ आपस हेबाक ब्योंतमे लागि जाइत। ओ जखन गाम जाए लागलि तँ रमणक परिवारक की कोना भेलैक, तकर सभटा जानकारी अगिला बेर आनए हेतु कहि ओकरा विदा कएल।

खबासिनीक आबाजाही बनल रहलासँ हमरा तँ मोन लागिए जाइत छल, हमर माएकेँ बड़का उसास होइक। नान्हिटा बच्चासँ हम जबान भए गेलहुँ, मुदा माएक हेतु तँ जेना दुधपीबे रही। सही कहल गेल अछि माए, माए होइत अछि..! मुदा हमर माएक तँ हम एकमात्र आश रहिऐक आओर सेहो कनीकेटामे ओकरासँ फराक एकदम नव लोकक संग सासुर बसए लागल रहिऐक।

क्रमश: सासुर घरे लागए लगलैक। जुड़ल अटल घर रहैक। जमीन-जालसँ नीक उपजा भए जाइक। दिन कोना बीति जाइक से पतो नहि चलैक। परिवारमे नव-नव बच्चा सभ अबैत गेल। बेटा, बेटी सभसँ घर भरि गेल। हमर ससुर एहि बातसँ बहुत खुश रहथि।

q

२४.

ओहि समयमे स्वतंत्रता आन्दोलन जोड़ पकड़ने छल। गामे-गाम लोक फिरंगीसभक खिलाफ नारा लगबैत छल। कोनो इलाकामे जनाधार पार्टीक बर्चस्व तँ कतहु प्रगतिशी विचार मंचक। गरम सिंह गुटक डकैत सभ जे जीबित रहि गेल से अधिकांश प्रगतिशील विचार मंचमे सक्रिय भए गेल तँ किछु गोटे वृन्दावन बासी भए भजनानन्ददासजी महराजक सेवक भए बेस मोट-सोंट भए गेल। नाना प्रकारक चानन-तिलक, गरामे तरह-तरहक रूद्राक्ष ओ हाथ-सँ-पैर धरि सुसज्जति पीताम्बरी पहिरने ओकर सभक शोभा तँ देखैत बनैत छल।

दिन भरि ओकर सभक आश्रममे एक तरफ किर्तन तँ दोसर तरफ भन्डारा चलैत रहैत छलैक। शिष्यक संख्यामे निरन्तर वृद्धि भए रहल छलैक। आश्रममे पैसा,रूपैआ तँ जेना झहरैत छल। गनबाक पलखति नहि रहैक। तँ चारिटा मुस्टंड ओहि टाका सभक देखभालमे मुस्तैद छल।

आश्रमकधनबल, जनबलक लगातार होइत वृद्धिसँ भजनानन्ददासजी निरन्तर आनन्दमे रहैत छलाह। साक्षात कृष्णक स्वरूपमे जखन ओ भक्तक समक्ष उपस्थित होइतथि तँ आश्रमवासी विधबा भक्तगण सभकँ तँ भक्तिकज्वारभाटा उठि जाइत छलनि। कतेको भाव विह्वल भए नृत्य करए लागथि। कतेको भजन करए लागथि। ककरो-ककरो तँ जेना भजनानन्द स्वामीमे साक्षात् कृष्णक दर्शन होमए लागए आओर ओ सभ हुनकर पैरपर दंडवत खसि पड़ैत।

झालि-मृदंग, ढोलक संग कृष्णक रासलीलाक अनुपम दृष्य देखए हेतु कतए-कतएसँ भक्त सभ आबि जाइत छलाह।

एहि प्रकारक भक्तिरसमे सराबोर लोककँ माथाक कोन काज? ओ सभ अन्धभक्त भए गेल छल। भजनानन्ददासक हेतु सर्वस्व तन, मन, धन अर्पित छल। आखिर, सभकँ मुक्ति तँ चाहबे करी। भवजालसँ दूर हटि कए स्वर्गक द्वार खुजि रहल छलैक। ताहि पथकँ चलिते-चलिते भक्त सभ अपन धन ओ समस्त सम्पदा स्वत: अर्पण करबाक हेतु आतुर भए गेल छल।

आब तँ बस एकटा आदेशहोइक आओर ओ सभ अपन नगद, गहना, जमीन, जायदाद, सभ भजनानन्द स्वामीकँ समर्पित करए लागल। मुदा भजनानन्दजी तँ कथुमे हाथो नहि लगबैत छलाह। सभकाज हुनकर मुस्टंड सभक मार्फत भए जाइत छल। बहरिआ सभ बुझि नहि रहल छल जे आखिर भए की रहल छल?

प्रगतिशील विचार मंचक किछु कार्यकर्तासँ जनाधार पार्टीक लोक सभसँ कोनो-कोनो बातपर बाद-विवाद होइते रहैत छल। पहिने तँ ई बात गाहे-बगाहे होइत छल मुदा किछु दिनसँ एकर रफ्तार बढ़ि गेल छल। जनाधार पार्टीक नेतृत्वक चिन्ता बढ़लजा रहल छल मुदा ओ सभ किछु कए नहि पाबि रहल छलाह।

हारि कए ओ सभ प्रगतिशील विचार मंचक संग बैसार केलाह। उद्देश्य ई जे गप्प-सप्पसँ समस्यासभक समाधान कएल जाए। जनाधार पार्टीक नेता सभ अपना भरि सभ कोशिश केलाह मुदा प्रगतिशील मंचक लोक एहि बातपर अड़ि गेल जे स्वतंत्रतासँ बेसी जरूरी सामाजिक परिवर्तन थिक। शोषण मुक्त समाजक बिना

ejournal 'विदेह' २५५ म अंक ०१ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५५) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

स्वतंत्रताक लाभ किछु गोटे धरि रहि जाएत। अधिकांश ओहिना रहि जाएत। गप-सप्प होइते छल कि आसपासमे जोरदार धमाका भेलैक।

अफरा-तफरीक महौलमे के कतए गेल, ककर की हराएल, ककर जान गेल, के मरि गेल किछु नहि बुझाएल। के साजिस केलक तकर किछु अनुमान नहि लागि रहल छल। जनाधार पार्टीबला सभ प्रगतिशीलमंचपर आरोप लगा रहल छल जखन कि ओ सभ अपनाकेँ निर्दोष कहैत छल। क्यो-क्यो कहैक जे एहिमे फिरंगीजासूसक हाथ भए सकैत अछि।

q

२५.

अचानक भेल बिस्फोट ततेक सशक्त छल जे आस-पासक मकान सभ हिलि गेल। कैटाक खिड़की, केबाड़क शीशा चूर-चूर भए गेलैक। जनाधार पार्टीक प्रान्तीय प्रमुख सहित कैटा स्थानीय नेता खूनसँ लतपथ पड़ल छलाह। प्रगतिशील विचारमंचक कार्यकर्त्ता सभ सेहो घायल रहथि मुदा अपेक्षाकृत कम। संयोगवश राजकुमारकेँ दहिना पैरमे मामूली चोट आएल छल। ओकरा प्राथमिक इलाजक बाद अस्पतालसँ छुट्टी भए गेलैक। गम्भीर रूपसँ घायल सभकेँ अस्पतालमे भर्त्ती कएल गेल। ओहिमे जनाधार पार्टीक प्रान्तीय प्रमुखक हालत बहुत गम्भीर छल।

देश-विदेशमे ई समाचार पसरि गेल। फिरंगी सभकेँ मौका भेटलैक। आनन-फाननमे प्रगतिशील विचार मंचपर प्रतिबंध लगा देल गेल। ओकर कार्यकर्त्ता सभकेँ हिरासतमे लए लेल गेल। मुश्किलसँ राजकुमार बँचि कए भागल।

असलमे फिरंगी सभ बहुत दिनसँ प्रगतिशील विचारमंचसँ तमसाएल छल। कखन ओ सभ सरकारी असहयोगक बाबजूद तेजीसँ देश भरिमे पसरि रहल छल। फिरंगी सभकेँ ओ चुनौती दए रहल छल।

राँची मनोचिकित्सालयमे भर्तीक बादसँ क्यो मास्टर साहेब वा पुष्पाक हाल-चाल लेबए नहि गेल। ओ सभ जीबए, मरए तकर ककरो चिन्ता नहि। ओहिठाम एहेन सैकड़ो एहन मनोरोगी छलाह जे आब स्वस्थ भए गेल रहथि मुदा हुनकर परिवार अपना ओहिठाम नहि लए जाथि। ओकर सम्पत्तिकेँ हरण कए निश्चिन्त भए गेल रहथि। मनोरोगी अस्पताल काँकेक स्थिति भयाबह छल। क्यो रोगी बड़बड़ा रहल अछि तँ किओ गुम्म पड़ल अछि। क्यो-क्यो बहुत आक्रमक छल। मनुक्ख देखितहिं चिकड़ए लगैत छल। सभ जानवर जकाँ जीबि रहल छल।

बिस्फोटक बाद राजकुमार अस्पतालसँ घसकल। देखलकै जे पुलिस ओकर गुटक लोकसभकेँ ताकि रहल अछि। कै गोटा पकड़ल गेल छल। ओ जान-बेजान ओहिठामसँ भागल आओर घुरि नहि तकलक।

राते-राती बस पकड़ि राँची पहुँच गेल। ओतएसँ काँके मनोचिकित्सालय पहुँचल। ओतए पहुँचतहि अपन माएकेँ ताकए लागल। पुष्पाक हालत ठीक नहि छल।

मास्टर साहेब पूर्ण स्वस्थ भए गेल रहथि। राजकुमारकेँ देखितहि चिन्हि गेलखिन। भाव विह्वल भए कानए लगलाह। जल्दीसँ जल्दी घर आपस जाए चाहैत छलाह। अस्पताल प्रशासनसँ गप्प कए रामकुमार हुनका ओहिठामसँ छुट्टी करओलक। मास्टर साहेबक गाम विदा कए राजकुमार माएक जिज्ञासामे फेर अस्पताल पहुँचले छल कि पुलिसकेँ कतहुँसँ ओकर हवा लागि गेलैक पुलिस ओकरा तकैत-तकैत राँची पहुँच गेल छल। पुलिसकेँ पछोड़ करैत देखि ओ भागबाक प्रयास केलक मुदा पुलिस चारूकातसँ घेरि लेलकै। ओ भागि नहि सकल। पकड़ा गेल।

राजकुमार पुलिसकेँ बहुत हाथ-पैर जोड़लक जे ओकर माए अस्पतालमे भर्ती अछि। ओकर हालत ठीक नहि अछि, मुदा ओ सभ किछु नहि सुनलकै। थोड़कालमे राजकुमारकेँ लए पुलिस अज्ञात स्थान दिस चलि गेल।

मास्टर साहेब बहुत दिनक बाद अपन गाम पहुँचलाह। किछु गोटे तँ हुनका चिन्हिओ नहि सकल। आकार, प्रकार सभ बदलि गेल छल। कृष्णकाय, दप-दप करैत मुखारविंद ओ तेजस्वी संभाषणसँ ओ अखनहुँ लोककेँ प्रभावित कए लेने छलाह। थोड़बे कालमे सौंसे गामक लोक जमा भए गेल।

मास्टर साहेब सभसँ ततेक नीकसँ गप्प-सप्प केलथि जे लगबे नहि करैक जे ओ काँकेसँ इलाज कए लौटलाह अछि। मुदा किछु लोककेँ अखनो चिन्ता होइक जे कहीं ओ दोबारा ओही हालमे ने पहुँचि जाथि। ताहि हेतु ओ सभ शुरूएसँ सावधान भए गेल। ओ सभ मास्टर साहेबक शुभचिन्तक एवम् निकट सम्बन्धी छलाह। अस्तु, एहि बातक हेतु सचेष्ट रहथि जे हुनका कोनो प्रकारसँ मानसिक दबाब नहि पड़नि।

मास्टर साहेब जखन अपन घर आपस अएलाह तँ कनी काल तँ गुम्म पड़ि गेलाह। फेर आगू बढ़लाह। घरसँ एकटा युवक बहराएल। ओकरा देखिते मास्टर साहेब चिकरि उठलाह-

"किशोर!तूँ कतए छलह एतेक दिन?"

मास्टर साहेबक हिसाबे तँ ओ डकैतक गिरोह द्वारा मारल गेल। माएक संगे डकैत सभ ओकरो मारि देलक। मुदा क्यो एहि बातपर ध्यान नहि दए सकल जे घटना स्थलसँ मात्र मास्टर साहेबक पत्नीक लहास भेटल छल। किशोर तँ कतहुँ निपत्ता भए गेल छल।

भेलैक ई जे डकैत सभ धोखासँ परिस्थितिवश मास्टर साहेबक घरमे फसाद कए देलक। जाबे ओकरा सभकेँ हालत काबूमे अएलैक, मास्टर साहेबक पत्नी तँ दुनिआँसँ जा चुकल छलि। मुदा किशोर बचल छल। ओकर चोट बहरिआ छलैक। डकैत सभ ओकरा उठौने-पुठौने सरकारी अस्पताल लग छोड़ि देलक। संयोग रहैक जे ओहिठामसँ अस्पतालक डाक्टर जाइत रहए। ओ ओकरा उठा-पुठा कए अस्पतालमे भर्ती कए देलक। ओ मामूली इलाजक बाद बचि गेल। जीबि तँ गेल मुदा ओकरा किछु मोन नहि पड़ैक। स्मृति क्षय भए गेल रहैक। एहि स्थितिमे ओ अस्पताल छोड़ि कतहु चलि गेल।

१

२

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

उपन्यास- हमर गाम

8. लम्बोदर

मूल नाम: दरिद्र नारायण झा

पिताक नाम: पलटू झा

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: पाँच वर्ष पहिने

उपलब्धि: लम्बोदर नाम गुण पैघ उदर बला छलाह। हमहूँ देखने छिऐनि हुनकर शरीर। कण्ठसँ डाँड़क बीच मात्र एक तिहाइमे छाती आ दू तिहाइमे लम्ब उदर। से कोनो पैघ धोधि फूटल नहि, सपाट। आइ कालि हीरो सब सिक्सपैक चमकबैत रहैत अछि मुदा लम्बोदरकेँ छातीआ पाँजरक सबटा हाड़ लोक सौ मीटर दूरोसँ गनि सकैत छल। हुनका बुझलो नहि छलनि जे ई शारीरिक सौष्ठवक विशेषता छिऐ।

वृत्तिएँ लम्बोदर मरणोपरान्तक संस्कार करबैत छलखिन।आ पोखरिपर भोजन करब हुनक एहि वृत्तिक अंश छल। मुदा एक बेरक खिस्सा जे बूढ़ लोक कहैत छथि से अद्भुत छल।

लम्बोदर अपन जजमनिकामे कोनो गाम गेल छलाह। ओतए चूरा-दही भोज छलैक। इन्तजाम तऽठीके छलैक मुदा हिनका सबहिक भोजन बेर किछु कुव्यवस्थाक कारण दही कने कम पड़ि गेलै कारण पोखरि पर सामान हिसाबे सँ पठाओल गेल छलै। लम्बोदर लगलाह अखरा चूरा फाँकए। जाबत घरवारी दहीक व्यवस्था केलनि ताबत ई करीब पाँच सेर चूरा सधा देलखिन। आब हाल ई छल जे जाबत दही आबए ताबत हिनका पातमे चूरा सधि जाए, ई छुच्छे दही सुड़कथि आ तकर बाद फेर अखरा चूरा फाँकथि। ई अपना दूनू कात माटिपर चेन्ह दऽकए आन लोककेँ उठि जेबाक संकेत देलखिन आ अपने खाइते रहलाह। जखन करीब एक बोरा अखरा चूरा आ चारि तौला दही सधा देलनि तखन घरवारी हाथ जोड़ि कए ठाढ़ भऽगेलखिन। तैयो ई ढकार नहिए लेलनि मुदा परिस्थितिकेँ बूझि घरवारीकेँ कहि देलखिन-

"अहाँ पार उतरि गेलहुँ, हम आब तृप्त छी।"

एतबा कहि ओ उठि कए हाथ धोलनि, पान सुपारी लेलनि आ दस किलोमीटर टहलैत टहलैत गाम आबि गेलाह। कियो कखनहु हुनकर पेट उठल कि फूलल नहि देखलक। अगिला दिन लम्बोदर फेर कोनो भोज खेबा लेल तैयार। हिनके भोजन देखि ने कियो फकड़ा बनौने छल ___

पाँच पसेरी अखरा चूरा, दही छाँछ भरि जलखै जकरा

की हैत चटने पाभरि जोड़न? ऊँटक मुहमे जीरक फोड़न !

हमरा अपना गाममे हुनका के खुअबितए? मुदा ओ परिस्थितिकेँ बुझैत छलखिन आ गामक भोजमे कहियो छूटल घोड़ा जकाँ व्यवहार नहि केलनि।

हमरा गाममे किएक ककरो बूझल रहतैक जे गिनीज बुकमे हुनकर नाम रेकॉर्डमे लिखबितए। हमसब एहि गौरवसँ चूकि गेलहुँ तें हम नियारल जे अपन संकलनमे हुनकर चर्चा जरूर करब।

q

9. नटवर लाल

मूल नाम: जयन्त कुमार लाल दास

पिताक नाम: शिव मोहन दास

जन्म तिथि: सन उनैस सौ अठतालीस के चौरचन दिन

उपलब्धि: नटवर लालक पिता अल्प वयसमे मरि गेलखिन। माताक एकमात्र सन्तान ई गामक बिगड़ल छौंड़ा सब के संगतिमे फँसि गेलाह। यद्यपि हमरा गाममे बीएक असफलताक बाद सब गार्जियन अपन धियापूताकेँ स्कूल जेबासँ परहेज करबए लागल मुदा जयन्त कुमार लाल दास स्कूल गेला जहिना कि हिनका टोलक किछु आर बच्चा सब करैत छल। कहुना अठमा तक घुसकला तकर बाद हाथ उठा देलनि।

बच्चहिंसँ हिनकामे विशेष लूरि छलनि लोककेँ ठकबाक। पहिने तऽबहुत दिन तक माएकेँ ठकलनि आ मटिकोरबा गामक हाटपर झिल्ली कचरी बतासा लड्डू खाइत रहलाह। तकर बाद अनकोपर अपन मंत्रक प्रयोग केलनि। लम्बोदरक पितियौतकेँ जजमनिकामे भेटल रंगल धोती सब ई कामति टोलक लोककेँ किना दैत छलखिन, बेसी दामपर जे तोरा रंगक खर्चा बचि गेलहु, आ धोती बलाकेँ कहि दैत छलखिन जे रंगल धोती कियो नहि कीनत, ओ तऽधन्य कहू जे हम एक गोटेकेँ फुसला कए राजी केलहुँ। धोती बेचनिहार कहियो नहि बुझलनि जे के किनलक आ कीननिहार कहियो नहि बुझलनि जे ककर धोती ई किनलक। एही

तरहेँ पुरना किताब विद्यार्थीसँ लऽ कए ओकरा नवका भावें बेचथि। एहि व्यवसायमे हिनका नीक आमदनी होमए लागल। अपने ई लील टिनोपाल देल नीक धोती गंजी पहिरए लगलाह।

एहि बीच किशोर वयसमे प्रवेश करिते हिनक आदति सब बिगड़ए लागल। ई सुनसान गाछी बिरछी आ पटुआ कुसियारक खेतमे शिकार करए लगलाह। हाथमे पाइ रहितहि छलनि से शिकार भेटिए जाइ छलनि। सब गाममे सब तरहक लोक होइ छै आ हमरो गाम एहिसँ बचल नहिए छल। मुदा जखन एक गोटेकेँ किछु भऽगेलै आ ओकर बाप हिनका तंग करए लागल बियाह कऽलेबा लेल तखन ई पहिल बेर डरा कए गामसँ भागि गेला।

छओ मास बाद घुरला तऽमाएकेँ सब बात बुझबामे आबि गेल छलनि। ओ बेचारी नीक रस्ता धेलनि आ हिनकर बियाह करा देलखिन। नटवर लाल पत्नीमे रमि गेला। साले साल पुत्र रत्नक बरखा होमए लागल। तेरह साल पुरैत पुरैत हिनका लग छोट पैघ तेरहटा बच्चा छल_एकछाहा पुल्लिंग। घरमे जगह तऽनहिए छलनि, बुतातोपर आफत आबि गेलनि। ताबत माताराम उपरक रस्ता धेलनि आ ई लगला पुस्तैनी जायदादकेँ बेचि गुजर चलबए।

एहि बीच हिनकर भाग्य जागल जखन मात्रिकक एक गोटे बैंक मनेजर बनि कए राजनगर एलखिन। हिनकर दुर्दशा देखि ओहि बेचाराकेँ दया लागि गेलै आ हिनका बैंकमे चपरासीक नोकरी भेटि गेलनि। आब की छल? राति दिन हिनका आङ्गनसँ माछक सुगन्ध उठए लागल।

बैंकमे पहुचि नटवर लालकेँ अपन असली रूप देखेबाक अवसर भेटि गेलनि। हमरा गामसँ राजनगर दस किलोमीटर। ताबत ने रोड नीक भेल छलै आ ने टेम्पूक चलन भेल छलै। ई लोककेँ फुसिया फुसिया बैंकमे खाता खोलबौलनि आ तकर बाद ओकरा सबकेँ लघु बचत योजनासँ जोरि नित्य साँझमे एकटकही दुटकही, जकरा जेहन जुड़ै, से जमा करए लगला। पासबुक बनि गेलै मुदा सबटा पासबुक ई अपनहि संग राखथि। लोककेँ विश्वासमे लेने। जरूरति पड़लापर सौ पचास उधार सेहो दऽदैत छलखिन ई कहि जे बैंकसँ लोन भेटलहु। लोक लोन सधबए लागल आ अगिला किस्त उठबए लागल।

एहि बीच ई गामक संचित टाका निजी काजमे लगाबए लगला। पासबुकपर किछु चढ़ै नहि। लोककेँ किछु बुझबामे अबै नहि। प्रायः पाँच साल तक ई खेला चलैत रहल। कियो यदि कहियो पासबुकक चर्चा करए तऽई बहन्ना बना देथि जे बैंकमे राखल छै। दश किलोमीटर बिना कोनो साधन के चलि कए जाएब कठिन छलै आ लोक अनठा दैत छल।

एक बेर ककरो बेटीक बियाह लेल पाँच हजार टाका निकासी करबाक जरूरति भेलै। ओकरा हिसाबें जतेक टाका ओ जमा करैत गेल छल ओहिसँ पाँच हजार जरूरे उठाओल जा सकैत छलै। नटवर लाल किछु दिन टालमटोर करैत रहला। मुदा बेटी बला कते दिन मानितए? अन्तमे हारि कए ओ एक दिन पहुँचि गेल राजनगर बैंक।

तकर बाद जे हेबाक छलैक सएह भेलै। सबटा भेद खुजि गेलै आ बेटी बलाक खातामे मात्र अढ़ाइ सौ टाका भेटलै। गामक प्रायः सब के टाका डुबलै। सब अपन कपार पीट कए रहि गेल।

नटवर लालपर विभागीय कारवाइ भेलनि, ओ जेल गेला। एहि बीच तेरह पुत्र सेहो बढ़ैत गेलखिन आ सौंसे भारतमे छिड़िया गेलखिन। हुनका लोकनिक लेल बापक पापक बीच गाममे रहब कठिन भऽगेलनि। पत्नी सेहो अस्वस्थ रहए लगलखिन आ करीब चारि सालक बाद स्वर्ग गेलीह। पेरोलपर आबि नटवर लाल पत्नीक संस्कार केलनि।

करीब सात साल जेलमे सरलाक बाद ओ गाम घुरला। मुदा हुनका मुखरापर कोनो ग्लानिक भाव कहियो नहि एलनि। एखन गामे रहैत छथि आ बेटा सबहक पठाओल टाकापर गुजर करैत छथि।

कोशिश तऽओ एखनहु करैत छथि लोककेँ ठकबाक, पुरान आदति जे छनि, मुदा आब लोक हिनका चीन्हि गेल अछि से हिनका नहि सुतरै छनि।

q

जारी....

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ आ दूटा लघुकथा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

5.

पन्द्रह अगस्त 1947 इस्वीकएलालकिलापर स्वतंत्र देशक तिरंगा झण्डा फहरा गेल। 30 जनवरी 1948 इस्वीकए गाँधीजीक मृत्यु गोली लगलासँ भऽ गेलैन। 26 जनवरी 1950 इस्वीकए देशक अपन संविधान लागू भऽ गेल। 1952 इस्वीमे लोको सभा आ राज्यक विधान सभा-ले सेहो चुनाव भऽ गेल।

1952 इस्वीक आम चुनाव देशक ऐतिहासिक चुनाव छल। ऐतिहासिक ऐ मानेमे जे जेतेटा देश भारत आइ अछि ओतेटा भारत शासनक दृष्टिसँ पहिने नइ छल। राजा-रजबारसँ लऽ कऽ जमीन्दार, महंथानासँ देश भरल छल। किसानक देश भारत रहितो किसानक मूल पूजी[i] राजा-रजबारसँ लऽ कऽ महंथाना-जमीन्दार धरिक हाथमे घेराएल छल।

ओना, लोक सभाक चुनावमे जहिना देशक शासन (केन्द्र शासन) काँग्रेस सरकारक हाथ आएल तहिना राज्यक शासन सेहो काँग्रेसक हाथमे आएल। मुदा केन्द्रोमे आ राज्योमे एकछाहा काँग्रेसेक प्रतिनिधिटा नहि पहुँचला, अनेको राजनीतिक पार्टीक प्रतिनिधि सभ पहुँचल छला। दिल्लीक शासनमे जहिना पण्डित जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे काँग्रेसी सरकार बनल, तहिना अनेको पार्टीक बीच कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि सेहो विरोधी दलक नेतृत्वमे ठाढ़ भेला। काँग्रेस पार्टीक अलाबे आन सभ पार्टीसँ बेसी कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि छला। चुनावसँ पूर्व सभ पार्टी अपन-अपन घोषणा पत्रक माध्यमसँ अपन-अपन कार्यक्रम निर्धारित कऽ नेने छल।

देशोक बीच आ राज्यो सभक बीच समाजिक-आर्थिक विषमता तँ छेलैहे। कोनो-कोनो राज्य औद्योगिक क्षेत्रमे अगुआ जिनगीक मूल समस्याक समाधानमे सेहो अगुआ गेल छल, जइसँ ओइठाम रोजगारसँ लऽ कऽ स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सभ किछु अगुआ गेल छेलइ। मुदा अधिकांश राज्य पछुआएल छल। पछुआएबो एक्के रंगक नहि छल, रंग-बिरंगक छल। कोनो राज्य अपन जमीनकेँ[ii] प्रगतिक पटरीपर चढ़ा नेने छल, तँ कोनो राज्य पाछुए मुहेँ ससैर रहल छल। केरल-बंगालक संग आनो-आनो राज्य सभ अपन अर्थ बेवस्थाकेँ पटरीपर चढ़बए लगल छल। ओना, अपन बिहारो तइमे पाछू नहि छल। घराड़ीक जमीनकेँ[iii] बेलगान करबा चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलन सेहो मिथिलांचलमे जमि कऽ भेल। मुदा बकास्त जमीन तँ ओ जमीन ने भेल जेकरा अंग्रेज बहादुर सर्वे-सेटलमेन्टसँ 1903 इस्वीमे फाइनल केने छल। मुदा तँए कि पुस्त-पुस्ताइनसँ लोक खेती करैत नइ आबि रहल छला, सेहो बात तँ नहियेँ छल। मुदा हुनका सबहक लेल जमीनक कोनो अधिकार पत्र नइ छेलैन, तँए ओ सभ बँटेदारक रूपमे अपनाकेँ बुझै छला। जमीन उपजबैत रहला, अगो-जनारसँ लऽ कऽ अधिया-बाँट बाँटैत खेतबलाकेँ अपन कर्जक सुदि-सबाइ चुकबैत खाली हाथे घर घुमैत रहला। तँए एहेन खेतिहर लेल नव सिरासँ बटाइ कानूनक जरूरत भेल। ओना, किछु परिवारकेँ बेलगान घराड़ी छेलैन मुदा हुनको सबहक घराड़ीक लूट-पाट होइते रहैन। ओना, बेलगान घराड़ीपर रहनिहार आ खेत उपजौनिहारक नाओंसँ 'सिकमी बँटाइ'क खतियान सर्वेमे बनि चुकल छल मुदा तेकर अतिरिक्तो आधासँ बेसीए बँटेदार छुटलो छलाहे। मिथिलांचलक साम्यवादी पार्टी अपन चुनावी घोषणा पत्रमे अपन समस्या-समाधानक प्रस्ताव रखि चुकल छल, खेतीक लेल माटि मूल पूजी छीहे। लिखितसँ मौखिक धरि अपन मूल समस्या जेना- भूमिहीनकेँ बासभूमि, खेत उपजौनिहारकेँ सिकमीक बटाइक अधिकार, अधिक जमीन रखनिहार जमीन्दार-महंथानाकेँ भूमि हदबन्दीक[iv] भीतर आनब आ ओकर शेष जमीन उपजौनिहारक हाथमे देबइत्यादि।तैसंगपीबैसँ लऽ कऽ खेत पटबै धरिक पानिक बेवस्था, अइलेकोसी नहरिक संग गाम-गाममे पसरल पोखैरिक जे समस्या सभ छल तेकर समाधान सार्वजनिक रूपमे हुअए, इत्यादि-इत्यादि। ऐ सभ समस्याक समाधानक लेल साम्यवादी पार्टी उठि कऽ ठाढ़ भेल।

मिथिलांचलक सौभाग्य रहल जे ऐठाम महान-महान साधक लोकनिक आवाजाही सदिकाल होइत रहल। खाली आबाजाहिये टा नहि भेल, ओ सभ मिथिलांचलकेँ अपन कर्मभूमि बना जीवन भरि सेवा करैत रहला।

सन् 1955 मे विनोबा भावे झंझारपुर एला। नमहर सभाभेल छेलैन।अखन जे थानासँ पच्छिम औद्योगिक क्षेत्रक रूपमे देखै छी, ओइ समय ओ नमहर फिल्ड छल, जैपर फुटबॉल सेहो खेलल जाइत छल, ओही फिल्डपर सभा भेल छल। भूदान आन्दोलनक रूपमे जमीनक आन्दोलन विनोबाजी ठाढ़ केलैन। हुनक माँग रहैन अपन जमीनक छबम् हिस्सा जमीन दान करू।

एक दिस तेलांगनाक सशस्त्र लड़ाइ जारी छल आ दोसर दिस भूदानी आन्दोलन शुरू भेल।ऐ आन्दोलनमे प्रेम-पूर्वक स्वेच्छासँ अपन जमीन दान कएल जाइ छल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल छल।

परिवारक रूपमे जहिना जीविकाक लेल खेत आ खेतीक समस्या छल तहिना गाम-समाजक रूपमे सेहो अनेको समस्या छल। एक दिस नव स्वतंत्र देश, दोसर दिस धरतीसँ अकास धरि अनेको समस्या सबहक सोझामे उपस्थित भेल। गाममे एक दिस जहिना पेटक समस्या छल तहिना दोसर दिस वस्त्र, आवास, शिक्षा आ चिकित्साक समस्या सेहो छल। गाम-गाममे हैजा, चेचक, मलेरिया इत्यादि अनेको संक्रामक बेमारीक प्रकोप होइत रहै छल। जइसँ अनेको लोक मरै छला। ने पढ़ाइ-लिखाइक लेल विद्यालय छल आ ने बेमारीक लेल चिकित्सा सुविधा। तैबीच अन्ध-बिसवास तेना पसरल जे मनुखकेँ समुचित दिशा दिस बढ़ए नहि दैत छल। अन्हार घर साँपे-साँप सदृश वातावरण बनल छल।

राज्यो सरकार आ केन्द्रो सरकारक बीच अपन-अपन एहेन-एहेन समस्या सभ छल जे अर्थाभावमे किछु कइये नहि पेब रहल छल। ओना, अर्थाभाव सेहो छल मुदा मूल अभाव छल कुशल केनिहारक।

मिथिलांचल सभ दिनसँ धार-धुरक इलाका रहबे कएल अछि। दर्जनो धार मिथिलांचलक बीच अछिए। ओहू धार-धूरमे सभ धारक गति-विधि एक्के रंग सेहो नहियेँ अछि। किछु धार एहेन अछिजे बेसी काट-खोंट करैए आ किछु एहेन अछि जे बहैत तँ अछि सालो भरि मुदा समटल गतिये। तैसंग मरल धार सेहो अछिए। मरल धारक माने भेल,ओहन धार जे बरसातमे तँ किछु दिन बोहितो अछिमुदा रहैए सभ दिन सुखले। जइसँ ने ओइ जमीनमे उपजा-बाड़ी होइए आ ने उपयोगक कोनो दोसरे काज। तैसंग माटिक रूपमे सेहो दुभाग्य रहल अछि जे उपजाउ माटि माने उर्वर शक्तिबला खेतक माटि भँसि गेल आ ओकरा ऊपर दोखरा बाउल भरि गेल।

कोसी-कमला नदीक उपद्रव सबहक सोझमे छेलैहे। ओकरो रोक-थामक लेल मिथिलाक किसान उठि कऽ ठाढ़ भेला। कोसी नदीकेँ दुनू भागसँ बान्हि ओइ पानिक उपयोग सिंचाइ-ले करैक योजना बनल। बान्हक संग फाटकबला पुलो आ नहरोक योजना बनल। तैसंग बिजली उत्पादन लेल डैम बनबैक अवाज सेहो उठले छल। ओना, देश नव-नव स्वतंत्र भेले छल। जइसँ देशवासीमे स्वतंत्रताक उत्साह सेहो बनले छेलैन। कोसी नदीक दुनू तटबन्ध बनबैले एकाएक जन-सैलाव उमैड़ गेल। माने जन-आन्दोलनक रूपमे सहयोग भेल। गाम-गामसँ लोक अपन श्रमदान करैले पहुँचल। बान्हो बनल, नेपाल सीमाक बीच फाटकबला पुलो बनल।सबहक मनमे बिसवास भेल जे दुनू देशक जमीनक सिंचाइ हएत। मुदा आइ लक-धक साठि बर्ख बीतलोपर कोसी नहरक योजनाक की गति अछि, ओ सबहक बीच अछिए। देशक अजादीक लड़ाइमे जे पीढ़ी बलिदान देलैन हुनकर आइ तेसर पीढ़ी गुजैर रहल अछि, गाम-घर छोड़ि-छोड़ि ओ सभ पड़ाइन कए रहला अछि।

जहिना अपना देशमे अंगरेजी शासनक विरूद्ध 1935 इस्वीक पछाइत जन-आन्दोलन उग्र भेल छल तहिना दुनियाँक बीच सेहो युद्ध जारी छल, जेकरा द्वितीय विश्व युद्धक रूपमे जनै छी। दू भागमे बँटि दुनियाँक बीच जबरदस लड़ाइ फँसि चुकल छल। पहिल विश्व युद्धक भुक्तभोगी जर्मनी भऽ चुकल छल। 1917 इस्वीमे रूसमे साम्यवादी पार्टीक बीच सत्ता आबि चुकल छल। दोसर विश्वयुद्धमे एक दिस साम्यवादी देश आ दोसर दिस साम्राज्यवादी देशक समूह आमने-सामने भऽ चुकल छल।

ओना, दुनियाँक इतिहास लड़ाइयेक घटनासँ भरल अछि, मुदा अखन धरिक जे लड़ाइ दू देशक बीच रहल ओ एक विचारक कहियौ आकि एकधाराक, बीच रहल। किएक तँ एक्के विचारधाराक शासन-तंत्र अपन-अपन बजार-ले लड़ल छल। मुदा द्वितीय विश्व युद्ध, जेकरा शीत युद्ध सेहो कहै छिऐ, ओ वैचारिक रूपमेलड़ाइ भेल।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त भेला पछाइत नव-नव केतेको देश साम्यवादी शासन अंगीकार कऽ लेलक। तीस सितम्बर 1949 इस्वीकए माओत्से तुंगक नेतृत्वमे चीन सेहो साम्यवादी शासन अंगीकार कऽ लेलक। जे देश ओहू समयमे दुनियाँमे सभसँ अधिक जनसंख्याबला देश छल।

द्वितीय विश्व युद्धसँ पूर्व दुनियाँक अनेको देश साम्राज्यवादी देशक उपनिवेश छल। अपन देश[v] सेहो छेलैहे। ओइ सभ साम्राज्यवादी देशक एक्केटा मनसा छेलै जे उपनिवेश देशक लूट-खसोट कऽ अपने समृद्धशाली बनल रही। आम-जनक जीवनसँ कोनो मतलब नहि छल, मनुखक जिनगी जानवारोक जिनगीसँ बत्तर बनले छल। ओही बत्तर देशमे अपनो सभ छेलौं। द्वितीय विश्व युद्धमे किछु साम्राज्यवादी देश पस्त भेल आ साम्यवादी देश- सोवियत संघ सेहो सभ तरहेँ जर्जर भऽ गेल। मुदा किछु भेल, तैयो सोवियत संघक आम-अवाम अपन देशक सत्ता कायम रखलैन। दुनियाँक जन-गण अपन अस्तित्वकेँ[vi] सेहो चिन्हलैन। जइसँ युद्ध समाप्त भेला पछातियो देश-देशक भीतर जन-आन्दोलन सेहो जोड़ पकड़लक। दुनियाँक बीच दुनू विचारधारा माने पूजीवादी-साम्राज्यवादी आ समाजवादी-साम्यवादी अपना-अपना गतिये बढ़ए लगल। एका-एकी केतेको देश साम्राज्यवादी जालसँ निकैल साम्यवादी विचारधाराक अनुकूल अपन प्रगतिक बाट स्वयं बनबए लगल। जइसँ दर्जनो देश साम्यवादी बेवस्था अपनौलक।

अपना सभ एशिया महादेशमे छी। जे आन सभ महादेशसँ सघन अवादीबला महादेश अछि। चीनमे साम्यवादी शासन स्थापित भेला पछाइत, वियतनाममे साम्यवादी आन्दोलन जोर पकड़लक। ओना, छोट-छीन देश वियतनामो अछि आ कोरिया सेहो अछि, मुदा दुनूमे जबरदस लड़ाइ साम्राज्यवादी देशक संग फँसल। कोरिया बँटा कऽ दू भाग भऽ दू देश बनि गेल। मुदा वियतनाम बँटाएल तँ नहि, मुदा आइ धरिक दुनियाँक ऐतिहासिक लड़ाइमे सभसँ अधिक दिन तक लड़ैबला देशमे अपन प्रथम स्थान तँ बनौनहि अछि। वियतनाम लक-धक 34 बर्ख धरि लगातार लड़ैत रहल। हो-ची-मिन्हक नेतृत्वमे वियतनामक युद्ध भेल छल। बम-बारूदक प्रभाव वियतनामक एक-एक इंच जमीनक उर्वराशक्तिकेँ नष्ट कऽ देलक। मुदा साम्यवादी शासन बनिते ओइठामक जन-गणदेशभक्त सभ अपन-अपन पूर्ण शक्ति लगा देशकेँ समृद्धशाली आ उन्नतशील बनेबे केलैन। देवचरण जहिना अपना आँखिये देशक शासनक उतार-चढ़ाव देखने छला तहिना अपन परिवारक उतार-चढ़ाव सेहो देखते आबि रहल छला। 1920 इस्वीसँ पूर्व जे देशक अजादीक आन्दोलन छल ओ शुरूआती अवस्थामे छल, तँए आम जन-गण तक नहि पहुँचल छल। मुदा गाँधीजीक जे चम्पारण सत्याग्रह भेलैन, तइ दिनसँ देशक जन-गणक बीच नव शक्ति पैदा लेलक। 1917 इस्वीमे गाँधीजी चम्पारण आएल छला। स्पष्ट मुद्दा हुनकर छेलैन। मुद्दा छेलैन जमीन्दारक शोषण। केना जमीन आ जमीनक उपजाक लूटक संग आरो-आरोकेतेको लूट धनीक वर्ग[vii]गरीबक करै छल, से विचार सार्वजनिक मंचपर उठल। ओना, ओइसँ पूर्व अंगरेजी नीलहा वेपारी जमीनक छीना-झपटी केना करै छल से बात नीलक कोठीक इर्द-गिर्दक किसान खूब नीक जकाँ जनिते छला मुदा ओ शोषण सीमित दायरामे छल, तँए कम लोकक नजैर ओइ दिस बढ़ल।

नीलक उपजाक लेल अन्नक उपजसँ अधिक उर्वर शक्तिबला जमीन चाही। एक बेर जइ खेतमे नीलक खेती भऽ जाइ छल, ओ खेत चारि-पाँच बर्खक लेल उस्सर जकाँ भऽ जाइ छल। तेपटाक हिसाबसँ किसानक खेत नीलहा वेपारी लइ छल। तेपटाक माने भेल जे जँ छह कट्ठाक कोला अछि तँ ओइमे मात्र दू कट्ठामे पहिल साल नीलक खेती करबै छल। लक-धक दू बर्ख एक खेपक नीलक फसलमे समय लगै छेलइ। मुदा से आन्दोलनसँ पूर्वहि, माने 1920 इस्वीसँ पूर्वहि समाप्त भऽ गेल छल।

नीलक खेतीसँ लऽ कऽ सिकमी, भाउली इत्यादि जमीनक निलामी तक देवचरण देख चुकल छला। अपनो पूर्वजक जमीन केना निलाम भेलैन सेहो पिताक मुहेँ सुननहि छला। तैसंग अपने केना पुन: अपन पूर्वजक जमीन आपस करौलैन सेहो बुझले छेलैन। अपन परिवारिक अस्तित्वकेँ जीबैत देख देवचरणक मनमे जहिना खुशी होइत रहैन तहिना अपन ऐगला पीढ़ी- अकिंचन राधाचरणकेँ देख दुख सेहो होइते छेलैन। राधाचरणकेँ कमाइ-खटाइक कोनो ऊहि नहि छल। ओना, देवचरण अपना जनैत राधाचरणकेँ सुधारैक कम परियास नहि केलैन मुदा मनुखक सोभावो तँ सोभाव छी। जइ अनुकूल लोक अपन जिनगी सेहो बनैबते अछि। गाममे केतौ कीर्तन, अष्टयाम, नवाह होइत छल तँ माता-पिताकेँ बिनु कहनौं राधाचरण ओइठाम पहुँच जाइ छल। खाइ-पीबैक बेवस्था सेहो रहिते छेलइ। ओहीठाम रहि खेबो-पीबो करै छल। तहिना केतौ नाचे भेल आकि भोजे-भन्डाराभेल तँराधाचरण चुपचाप, माने परिवारमे बिना केकरो किछु कहने ओतए चलि जाइ छल। भलेँ ओकरा अधला नजरिये सेहो देखल जा सकैए मुदा से तँ अछि नहि। देवचरणकेँ लाख कोशिश केला पछातियो राधाचरणमे कोनो सुधार नहि भेल। माने राधाचरणकेँ ने श्रम करैक बोध भेल आ ने श्रम-जीविक ज्ञाने भेल। ओना, देवचरण अपन परिवारो आ अपन कारोबारक संचालन अपना विचारे करिते छला जइसँ कोनो वैचारिक बेवधान नहियेँ होइ छेलैन मुदा परिवारक बीच मनुखक जिनगी तँ नदीक धारा सदृश प्रवाहित होइते रहैए, तइमे किछु बाधा तँ देवचरणक नजरिक सोझमे पड़िते छेलैन। पड़बो केना ने करितैन? मनुख धरतीपर बहैत धार थोड़े छी, ओ तँ चेतनशील जीवनक धार छी। जइसँ चेतनशील मनुखक चेतनापर प्रभाव पड़ब सोभाविके छल। ओहुना देखै छी जे धार सभमे जखन धाराक मध्य बाउल भरि जाइए माने पानिक बहावक बीच बाउल जमा भऽ जाइए तखन पानिक धाराकेँ रोकिते अछि, जइसँ धाराक प्रवाह ठमैक दोसर-तेसर दिस मुँह बना बहए लगैए, तहिना ने मनुखोक वंशगत विचारक प्रवाहमे श्रमहीनता एलासँ दिशाहीनता अबिते अछि। तँए देवचरणकेँ चिन्तित हएब सोभाविके छेलैन।

संयोग बनल, जहिना एक दिस देशक शासन विदेशीसँ स्वदेशीक हाथ आएल तहिना अपन पूर्वजक अरजल जमीनक अधिकार सेहो दोसराक हाथसँ देवचरणक अपना हाथ एलैन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र किसानक रूपमे देवचरण अपनाकेँ देखए लगला। भलेँ राधाचरणक स्थितिसँ सेहो ऐगला पीढ़ीक भविसक चिन्ता सोभाविके रूपमे होइ छेलैन। ओना, हरिचरण सेहो तेरह-चौदह बर्खक भइये गेल छल, मुदा जइ परिवारमे पिता, बाबा, परबाबा जीवित रहै छैथ तइ परिवारमे तेरह-चौदह बर्खबलाकेँ लोक बच्चे बुझैए, जेकर अवस्थाकेँ खाइ-खेलाइबला सेहो मानले जाइए, मुदा से सभ परिवारमे नइ होइए। एहनो परिवार सभ अछिए जइमे पैछला पीढ़ीकेँ असमायिक मृत्यु भेलापर वा कोनो कारणे पिता-बाबाक छाया हटलापर परिवारक भार बच्चापर पड़िते अछि। जइसँ खाइ-खेलाइक स्थान परिवारकचिन्तो-फिकिर आ भारी-भारी काजक बोझ सेहो काँच उमेरबला बच्चाक सिरपर चढ़िते अछि। ओना, हरिचरणकेँ गात[viii]देख देवचरणक मनमे एते आशा बनले छेलैन जे भीरो-कुभीरक भार पोता उठाइये सकैए मुदा से ओकरा संग अन्याय-अनुचित भेबे कएल। जैठाम

विकल्प रहैए तैठाम तँ संकल्पक धरो सेहो गतिमान रहिते अछि, मुदा जैठाम विकल्पे नहि,तैठाम तँ धारामे थोड़-थाड़ रूकाबट होइते अछि। खाएर, ई मात्र एकटा देवचरणेक संग हएत सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, देवचरणक जे समस्या छैन ओ आनसँ थोड़ेक सटलो छैन आ थोड़ेक हटलो छैन्हे। सटै-क माने भेल जे जइ परिवारमे बाबा, पिता आ पुत्र- तीनू पीढ़ीक तीनू जीवित छैथ। तहिना हटल ऐ दुआरे छैन जे देवचरण अपने उमरदार भऽ गेला अछि, जइसँ समरथाइक सामर्थक ओ रूप दुर्बल भइये गेल छैन, जइमे कठिन शारीरिक श्रम करै छला। तहिना दोसर पीढ़ीमे राधाचरण जीवित रहितो श्रमचोर भेने श्रमहीन भइये गेल अछि। मुदा परिवार तँ परिवार छी। ओकर अपन नियमित क्रिया छै, जइ बलपर ओ ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ बढ़ैए।

भिनसुरका उखड़ाहाक आठ बजेक समय। परिवारक पतराएल काज, माने खेती-बाड़ीक काज नइ रहने,देवचरणकेँ निसचिन्ती रहबे करैन। ओना, माल-जालक सेवा-काज आगूमे छेलैन्हेमुदा जे समय खेती-बाड़ीक छेलैन,ओइमे कमी ऐने काज पतराएले छेलैन। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस देवचरण चाह पीब नेने छला। तहीकाल हरिचरणकेँ आँगनसँ निकलैत देखलैन। देखते हरिचरणकेँ शोर पाड़ैत बजला-

“बौआ, एमहर आबह।”

बाबाक बात सुनि हरिचरण लगमे आबि चौकीपर बैसैत बाजल-

“की कहलौं, बाबा?”

हरिचरणक बात सुनि देवचरणक मन जेना पतालसँ उड़ि अकासमे पहुँच गेल होनि तहिना भेलैन। मुदा उमेरो[ix] तँ उमेर छी, ओकरो अपन गुण-धर्म अछिए। तहूमे देवचरण इमानदारीसँ अखन तक परिवारक गाड़ीक जुआ खिंचैत आएल छैथ, तँए असथिर चिते बजला-

“बौआ, अखन तक परिवारक भार अपन सिर सजिगाड़ीक जुआमे[x] कन्हा लगा खिंचैत एलौं, मुदा आब ओ सामर्थ नहि रहल जेकर खगता परिवारकेँ अछि। तँए...।”

‘तँए’ कहि देवचरण चुप भऽ गेला। मुदा हरिचरणक मनमे जिज्ञासा उपैकिये गेल। हरिचरण बाजल-

“बाबा?”

‘बाबा’कअतिरिक्त हरिचरण किछु ने बाजल। मुदा हरिचरणक मनक छीपल विचार देवचरणक मनकेँ हौंर देलकैन। जइसँ रंग-रंगक विचार, संकल्प-विकल्पक संग उठए लगलैन, जइसँ नवाकुंर पोताकेँ की कहितैथ आ की नइ कहितैथ, तइ बिच्चेमे देवचरणक मन फँसि गेलैन। मुदा लगले देवचरणक मनमे उपकलैन जे जिनगीक कोनो ठेकान थोड़े अछि, ओ तँ बेठेकान अछि। अखनो मरि सकै छी आ पचीस-पचास बर्ख जीवियो सकै छी। तखन तँ बीचमे एकटा समस्या उपस्थित भइये गेल अछि, जे जइ रूपे परिवारकेँ हमर श्रमक खगता छै तेकरा पुरबैमे आब अपन दैहिक शक्तिक अभावक कारणे किछु-किछु बाधा उपस्थित हेबे करत। मुदा हरिचरण सन नव शक्तिक[xi] उदय तँ परिवारमे भइये गेल अछि, एकरा जँ सही ढंगसँ उपयोग करब तँ कोनो तरहक बाधा परिवारमे उपस्थित नहि हएत। देवचरण बजला-

“बौआ, अखन तँ काजक बेर अछि तँए अखन एतबे राखह। साँझू पहर जखन दुनियाँदारीसँ निचेन हएब तखन सभ कियो- तोहूँ, तोहर माइयो आ दादियो एकठाम बैस विचारि लेब जे आगू केना चलैक अछि। जहिना हल्लुकसँ भारी[xii] काज परिवारक मध्य अछि तहिना नव-पीढ़ीसँ पुरान पीढ़ी धरि सेहो सभ छीहे।”

हरिचरण बाजल-

“से तँ छीहे। मुदा अहाँ किछु भेलिऐ तैयो तँ धान-गहुम दौन करैबला खोहक जोतल बरद जकाँ मेहौता छीहे। जेना-जेना खोहपर अहाँ घुमबै तेना-तेना ने अहींक लागल बीचलो आ पैटक बरद जकाँ हमहूँ सभ घुमबै।”

मुस्की दैत देवचरण बजला-

“अखुनका विचारकेँ कानपर रखिहह। साँझूपहर सभ एकठाम बैस कोनो-ने-कोनो रस्ता निकालिये लेब।”

q

शब्द संख्या : 2492, तिथि : 27 मई 2018

जारी....

---

[i]जमीन

[ii]खेतकेँ

[iii]बासभूमिकेँ

[iv]बीस बीघाक भीतर

[v]भारत

[vi]मनुखक जिनगीकेँ

[vii]जमीन्दार वर्ग

[viii]शरीरक रंगरूप-

[ix]मनुखक अवस्था

[x]ऐगला भागमे

[xi]दैहिक शक्ति

[xii]शारीरिक श्रमक खियालसँ

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

दूटा लघुकथा-

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक

दूटा लघुकथा

'भारीपन भार बनि गेल', 'प्रवल इच्छा'

भारीपन भार बनि गेल

जिनगीक आधा उमेर[i] बीतला पछाइत पचास बर्खक चेतनाननकेँ अपन चेतन-शक्ति बदैल गेलैन। चेतन शक्ति बदलने सोचनो-शक्ति आ क्रियो-शक्ति बदैल गेलैन। जइसँ चेतनानन अपने-आपमे समाहित भऽ गेला।

जेठ मासक बेरुका तीन बजेक समय, दरबज्जापर बैसल चेतनाननक मन अपन जिनगीक समीक्षा करए लगलैन। समीक्षाक दौड़मे विचार फुटलैन-

“भारीपन भार बनि गेल..!”

चेतनाननक मनसँ फुटि कऽ विचार बहरेबे कएल छेलैन कि पत्नी- बुधिवादिनी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, सभ दिनक चाह पीबैक अभ्यास चेतनाननकेँ सभ रंगक छैन। माने गरमी मासमे तीन बजे, मध्यमास आसिन-कातिक आ फागुन मे अढ़ाइ बजे आ जाड़क मासमे दू बजे बेरुका चाह पीब चेतनानन दोसर उखड़ाहक काजमे लगै छैथ। अभ्यासक हिसाबसँ चाह पीबैक इच्छा समयपर जगिते छेलैन मुदा चाह पीबैसँ पहिने जे बदलल जिनगीक विचारक मथन मनमे उठि गेल छेलैन तइसँ चेतनाननक मन थोड़ेक ओझरा गेल रहैन। माने, चाह पीबैक जेतेक इच्छा आन दिन रहै छेलैन तइमे आइ थोड़ेक कमी आबि गेल छेलैन। चाह पीबैक इच्छा कमने पत्नीसँ गप करैक इच्छा सेहो कमि गेल छेलैन जइसँ आगूमे ठाढ़ पत्नीपर एक नजैर खिरा चुपचाप चाहक गिलास देखए लगला।

ओना, अपन बुइधिक ओकातिये बुधिवादिनीक मनमेविचार जगि गेल छेलैन जे भरिसक पति कोनो चिन्तामे पड़ि गेल छैथ तेँए जेहेन मन उछटगर हेबा चाही से नहि छैन। फेर भेलैन जे किए ने पुछिये लिऐन जे मन खसल देखै छी। मुदा फेर भेलैन जे खसलो मनक (गम्भीर रूपमे) तँ अपन-अपन दिशा होइते अछि।

माने ई जे एक खसब भेल जे कोनो संकटकेँ दूर करैले ओकर समधानल रस्ता खोजैमे खसैए आ दोसर होइए जे नीक जिनगी पेबा-ले भविसक बाट समधानि कऽ खोजबमे सेहो मन खसबे करैए। लगले बुधिवादिनीकेँ भेलैन जे जखन किछु बाजि नहि रहल छैथ तखन अनेरे मधुमाछी-छत्तामे गोला मारि कटाएब नीक नहि। तँए, अपन जे अखुनका काज अछि पहिने तेकरा मुसताजिसँ कऽ ली। जँ कोनो दुखो-तकलीफ मनमे हेतैन तँ एक्केबेर बिढ़नी जकाँ थोड़े हनहना उठता...।

चाहक गिलास चेतनाननक आगूमे रखि बुधिवादिनी पान आनए आँगन विदा भेली। जे काज चेतनाननकेँ सेहो सभ दिनक बुझले छैन।

चाह-पान पीला-खेला पछाइत जहिना चेतनानन अपन जीबनपट खोलए अपन विचारधारा दिस विदा भेलातहिना बुधिवादिनी सेहो अपन जीवनघट पार करए अपना घाट दिस विदा भेली। समुन्नत परिवारक जे घट-घटवारि होइए ओ जहिना चेतनाननकेँ बुझल छैन तहिना बुधिवादिनीकेँ सेहो बुझले छैन। ओ बुझब भेल जे परिवारक सभ जनकेँ अपन-अपन शक्तिक अनुकूल परिवारक क्रिया-कलापमे लागल रहब। जहिना कोनो घरमे अपन-अपन जगहपर वस्तु-जात सैंत कऽ राखल रहैए जइसँ एक-दोसरमे टकराइक सम्भावना नइ रहै छै, तहिना परिवारमे मनुखोक अछिए। जे किछु दिन पूर्व तक चेतनाननक परिवारमे नइ छेलैन मुदा आब से बात नइ रहलैन। आब परिवारक सभ कियो अपन-अपन परिवारिक दायित्व बुझि रहल छैन जइसँ एक-दोसराक बीच अढ़बै-चढ़बैक रस्ता बन्न भऽ गेलैन।

ओना, बुधिवादिनी अँगनाक काज दिस विदा भऽ गेली मुदा पतिक खसल चेहराक रूप देख मनमे विचार जगिये गेल छेलैन जे मन किए मलिन छैन? अर्द्धांगिनी होइक नाते दुनियाँमे जँ कियो लग[ii] छैन तँ ओ हमहीं ने छिऐन। जाधैर हमर सम्बन्ध नहि बनल छल, माता-पिता जीबैत रहथिन ताधैर ओ दुनू गोरे छेलैन, मुदा हुनका दुनूक परोछ भेने आ हमरा एने तँ सम्बन्धमे बदलाव एबे कएल। मुदा जखन मनमे कोनो तरहक परिवारिक उलझन आबि गेल होनि तखन जँ हमरा किछु नहि कहि मने-मन बेथित बनल रहता सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। विचार अबिते बुधिवादिनीक मनमे दोसर विचार टपैक पड़लैन। ओ टपकलैन ई जे जँ परिवारिक उलझन नहियेँ रहल होनि, समाजिक वा बेकतीगते कोनो रहल होनि, तखन जँ किछु नहियेँ कहलैन तँ ओ उचिते केलैन।

उचित अनुचितक बीच बुधिवादिनीक विचार समुचित होइते अपन काजमे लगि गेली।

पत्नीकेँ लगसँ हटिते चेतनाननक मनक जेना नि:साँस छुटलैन। नि:साँस छुटिते मनमे उपकलैन जे भने पत्नी लगसँ हटि गेली। लगमे रहितैथ तँ विचारमे बाधा उपस्थित करितैथ।

एकान्त होइते चेतनाननक मन साकांच भऽ सजगलैन। सजगिते अपन बीतल जिनगीपर नजैर निछोह दौड़लैन। की जीवन छल, की सोच-विचार छल आ आइ[iii] की अछि? आब तँ सोझ जीवन देख रहल छी जे दुनियाँमे जेतेक मनुख छैथ ओ सभ ने चाहि रहला अछि जे सोझ जीवन भेटए। मुदा सोझ जीवन-ले सोझ ज्ञानक खगता अछि किने,जेकर प्राप्ति भेला पछातिये ने कियो सुखसँ सुखी बनैत आ अपन स्वतंत्र रूपमे शासनसूत्र अपनबैत जिनगीक धारमे बहए लगैए। ऐठाम शासनसूत्रक माने भेल, जिनका किनको जिनगीमे सफलता भेटल छैन हुनका मनमे ईहो तँ जगिये जाइ छैन जे असफल जिनगी जीनिहारकेँ सही दिशा देखबैत सही बाटपर आनि, कखनो आगूसँ बाँहि पकैड़ आगू मुहेँक विचारक बाट धराबी तँ कखनो खच्चा-खुच्चीमे

लसकैत देख पाछूसँ बल लगा आगू मुहेँ ठेलैक परियास सेहो करी। जइसँ जे विचार सूत्र बनैए वएह भेल शासनसूत्र। जखने मनुखक जिनगीमे प्रकाशित मन स्वतंत्र बाटक शासनसूत्र पकैड़ चलए लगैए तखने ओ सफल जिनगीक आनन्दसँ आनन्दित सेहो हेबे करैए। जे चेतनाननकेँ आधा जिनगी बितला पछाइत भेलैन। मुदा आधा जिनगी जे बितल छेलैन ओ सोल्होअना उनटल छेलैन जेकर पछाड़सँ अखनो पछड़िये रहला अछि। अखन धरि जे समाजक बीच मनुखक निर्माण भऽ रहल अछि ओ समाजिक बेवस्थाक अनुकूल भऽ रहल अछि जइमे शासन बेवस्थाक भरपूर प्रभाव सेहो पड़िते अछि। खाएर जे अछिमुदा ई तँ हर जीवनमे अछिए जे परिवारसँ समाज धरि अपन भारीपन[iv] बनल रहए। जे चेतनाननकेँ सेहो छेलैन्हे।

कौलेज तकक पढ़ाइ छोड़ला पछाइत चेतनानन स्वतंत्र जिनगी धारण करैक खियालसँ नोकरी दिस नहि तकलैन। ओना, अपनो परिवारिक सम्पैत ओतेक छेलैन्हे जे एक परिवारक जीवन-यापनक कोन बात जे तीनियोँ-चारि परिवारक जीवन-यापन भइये सकैत छल, जँ समुचित ढंगसँ समुचित श्रमक उपयोग करितैथ, मुदा समाजिको परिवेश तँ परिवेश छीहे। एके-दुइये चेतनानन समाजक बीच सेवाक रूपमे बिआह-दान, श्राद्ध-मुड़नक संग पूजा-पाठमे आगू बढ़ए लगला। जइसँ किछु-किछु समाजक बीच जन-मतो आ जन-संघो बनियेँ गेल छेलैन। जखने जनमत, जनसंघ बनत तखने राजसत्ताक शिकारी सभ अपना-अपनीकेँ हथियाबए चाहिते अछि। शुरुहमे तँ चेतनानन अबूझ-अबोध जकाँ छला, तँए एक्के पक्षक बीच पहुँचला मुदा कनी आँखि-पाँखि भेने आब दोसरो-तेसरोसँ सम्बन्ध बनबए लगला अछि। जइसँ भीतरे-भीतर भलेँ बहुरूपिया बनि रहल होथि मुदा ऊपरसँ (देखौआ) तँ समाजक अगुआएल लोक भइये गेला किने। जँए अगुएला तँए सबहक बीच पूछ सेहो भेलैन। तहूमे मनुखक पूछ। ओना, जानवरक पूछ भलेँ माछी-मच्छड़ रोमैबला किए ने हुअए मुदा मनुखक पूछ तँ से नहियेँ छी, मनुखक पूछ तँ मनुखकेँ भरियेबे करैए। जखने मनुख अपन भारीपन देखैए तखने ने अपन जिनगीक सफलताक भान ओकरा होइ छइ। जे पबिते मनुख सुरसा (रामायणिक) जकाँ हनुमानसँ दोबर रूप अपन देखैबते अछि।

पचास बर्ख बितला पछाइत चेतनाननक विचारमे जहिना बदलाव एलैन तहिना सोचै-बुझैमे सेहो एलैन जइसँ जीवन पद्धति सेहो बदलिये रहल छेलैन।

ओना, चेतनानन गामक चौकपर साँझ-भोर चाह पीबैक बहन्ने सभ दिन जाइ छैथ जइसँ भरि दिनक गामसँ दुनियाँ तकक उड़न्ती समाचार साँझू पहरकेँ भेट जाइ छैन आ भरि रातिक समाचार भोरमे भेटिये जाइ छैन। समाचारकेँ समाचार जकाँ चेतनानन एकहरफी सुनि लइ छैथमुदाओइपर अपन कोनो टीका-टिप्पणी वा राय-विचार नइ दइ छथिन। तेकर कारण ई अछि जे ओ नीक जकाँ बुझए लगल छैथ जे जहिना रेडियो-अखबारक उड़न्ती समाचारकेँ आरो उड़न्ती आ फुड़न्ती-सुड़न्तीकेँ आरो फुड़न्ती-सुड़न्ती समाचार बना बँटिते अछि। जइसँ ओकर असलियत रूप झँपाइये जाइ छै, तँए टीका-टिप्पणी मात्र बातकेँ बतंगर बनाएब छोड़ि आर किछु ने रहैए। मुदा समाजक धारासँ अपन मुहोँ बन्न कए राखब तँ उचित नहियेँ भेल। जेकरा पुड़बैले चेतनानन चौकक उड़न्ती समाचारक नाँगैर पकैड़ नेङड़ियबैत घटनाकेँ घटित बेकती लग पहुँच अपन विचार रखए लगला अछि।

आइ भोरमे जखन चेतनानन चौकपर पहुँचला कि एक गोरे चाहक गिलास आगू बढ़ा देलकैन। चाह देख चेतनानन बुझि गेला जे भरिसक कोनो काजक भार ऊपर औत। मुदा बिनु कहने मानियोँ लेब तँ उचित

नहियेँ हएत। चाहो पीबए लगला आ आँखि उठा-उठा ओकरोपर नचबौ लगला जे मुहसँ की निकलै छैन। आधा गिलास चाह जखन चेतनाननक ससैर कऽ पेटमे चलि गेलैन तखन राधारमण बाजल-

"चेतन भाय, अहाँसँ एकटा भारी काज अछि..!"

काज तँ काज भेल, मुदा 'भारी काज' की भेल? बिनु बुझने चेतनानन बजला-

"काज तँ काज भेलओ भारी की हएत?"

राधारमणक मन मानि गेलैन जे काज हेबे करत। बाजल-

"भाय साहैब, इण्टरमे बेटा फेल भऽ गेल हेन, दिन-राति घरमे पेटकान लाधि कनैत रहैए, तीनियेँ दिनमे मरैमान भऽ गेलअछि ने किछु खाइए आ ने पीबैए। से कनी युनिवरर्सिटीक काज सल्टिया दिअ।"

चेतनानन-

"बच्चा पढ़ैमे केहेन अछि?"

राधारमण-

"हाइ स्कूलमे सब दिन फस्ट करैत रहल। मैट्रिकमे सेहो सत्तैर प्रतिशतसँ बेसीए नम्बर आएल छेलइ।"

राधारमणक बात सुनि चेतनानन बजला- "अच्छा..!"

मदनानन सेहो चाहेक दोकानपर छल। चेतनाननक मुहसँ 'अच्छा'सुनि अपन नम्बर लगबैत बाजल-

"चेतन भाय, हाइ कोर्टक काज हमरो बजैर गेल अछि।"

चेतनानन पुछलखिन-

"की?"

मदनानन- "दुनू भैयारीमे जमीनक विवाद अछि, डिस्ट्रिक कोर्टमे केस चलै छल, एकतरफा जजमेन्ट भऽ गेल,सैह...।"

गप्पक क्रममे चेतनानन 'अच्छा' तँ कहि देलखिन मुदा जखन चाहक दोकानसँ घरमुहाँ भेला तखन आइ धरिक जिनगी चेतनाननक नजैरपर नचलैन। अपन पैछला पचास सालक जिनगी ओहन दिशाहीन भऽ गेल जे टुटि-टुटि खसि-खसि ओतेक नीचाँ खसि पड़ल जे ओकरा सम्हारि कऽ आजुक सीमापर आनब कठिन भऽ गेल अछि।कहुना-कहुना अपन जिनगीकेँ समयक पटरीपर चढ़ा चलबए चाहै छी, सएह ने पार लगि रहल अछि। तैठाम अनकर काज सम्हारब तँ आरो जपाल भइये जाएत। अपना दिस जखन तकै छी तखन बुझि पड़ैए जे ओतेक अधला वृत्तियो आ विचारो अपना अपन जीवनक गाड़ी दौड़ेलौं जे नर्कक अट्ठाइसो भोगक अधिकारी बनि गेल छी, तेकरा पुराएब आ कि..?

घरपर पहुँचते तेचनाननक नजैर बुधिवादिनीपर पड़लैन। ओना, बुधिवादिनियोँ चेतनेननक रस्ता तकै छेली। नजैर पड़ि चेतनानन बजला-

"भारीपन भार बनि गेल अछि।"

अपने बोझक तर दबाएल पतिक बात सुनि बुधिवादिनी किछु ने बजली।

q

शब्द संख्या : 1471, तिथि : 21 जुलाई 2018

---

[i]साए बर्खक आधारपर

[ii]नजदीक

[iii]पचास बर्खक पछातिक

[iv]गुरुआइ वा गुरुत्व

प्रवल इच्छा

अदहा जेठ बीत गेल छल। आन सालसँ भिन्न ऐ सालक जेठक रोहानी अछि। आन साल जेना बरखा नइ होइ छल तइसँ गर्मीक प्रकोप विशेष रहै छल, से ऐ साल नहि अछि। समय-समयपर तीनटा बिहड़िया बरखा भेल, जइसँ जेठ रहितो फागुन जकाँ खुशनुमा समय बनल। ओना, बरखा तीनिए-टा भेल, मुदा अकासमे वादल बेसी काल उमड़ैत-घुमड़ैत रहल, जइसँ ने बेसी रौदक ताप बढ़ल आ ने लूए चलल। आन साल जेना लोक दस बजैत-बजैत खेत-पथार,बाध-बोनसँ घरपर चलि अबै छल से ऐबेर नहि अछि। नहाइ-बेर तक लोक बाध-बोनक काजमे जुटल रहैए।

गामक रोहानी सेहो आन सालसँ नीक अछि। जहिना बैशाखा तीमन-तरकारीसँ बाध लहलहा रहल अछि तहिना गरमा मकइ, धान आ खेरही सेहो बाधकेँ हरियर-कचोर केनहि अछि। तैसंग आम-जामुन सेहो तेना लुधकी लागि फड़ल अछि जे गाछी-बिरछीसँ अबैक मन नहि होइए। केते सालक पछाइत ऐबेर एहेन आम फड़ल अछि। जहिना आमक फड़ी अछि तहिना जामुनोक अछिए। तहूमे गामक जे किसान सभ छैथ, ओ ओहेन अनुभवी छैथ जे जहिना चुनि-चुनि आमक गाछी-कलम लगौने छैथ तहिना जामुनो-गुलजामुन लगौनहि छैथ। जइसँ गुल-जामुनक संख्या बेसी अछि। गृहस्ताश्रममे सरही-कलमी दुनूक खगतो अछिए। जहिना खाइ-पीबैले नीक-नीक कलमी आमक खगता अछि तहिना जरण-मरणमे सरही आमक गाछक खगता सेहो अछिए।

प्राचीन गाम रहने जहिना गाछी-कलमसँ सम्पन्न अछि तहिना बेख-बुनियादिसँ सेहो सम्पन्न अछिए। बेख-बुनियादि भेल- नीक-नीक सुकाठ लकड़ीक गाछक संग बाँस-बँसबारि सेहो। जीवनमे जहिना खाइ-पीबैले आम-जामुन,लताम-बेल इत्यादि सभ रंगक फलक खगता होइए तहिना घर-घरहट करैले नीक लकड़ियो आ बाँसोक खगता अछिए।

ओना, पुरानो-पुरान गाममे अन्तर अछि। किछु गाम एहेन अछि जे कमला-कोसीक, चपेटमे पड़ि केता बेर उपटल अछिआ केता बेर बसल अछि, मुदा हमर गाम से नइ अछि। धार-धुरमे केबल एकटा चरिमसुआ धार अछि जे बर्खाक पानि पीबते फुलाइए आ बर्खाक अन्त होइत-होइत सटकए लगैए जे कातिक बीतैत-बीतैत सुखि जाइए। ओना, गामक जेतेक जमीन धारक पेटमे अछिओइमे कोनो उपजा-बाड़ी नहियेँ होइए, तइसँ एते नोकसान तँ गामक अछिए, मुदा एते तँ नफ्फो अछिए जे कमो बरखा भेने आन-आन गामक पानि उठा कऽ धार अनैए आ गामक पोखरियो आ चौरियो सभकेँ भरि दइए जइसँ पानिक सोलहन्नी खगता तँ नहि, मुदा अदहा-छिदहा तँ पूरा होइते अछि। तहूमे धारक पेट तेहेन उथराह अछि जे तीनियोँ-चारि हाथ पानि मोटाइते ऊपर फेकए लगैए। जइसँ खेतो सभ पनिआइए आ पोखैर-झाँखैर सेहो भरि जाइए।

तेतबे नहि, कमला-कोसीक प्रकोप नहि रहने गामक गाछियो-कलम आ खेतो-पथारक ऑंड़ि-मेड़ नीक अछिए। साए-साए बर्खक जहिना शीशोक गाछसँ गाम भरल अछि तहिना साए-साए बर्खक आमोक गाछ आ बाँसोक बँसवारि अछिए। सुकाठ लकड़ीमे शीशोओक अपन महत अछिए। महत ई जे जहिना घरक खुट्टा-खाम्ही मजगूत होइए तहिना घरक ऊपरका भागमे तड़क, धरैन, मानी थम्हक रूपमे सेहो अछिए। तैसंग घरक बीचला भागमे केबाड़-चौकैठक संग सुतै-बैसैले चौकियो-कुरसीक पूर्ति केनहि अछि।

ऐबेर जहिना उपजा-बाड़ी, कलम-गाछी लहलहा रहल अछि तहिना लगनो[iv]क धुमसाही अछि। अपनो मुड़नक नौत-हकार मात्रिकसँ आएल अछि। परसू ममियौत भाइक बेटाक मुड़न छी, कपड़ो-लत्ता आ नौत-पुराइक चीजो-वौस कीनए झंझारपुर गेल छेलौं। बजारो आ हाटोक काज छल। ऐगला हाट रबि दिन होएत, जइसँ काज नइ चलैत, तँए बुधेक हाट करए झंझारपुर गेल छेलौं। झंझारपुरसँ चीज-वौस कीनि घरपर आबि साइकिलसँ उतैर चीज-वौस उतारिते रही कि हंसराज काकाकेँ खेत दिससँ अबैत देखलयैन। रस्ते कातमे घरो अछि आ दरबज्जाक रूखि सेहो रस्ते दिस अछि।

हंसराज काकाकेँ देखते कहलयैन-

"काका, तमाकू खा लिअ तखन जाएब।"

ओना, पौने एगारह बाजि रहल छलजइसँ नहाइ-खाइ बेर भइये गेल छल, मुदा जखन सोझामे हंसराज काका पड़ला आ किछु नहि बजितौं से केहेन होइत। पान-सात दिनसँ भेँटो नहियेँ भेल छला।तँए तमाकुलक बहाना बना बाजल छेलौं। जहिना कहलयैन तहिना ओहो दरबज्जापर आबि बजला-

"केतौ बाहर गेल छेलह, किसुन?"

बजलौं-

"हँ, झंझारपुर हाट गेल छेलौं। परसुका मुड़नक नौत-हकार मात्रिकक अछि। ओहीक चीज-वौस कीनए गेल छेलौं।"

तैबीच अपनो चीज-वौसकेँ अँगनामे रखि दरबज्जापर आबि तमाकुल चुनबैक ओरियान करए लगलौं।

हंसराजो काका अपन हाथक कोदारि, खुरपीआहँसुआकेँ चौकीक निच्चाँमे रखि बैसला। साइकिलसँ उतरल रही तँए पसेना चलैत रहए।ओना, समयमेघौन जकाँ छल तँए रौद मड़ियाएल रहइ, मुदा तैयो मासक धर्मे गरमी किछु छेलैहे। तमाकुल चुना काकाकेँ देलिऐन। ओहो तमाकुल मुँहमे लैत बजला-

“ऐ बेरका लगन तँ देखै-जोकर अछि!”

लगनक चर्च होइते बजलौं-

“ऐबेर कनाह-कोतर सभ उठि जाएत। जेकरो सबहक बिआह पौंरकाँ नइ भेल तेकरो सबहक आ जे ऐबेर बिआह करै-जोकर भेलतेकर, सबहक बिआह भऽ जाएत।”

‘सबहक बिआह’ आकि ‘कनाह-कोतर’ सुनि हंसराज कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। मुस्की दैत बजला-

“ई तँ बढ़ियाँ बात भेल किने। जेतेक धिया-पुताक बिआह भऽ जाएत ओतेक माइयो-बाप अपन कर्जसँ मुक्त हेबे करत किने।”

बजलौं-

“से तँ मात्र वएह माए-बाप ने जेकरा या तँ अन्तिम धिया-पुताक बिआह हेतै वा जेकरा एक्केटा हेतइ, सएह ने अपन धिया-पुताक कर्जसँ मुक्त हएत, मुदा जेकरा जेरक-जेर धिया-पुता छै ओ केना मुक्त हएत?”

हंसराज काका बजला-

“भलेँ सोल्हन्नी मुक्त नहियेँ हएत, मुदा ओते तँ हेबे करत किने जेते भार उतैर गेल रहतै। कर्जो-कर्जा आ चुक्तियो-मुक्तिमे अन्तर तँ अछिए। कियो सोलहन्नी चुका मुक्त होइए आ कियो अदहा-छिदहा चुका अदहा-छिदहा मुक्त होइए। तँए, जेते भार उतैर जेतै ओते जान तँ हल्लुक हेबे करतै किने।”

बजलौं-

“हँ, से तँ हेबे करत। मुदा तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे केहनो-केहनो परिवार बेटीक बिआहमे हिल जाइए।”

हंसराज काका बजला- “तइमे केकर दोख?”

‘केकर दोख’ सुनि मन ठमैक गेल। किएक तँ एक्के आदमी बेटाक बिआहमे राजा जकाँ बनि अधिक-सँ-अधिक सम्पैत बेटीबलासँ लिअ चाहैत अछि आ वएह आदमी बेटीक बिआहमे दाँत चिआरि बजैए जे समय बड़ खराप भऽ गेल अछि। जइसँ गरिबाहाकेँ बेटीक बिआह करब पहाड़ोसँ भारी भऽ गेल अछि...।

बजलौं- “दोख केकर रहत काका, दोख तँ सोलहन्नी लोकेक अछि। पहिनौं ने बिआह होइ छल, कहाँ एते भारी लोककेँ बुझि पड़ै छेलइ। परिवारमे जहिना आन-आन काज चलै छल तहिना ने क्रमिक ढंगे बेटा-बेटीक बिआहो चलै छेलइ।”

तमाकुलक थूक फेकैत हंसराज काका बजला-

“दोख सबहक अछि। तखन तँ सभकेँ एते गड़ भेटिये जाइए जे समैये एहेन बनि गेल अछि जे सभकेँ वाध्य भऽ करए पड़ै छइ।”

बजलौं-

“जेतए जे होइएसे तेतए हौ, मुदा ठनकाक अवाज सुनि लोक अपन जान बँचबैले अपने माथपर लइए, तहिना ने...।”

बिच्चेमे हंसराज काका बजला-

"माथपर हाथ नेनहि की हएत, जेतए ठनकाकेँ खसैक छै तेतए खसबे करत किने। माथपर हाथ लिअ तैयो आ नइ लिअ तैयो, जेतए ठनकाकेँ गड़ भेटतै तेतए खसबे करत किने।"

बजलौं-

"हँ!से तँ खसबे करत।मुदा...।"

हंसराज काका बजला-

"मुदा-तुदा किछु ने।"

बातकेँ बदलैत बजलौं-

"काका, ऐबेर तँ अहाँक लक्ष्मी दहिन छैथ।"

'लक्ष्मी दहिन'क माने भेल तीमन-तरकारीकेँ महग हएब। हंसराज काकाकेँ डेढ़ बीघा खेत छैन जइमे दस कट्ठा कलम-गाछी लगौने छैथ आ एक बीघा खेतमे बारहो मासक तीनू समैयक[iv] तरकारीक खेती करै छैथ जइसँ परिवारक निमरजना करैत, हाथो-मुट्ठी गरमा कऽ रखिते छैथ। तैसंग ईहो छैन जे तीन बीघा तीन-फसिला खेत छैन, जइमे फसल-चक्रक मिलानसँ खेती करै छैथ, जइसँ अन्नक पूर्ति भइये जाइ छैन। खरीफक मौसममे तीनो बीघामे धानक खेती करै छैथ आ रब्बीक मौसममे दू बीघामे गहुम आ एक बीघामे दलिहन-तेलहनक खेती करै छैथ।ओना, अगता गहुमक खेती केने खेरही आ सुर्जमुखीक खेती सेहो कइये लइ छैथ जइसँ तेते उपज भऽ जाइ छैन जे बेचबो-बिकिनबो करिते छैथ...।

अपना जनैत हंसराज काकाकेँ बड़प्पनक बात कहलयैन मुदा मनमे जेना खेतीसँ किछु तकलीफ रहल होनि तहिना मुँह बिजैक गेलैन। बिजकैत मुहेँ बजला-

"किसुन, जे इच्छा रोपि अखन तक किसानी जिनगी बितेलौं से अखन तक पूर्ति नइ भेल, आ बुझि पड़ैए जे ऐ जिनगीमे हेबो ने करत।"

जिनगीक इच्छा आ ओकर पूर्ति नइ भेलासँ हंसराज काकाकेँ खेतीक विषपनसँ मन विसाइन-विसाइन भइये गेल रहैन, तँए एहेन विचार व्यक्त केने रहैथ। मुदा दरबज्जापर छैथ आ अपनो जँ ओहने बात बाजि आरो विसविसी जगा दिऐन से केहेन होइत। तँए पाशाकेँ आस दैत बजलौं-

"काका, दुनियाँ किछु है आ देशे किछु हुअ मुदा अहाँ तँ अपन जिनगीक बाजी मारिये नेने छिऐन!"

अस्सी बर्खसँ ऊपर हंसराज कक्काक उमेर छैन मुदा साठि बर्ख पूर्व जे अपन पैत्रिक सम्पैतकेँ[iv] आधार बना खेती-बाड़ीकेँ धेलैन से अखनो धेनहि छैथ। जइसँ परिवारक गुजर-बसरमे कहियो रीन-पैंच नइ करए पड़लैन, आ ने ओइ भाँजेमे पड़ला। जइ साल देश स्वतंत्र भेल तही साल हंसराज काका मैट्रिक पास करि कौलेजमे ढुकला जे देशक आजादीक चारि सालक पछाइत बी.ए. पास केलैन। हाइ स्कूलसँ पहिनहि जे देशक आजादीक लेल तिरंगा झण्डा उठौलैन से आजाद भेला पछातिये रखलैन। ओना, पनरह अगस्तकेँ साले-साल अखनो झण्डा उठा देशवासीकेँ जगैबते छैथ, मुदा से केतेक जागल आ केतेक सुतल, से हंसराज काका जनिते छैथ।मुदा तैयो अपन स्वतंत्र विचारो आ स्वतंत्र जीवनक लेल स्वतंत्र पेशोक प्रति समाजकेँ जगाइये रहला अछि...। तैबीच हंसराज कक्काक घड़ीपर नजैर चलि गेल। एगारह बाजि रहल छल, अपनो ठंढाइये गेल

छेलौं जइसँ नहाइक विचार मनमे उठिये रहल छल मुदा केना बजितौं जे काका अहूँकेँ नहाइक बेर उनहल जाइए आ हमरो बेर उनहल जाइए तँए अखन जाउ।

हंसराज काका बजला-

“किसुन, आइ पचास बर्खसँ कोसी नहैर लटकल अछि। अरबो रूपैआ सरकारी खजानसँ खर्च भऽ चुकल अछि,मुदा की लाभ नहैरसँ भेल अछि से कोनो केकरोसँ छिपल अछि। देखौआ सरकारो किसान लेल लोहाक बोरिंग नब्बे प्रतिशत सब्सिडी दऽ कऽ गड़ौलक, मुदा तइसँ किसानकेँ केते लाभ भेल से के नइ जनैए।”

अपनो ई काज देखलो अछिए आ देखतो छीहेजे एकोटा बोरिंग काज नइ कऽ रहल अछि। सबहक पाइप झझरी भऽ कऽ फुटि गेल, आ सभटा निकम्मा भेल अछि।

बजलौं-

“हँ, से भइये गेल अछि। मुदा लोको तँ लोके छी किने काका, जेकरा सुविधा भेटै छै सेहो आ जेकरा नइ भेटै सेहो,दुनू तँ एकरंगाहे अछि। भलेँ तैबीच कमीशनखोर आकि घूसखोर किएक ने उठि-बैसल हुअए। मुदा दिन-राति दुनू नइ कानैए सेहो बात नहियेँ अछि, कनिते अछि। मुदा बेवश लोक, बेवश किसान करबे की करत।”

हंसराज काका बजला-

“तइसँ की अपना सभ अलग छी। आकि ओकरे सभ जकाँ नइ कानै छी।”

बजलौं- “से तँ छीहे, मुदा...।”

हंसराज काका बजला-

“मुदा-तुदा किछु ने। हँसब आ कानब लोककेँ अपना हाथमे अछि। जे कानबक विचारसँ ग्रसित भऽ कनैक किरदानी करत ओ कनबे करत किने, मुदा जे हँसैक हंसक विचारकेँ अगुआ कर्म करत ओ हँसत नइ ते कानत। भलेँ नाटकक रंग-मंचपर किछु लोक कननी पात्र बनि अभिनाइये करए, मुदा ओहो ने देखौआ कननी कनिते अछि।”

बजा गेल-

“हँ, से तँ अछिए। मुदा अहूँ...। ”

‘अहूँ’ सुनिते हंसराज काका बुझि गेला जे हमरो दुखकेँ किसुन ओहिना बुझि रहल अछि जेना अनकर दुखकेँ बुझैए। हँसबो-हँसब आ कानबो-कानबमे अन्तर तँ अछिए, जे ओइ अन्तरकेँ नइ जनैए ओ दोसर रूपे कानबकेँ बुझैए आ जे ओइ अन्तरक मंत्रकेँ, माने अन्तरंग मंत्रणाकेँ जनैए ओकर कानबक सीमा दोसर होइत अछि। हंसराज काका बजला-

“किसुन, नहाइ बेर भऽ गेल, तँए नीक जकाँ सभ बात अखन नइ करब, किएक तँ जहिना कोनो रेलगाड़ीकेँ कोनो कारणे दू-चारि मिनट विलम भेने एके स्टेशन नहि, सभ स्टेशनमे विलम होइते चलि जाइ छै, जइसँ ओकर पहुँचैक जे गनतव्य स्थान रहल, ओइठाम समयपर नहियेँ पहुँचैए, तहिना ने मनुखोक अछि।”

अपना विचारे हंसराज काका बिना कौमा-पूर्ण विराम देने धुरझाड़ बाजि गेला मुदा अपने बुझबे ने केलौं, जइसँ मन झुझुआए लगल। मने-मन मनकेँ मजगूत केलौं जे जे राम से राम, सभ बात हंसराज काकासँ बजाइये कऽ छोड़बैन।

जहिना भौजेत नौतहारीकेँ खाइले नौत दइ छैथ आ पुछि-पुछि खुअबै छैथ तहिना अपन विचार हंसराज काका हमर बदरियाएल मेघकेँ बरदपनक लेल नौत दइए देलैन, तखन हमहीं की ओहन बुड़िवान छी जे ओकरा सुर-वाण छोड़ि दुर्बान बनाएब। फेर मनमे उठल जे नहाइक बेरमे जे विलम हेतैन से अपना वर्णिक करनीसँ हेतैन आकि हमरा लरनीक चलैत हेतैन। अपनो कल परहक नहाएबमे देरी हएत, मुदा गंग-स्नान तँ हेबे करत किने। से नहि तँ जहिना भगता अपना गहवरमे कारनीक भूतकेँ बकबैए तहिना अपनो किए ने करी।

बजलौं-

“काका, हमरा मात्र एकटा फूलक काज छल आ अपने फूलक ढकिये आगूमे रखि देलौं, तइमे से एकटा फूल चुनि कऽ निकालब हमरे नानाक[iv] दिन छी, तँए अपने...।”

हमर विचार सुनि हंसराज कक्काक मनमे हँसी उठि गेलैन मुदा हँसबक जे दोसर रूप अछि, माने केकरो अल्ढ़रपनपर हँसब, बुड़िपना छोड़ि आरो की हएत। तँए अपन देखौआ हँसीकेँ चिन्हौआ हँसीमे बदैल हंसराज काका बजला-

“बौआकिसनु, तूँ बाजल छेलह जे अहाँकेँ लक्ष्मी आबि गेली, से तूँ कोनो बाल-बोधक लड़कपन जकाँ नहि, बेटपन जकाँ बजलह।तँए, पहिने ओ बुझि लएह।”

जहिना ढलानपर ऊपरसँ निच्चाँ उतरैमे पएर अपने आगू बढ़ए लगैए तहिना हंसराज कक्काक विचार सुनिते अपनो पएर बढ़ए लगल। बजा गेल-

“से की काका?”

हंसराज काका बजला-

“देखह किसुन, तोहर जे काकी छथुन से हमर दिन-रातिक मालिक[iv] छैथ, जखने विलमसँ दरबज्जापर पएर देब, तखने ओ जवाब-तलब करए लगती!तँए, धड़फड़मे कनी-मनी कहि दइ छिअ बाँकी दोसर दिन कहबह।”

अपना मनमे बेसी-सँ-बेसी जिज्ञासा जागि चुकल छल तँए हंसराज काकाकेँ पिंजरामे फँसबैत बजलौं-

“की बाल-बोध जकाँ बजलौं काका?”

हंसराज काका बजला-

“लक्ष्यक रस्ता पकैड़ चलबलक्ष्मीक आगमन भेल, आ लक्ष्यक सीमापर पहुँच जाएब लक्ष्मी पएब भेल, तइमे...।”

अपन मनक मनियाँ जेना सोल्हो आँखि खोलि बुझैले तैयार भऽ गेल छल, एकाएक बजा गेल-

“से की भेल काका?”

काका बजला-

“बौआ किसुन, की कहबह! अपन मन हारब नइ कबूल रहल अछि मुदा दाबल जरूर बुझि पड़ि रहल अछि।”

जेतेक जल्दी बुझैक विचार जगल छल तेतेक बुझ पड़ाएल जाइ छल तइसँ मन खिनखिना लगल, तँए बिच्चेमे बजाइयो गेल छल। मुदा से हंसराज काका बुझि गेला। अपनोकेँ सम्हारैत आ हमरो सम्हारैत बजला-

“बौआ, जहिना देशक रीढ़ किसान छी तहिना ओइ रीढ़मे तेहेन घुन लगि गेल अछि जे ने जीबए दए रहल अछि आ ने मरए दए रहल अछि! घड़ीक पेनडुलम जकाँ बीचमे लटका झूलबैए।”

हंसराज कक्काक गप सुनि मनमे हुअ लगल जे कृष्ण जकाँ वृन्दावन आ राम जकाँ रामवनमे ने ते हंसराज काका बोहिया-भुतला रहला अछिजे एना ताशक गुलाम जकाँ तीन प्वाइन्ट बना बादशाहकेँ जीरो बना रहल छैथ! बजलौं-

“काका, नहाइ बेर भऽ गेल अछि, से नहि तँ अहीठाम नहा कऽ पहिने भोजन कऽ लिअ, पछाइत गप-सप्प हेतइ।”

हंसराज काका बजला-

“मुड़कट्टीमे कहि दइ छिअ, बीचमे टोक-टाक नइ करिहह। जँ कोनो बात बुझैमे नइ आबह तँ ओकरा मनेमे गाड़ि कऽ रखिहह, दोसर दिन फरिछा देबह।”

समर्थन करैत बजलौं- “बेस विचार केलौं काका..!”

हंसराज काका बजला-

“किसानी जिनगीमे ई पचासियम बर्ख बीत रहल अछि। मुदा अखनो तक ने अपना हाथ-जुतिमे पानि आएल आ ने बीज आएल आ ने खेतीक करैक कला, जइसँ अपन मन खिन्न भऽ कानि रहल अछि, नहि कि पेट जरने कनै छी। खेत हमर आ बीज आन देशक, ई केतए तक उचित अछि! मनमे प्रवल इच्छा छल जे सभ-कथुक बीज अपने बनाएब, मुदा से आइ तक नइ भेल। तँए मन झुझुआ कऽ कानि रहल अछि।”

हंसराज कक्काक असल बात सुनि एकाएक जेना भक्क खुजि गेल।

q

शब्द संख्या : 2301, तिथि : 30 अप्रैल 2018

[1]साए बर्खक आधारपर

[1]नजदीक

[1]पचास बर्खक पछातिक

[1]गुरुआइ वा गुरुत्व

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३. पद्य

३.१. १. राहुल कुमार चौधरी- हेलैत प्राण २. आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल

३.२.१. कविप्रीतम कुमार निषादक किछु कविता २. मिसिदा- "स्मृति शेष"

३.३.रविभूषण पाठक- दूटा कविता

३.४.१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २.कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु कविता

१. राहुल कुमार चौधरी- हेलैत प्राण २. आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल

१

राहुल कुमार चौधरी

हेलैत प्राण

शोणितक पोखेर मे

हम हेल रहल छी

आ अहाँ,

बारुदक महार पर बैसि

माछ मारि रहल छी ।

बंसी कँत' बातें छोड़ु

अहाँ त

महाजाल फेक

रेहूँ, भाकुर जेना

मारि रहल छी

मनुक्खक प्राण

दुनू विश्वशक्ति केर बीच

हमर अंगना,

बेन गेल ऐछ

सझिया खेत आ,

कर्बला के मैदान ।

धू-धू कS

जरि रहल य'

हमर इतिहास आ,

सभ्यता ।

लागल अछि अहाँ कें

आँखि पर अन्हारजालि,

मुहँ पर जाबी,

कान पर पर्दा।

नाक सेहो बन्द

ऐछ की

दुर्गन्ध ने

लागेत य'।

मनुक्खक माउसक जे

चाहुँदिश पसरल अछि

हमर माइयक शोणित जे

पिछला दस दिनसँ,

जमल अछि माटि पर

इराक, लीबिया आ

अफगानिस्तान कँ बाद

हमर अंगना बनल

अहाँ कँ,

युद्ध मैदान ।

भसिआएल जिनगी मे,

जे किछ शेष अछि

सब छी मात्र,

अवशेष

जरल इतिहासक आ

सभ्यता कँ ।

मुदा परती ने रहत

शोणित सँ,

भीजल माटि पर,

नव कोपर निकलट ।

शोणितक पोखेर हेलैत-हेलैत

हम घाट पर पहुँचब

आ तखन लेब

बचल अवशेष आ

शोणितक एक-एक ठोपक

सुइद जोरि हिसाब ।

-राहुल कुमार चौधरी

रुद्रपुर, मधुबनी

२

आशीष अनचिन्हार

दू टा गजल

1

चुपचाप देखब कपारमे
चुपचाप चाहब कपारमे

ओ जे जे कहथिन सएह सभ

चुपचाप मानब कपारमे

सपना अपन आँखि के बहुत

चुपचाप डाहब कपारमे

ई नोर हुनके हँसी सनक

चुपचाप कानब कपारमे

देखा कऽ लिखलहुँ ई पाँति आ

चुपचाप मेटब कपारमे

सभ पाँतिमे 2212-212-12 मात्राक्रम अछि। दोसर आ चारिम शेरक पहिल पाँतिमे एकटा दीर्घकेँ लघु मानि लेबाक छूट लेल गेल छै।

2

हुनके विकास

जनता उदास

संसद बनलै

चोट्टा निवास

अपने अर्थी

अपने लहास

जेबी जानै

हाटक हुलास

बूड़ल देशक

दर्शन झकास

सभ पाँतिमे 22-22 मात्राक्रम अछि। दू टा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१. कविप्रीतम कुमार निषादक किछु कविता २. मिसिदा- "स्मृति शेष"

१

कविप्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

सुत्थड़ समाज

पुरखा धरम माऽए-बापक पुन यौ
सुत्थर समाज देल आशिष सगुन यौ
पुरजन-परिजन चेतबए त्यागु अवगुन यौ
पुरखा धरम...।। 0।।

ब्रह्मा विधाता केर रचना-विधान सभ
सृष्टि-प्रकृति संग युगचक्र काल नभ
हमरे जकाँ आओर जीव जन्तु जन्मल
ब्रह्माण्डक घटनासँ तारा-ग्रह हलचल

धरती-आकाश देलक रीत-गीत धुन यौ
सुत्थड़ समाज देल आशिष सगुन यौ
पुरखा धरम...।। 1।।

जेहन समाज भेटल तहने हम बनलौं
पितृज अग्रज गुण करमो कैं छनलौं
टोलिया-पड़ोसियासँ लुइर-बुइध जनलौं
गौंआँ-संगतिया संग धार-बाँध फनलौं
गुरु ज्ञानी हित लग बनौलक निपुण यौ
सुत्थड़ समाज देल आशिष सगुन यौ
पुरखा धरम...।। 2।।

आजुक युग सनकी सँ चिन्ता बढ़बैए
सुख-शौक नवतुर मन दुविधा चढ़बैए
दानव दहेज केर बेटी घटवैए
दारू-तम्बाकू मीत-रोग पटवैए
तँ प्रीतम बेकल भऽ करए गुनधुन यौ
सुत्थड़ समाज देल आशिष सगुन यौ
पुरखा धरम...।। 3।।
¦

सुनबै-गुनबै

कहु श्रीमन की पढ़बै-सुनबै
नीक बेजायकँ कत्तेक गुनबै
देश-राज-गृह लोक लेल केहन
नेता-मुखिया सरपंच चुनबै
कहु श्रीमन की पढ़बै-सुनबै...।। 0।।

गाम-शहर-नर-नारीक खिस्सा
एखन अजब-गजब भऽ गेल

अच्छे दिन औ सुशासन नारा
जीएसटीक कोनटा धऽ लेल
इसकुलिया या हाकिम-मास्टर सभ
बनियौटी ऑफिस रमि गेल
शिक्षा-समिति संगवे संगे
हिस्सा बखरा कए जमि गेल
कत्तेक दिन धरि शिक्षाक अंचिया
शमशानक घाटहुँ मे खुनबै
कहु श्रीमन की पढ़बै-सुनबै।।1।।

जनप्रतिनिधि भऽ अजगुत लीला, बलात्कार कए नाम करय
मीडिया-कर्मी कलम दूतकैं, गरियैवितैं बदनाम करय
संगहि गजब करै नव तुरिया
बूढ़ पुरानकैं दुत्कारए
नव स्टाइलसँ छौंड़ा-छौंड़ी
कलजुग-कपटसँ फुफकारए
मोबाइल-इयर फोनक चलती
बमकैत जीजे-डिस्को सुनबै
कहु श्री मन की पढ़बै-सुनबै...।।2।।

एक्खन ज्ञान-विज्ञान लड़ैए
थ्योरीक चोर बढ़ए दिन-दिन
पैरवी-पाइसँ प्रैक्टिकल हँसए
देखू परीक्षा केर दुर्दिन
कम्प्यूटर-इन्टरनेट उमकए
स्किलइण्डियाक भ्यू-दुरबिन
अलक्ष्ये नवतुर चौंकैए
पूब-पच्छिम-उत्तर दक्षिण
तैं सम्हरैत-सम्हारू युगकैं
प्रलय काल आँइखेटा मुनबै

कहु श्रीमन की पढ़बै-सुनबै...।। 3।।

आब सुनू बुधियार श्री मैथिल, लोककेँ बढ़ल-चढ़ल अदिन्ता
मिथिलाक शीलहरण भेल दिन-दिन, कानए युगक नियन्ता
पुरखौंती-संस्कृति-मन्हुआएल, सनकल शौख-सेहन्ता
मिथिला राज्यक सपना सिसकए
ठोहि पारैए बेगरता
आश अगोड़ने प्रीतम हकमए
बज्जर खेतमे की सभ बुनबै
कहु श्रीमन की पढ़बै-सुनबै...।। 4।।
¦

बुझवाक चाही

एक्खन देखल गाम-गाम
शहर-बजारो सभठाम
मनुक्ख सभ
अपन ऐश्वर्य देखबक फेरमे
भेल जा रहल अछि क्रूर उद्याम...
ओकरा सभकेँ सनकल संकल्प अछि,
संगे, बहुत रास विकल्प अछि,
ताहि लेल किछु सोचवाक चाही,
बुझनुककेँ तँ ई, बेसी बुझवाक चाही...
से.., हमरो सभकेँ बुझवाक चाही...
बुझनुककेँ तँ...।

सहठुल सुपातर सभकेँ
सोहनगर बैसार चाही
बैसारक जग्गहपर

ज्ञान औ इमानक पैसार चाही
एहने सोचकँ अँगने दुअरे पोसवाक चाही
बुझनुकजन कँ तँ ई भाव पोसवाक चाही।
से हमरो सभकँ सोचवाक चाही।।

बूढ़क अनुभव गुम्म नहि होअए
नवतुरिया बेदम्म नहिं होअए
नारी-सशक्ति वृद्धि वहन्ने...
पुरखौंती संस्कार नहि रोअए...
नव घर उठ्ठए तँ किए खस्सए...
पुरना घर देखि नवतुर हँस्सए...
तैं जुग-जुगकँ बाट-घाटपर...
सम्हरि-सम्हरि कऽ चलबाक चाही...
से हमरो सभकँ ई बुझवाक चाही...
बहुजन हिताय वा सुखाय संग
सुख-शान्तिकँ उपाय चाही...
छोटका-बड़का भावकँ त्यागैत
सुच्चा मैथिल समुदाय चाही...
कहए 'प्रीतम' कहियो किए!
गाम-घारमे आइ! चाही...
से हमरा सभकँ ई बुझवाक चाही।।

२

मिसिदा

"स्मृति शेष"

बुढ़बा पाकरि,

एखनो ठाढ़ अहि,

गामक सीमान पर,

उगि गेलैए आब,

बोन-झार....

सर्पक केचुआ फहिरा रहल,

पाकरिक ठाढ़ि पर !

नहि अबैए आब एत',

किनको पन-पियाय,

नहि मचैए एत',

नेना-भुटका केर किलोल,

नहि करैए विश्राम,

आब कोनो पथिक,

एहि पाकरि'क छांह तर !!

मरर पोखरि पर,

अहि एखनो,

पिपरि गाछ झमटगर,

जाहि त'र बनल छल,

नीक सन चबूतरा,

जेठ मासक दुपहरि मे,

खेलै छलियै ताश !

एखन टूटि-फुटि गेलैए,

बनल ओ चबूतरा,

जत' होइत छल,

सांझ खन बैसार,

गामक पुरोधा,

जानल मानल पंच,

होइत छलाह खास !!

घरक कनियां-मनियां,

निकसैत छलीह,

लाब' ल' पानि,

लेकिन,

बुढ़-पुरान लेल,

माथ पर राखि आंचर,

दैत छलीह सम्मान !

आधुनिकता केर,

परिवेश आब,

ओढ़ि लेलक अहि गाम,

बाबू जी,डैडी बनलाह,

माय बनि गेलीह मॉम,

देसी कें कफन ओढ़ा क',

करै छथि अभिमान !!

रसगर मीठगर,

पियरगर,

मैथिल बोली,

सोनगर लागै छल कान,

कोयली केर मधुर स्वर सं,

गुंजित होइत छल,

सगर सकान !!

अंगरेजी केर,

लोभ मे

त्यजल आब,

देशज भाषा,

मैथिली भाषी,

कहब' मे,

कियैक बुझै छथि,

अप्पन अपमान ?

बेर-बेर,

नजरिक आगू,

घूम' लगैछ,

गाम परहक,

पाकरिक पेड़,

पीपरि तर'क,

बनल चबूतरा !

रहि गेल,

आब "स्मृति-शेष" !!

-

-"मिसिदा"

(मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी")

मोहल्ला/पोस्ट : लक्ष्मीसागर, जिला : दड़िभंगा.

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रविभूषण पाठक- दूटा कविता

१

छौड़ा अजगुत कंप्यूटर छै

लौत उदास
परखैत पासंग
वौआ क्षणेक्षण
साइड बदलै छै !
कत्ते वाह !
आ कत्ते कमाल कहू
बस तीन मिनट पहिले बीचोबीच रहै
एक मिनट पहिले वाम भेलै
मिनटे पंचर जाम भेलै
दहिने छौड़ा गाम गेलै
मतलब पूरा कलाकारी बीचोबीचक

कत्ते जल्दी गुट बदलै छै !
कोना के गुटपिट ?
गुट तोड़ै छै
छौड़ा अजगुत
कंप्यूटर छै
गुरुओ संग
नोच्चा-नोच्ची
कोना-तीत्ती
सिंघीपताली
खनेखन छौड़ा
गुरु बदलै छै !

२

महाकवि विद्यापति

युवाकवि विद्यापतिक पुरूषपरीक्षा
कवि सँ बेशी ओइ जुगक मांग
पुरूषार्थ आ ओइ पौरूषक प्रशंसा
ओइ दरबार आ बूढ़रसिक समै केर छन्द
तैयो ओइ कवि के शत्रु साओन बिढ़नी के छत्ता
केओ किताब चोराबै ,केओ पांडुलिपि पोखरि मे फेंकि दै
कतेको चेतावनी ,रस्तारोकी ,छीनाछोरी
विद्यापति जानैत रहथिन
कि पुरनका पोथी बिसरले सँ नवपोथीक आगमन
पुरूषपरीक्षा लिखै काल हुनकर बैठकी भरल रहै
वेद-पुराण ,व्याकरण ,न्याय-स्मृतिक ग्रंथ सँ
जयदेव ,वात्स्यायन आ भामहक भार सँ दाबल
पाणिनी आ पिंगलक बान्ह सँ पिसाइत कल्पैत युवाकवि
सबसँ पहिले फेंकलखिन पुराण आ स्मृति
तखने प्रकट भेलखिन कीर्तिलता आ कीर्तिपताका
मुदा एखनो संतोष नइ
ऐ कीर्ति के तुच्छ बूझैत बढि गेलखिन आगू कवि विद्यापति

फेर फेंकलखिन छंद-काव्य आ दर्शनक शताधिक पोथी
फेकैतो काल प्रणाम करैत ओइ पोथी सभ के
महल आ बैठकी कें त्यागि
आबि गेलखिन जन आ जनपदक मध्य
जनपदक संगे-साथ चिन्ह' लागलखिन जनमन
तखने त' दुखिह जनम भेल ,दुखिह गमाओल
ऐ दुख के गमिते उदित भेलखिन महाकवि
महाकविक कविता राजा जनकक नइ
आरक्षित बस जनजनक लेल
जइ कविताक छाती मे धुकधुकाइत रहै मिथिलाक श्वास
ई अमरकिवता तुरूकक कागज पर लिखाइ सँ बेशी अमर भ' गेलै
कोटिजनक ह्रदय मे ,रक्त मे ,माटि मे

2
हयौ साहेब
अहां के एखनो एहनेसन लागै कि विद्यापति बाभनक कवि
आ विद्यापति कें जियेने रहलेन बाभन सब
अपनेने आ माथ पर चरहेने रहलेन बाभन सभ
हयौ महराज
विद्यापति त' भ' गेलखिन चारू लोक सँ बाहर
महराजक दरबार सँ
पंडितक चुटपांति सँ
शास्त्रार्थक झूठ-अखाड़ा सॅ
अहॉं नीक-हमहूं नीक सँ
मुदा महाकविक कविता जीयत रहलै
माथ पर सम्हरल बोझक हुंकारी सँ
काशी आ नेपालक व्यापारी सँ
जहिना प्रिय असोम आ बंग मे
तहिना अराकान आ अंग मे
महाकवि बरहैत गेलखिन
महफा उठेने कहारक पदचाप संग
मखान तोड़ैत मलाहक अलाप संग
महाकवि आगि भ' गेलखिन
अगहन-पूसक घूर मे

महाकवि पाथर भ' गेलखिन
दुसाधक दुख संग
महाकवि गामबदर
डोम-हलखोरक टोल-टापरि मे
अधमरू महाकवि कें आश्रय भेटलेन नारीजनक कंठ मे
दुख आ कष्टबोधक जांता-गीत बनि
मुदु प्रतिशोधक उक्खडि-समाठ छंद मे
महादुख पर लेपैत सोहरक लेप मे
महाकवि जी गेलखिन विषम-विवाहक व्यंग्य मे
महाकवि जी गेलखिन बूढ़-छिनारक ललैठी धरबा लेल
सभ पोथी-पतरा फेकैत
पुर्नजीवित महाकवि
बस रूकि गेलखिन मैथिलानीक लोर संग
यैह लोर शालिग्रामी ,बागमती कें भरैत
कोशी ,गंडक कें तोड़ैत
सभ साल दहबै-दहाबै छै मिथिला के

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २. कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

१
अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी)
(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of 'PaighalteHimkhand'
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

कुहेस
उदासिक पड़ल पपड़ी-पर-पपड़ी
कोनो कुहेस नहि

जे छैट जेतए
कोनो उज्जर भिनसरसँ।

ओ तँ एना घोंसियाएल अछि
हमर करेजमे
जे जएत
हमरे संग। q

साँचक धरातल

सपनाक संसारमे जीबैत छेलौं हम
नहि छल कोनो साँचक धरातल अपन।

जिनगीक दहकैत दुपहरियामे
नहि छल माथपर सिनेहक आँचर।

सरापल तबधल मन लेने
सौनक बात लेल तरसै छल मन
बातोमे छण छण भीजल छल नैन
फूलो गरैत छल काँटे समान,

दुनियाँक मेलामे
एसगर हकासल छल मन।

अहाँक फेन घुमि आयब एतए
सुनसान जिनगीमे हमर
स्वर्ण किरिण निकसैत
जेना छँटि गेल कुहेस
गमकए लगल जिनगीमे
चाननक सुवास।

हमरा संग आब अछि
हमर खुशीक आँगन
पाँखि हम पसारी किए
पबैले असमान।

साँचक धरातल अछि
आब हमर पहिचान। q

एहि प्रकारें
समय केर सागरक बालुसँ
मुट्ठीमे बटोरल
किछु बालुक कण
जे सटल अछि
हमर तरहत्थीक मध्य
ओही कणसँ
सागरक अनुभूति
संजोगि लइ छी।

एहि प्रकारें जीबि लइ छी
छिण-छिण केर जिनगी। q

नेनपनक घुमब
ठहक्काक अहाँ झरना जे
देलौं हमर आँगनमे,

किलकारीक कुँजनसँ

मुदित कएल घर-आँगन।

आभारी छी हे परमेसर
एहि नन्हकी देवदूतक लेल।

नान्हिटा ई बिरबा जे
लहलहैत अछि घर आँगनमे
हमर बेटो केर नेन्हपन
घुमि आएल आँगनमे। q

मेलामे एसगर
दृष्टिक अन्तिम छोरि धैर
जखन हमर आकुल आँखि
अहाँकेँ हियाबैत अछि

आ अहाँ जखन लगीचमे
केतौ नहि अभरै छी
तँ आरो भीषण भऽ जाइत अछि
मेलामे एसगर
भीड़ोमे भुतिएल
हेबाक भान!q

हमहुँ जीबि रहल छी
यै बसात यौ वसन्त
हमरो हेबाक कने
भान तँ कराऊ।

साँस लऽ रहल छी हम
मुदा जीबित रहबाक
बिसबास नहि।

जिनगीक बिरोधमे
ई जघन्य अपराध नहि?

छणेमे जीबि लेब
भरि जनम,
हरेक साँसमे
सरगमक स्वर
हरेक कम्पनमे
पायलकेर झनक
रेशमी आँचरकेँ
नहुसँ सरसराएब,
आँखिसँ आँखिमे
सभ किछु कहि देब,
बे पाँखिए
अकासकेँ नापि लेब,

पूर्णताक अभास तँ
सपने भऽ गेल।
खाली पल पल, खाली जिनगी,
जिनगी तँ बनबासे भऽ गेल।

सोन्हगर स्मृतिक फुलवारी
कने फेनसँ महकाऊ
यै बसात यौ वसन्त
हमरो हेबाक
कने भान त कराऊ। q

लहैर

साँझक सघन धुइनमे
सागर केर लहैर आ
धक्का खाइत हमर देह आ मन।
अहाँक संग रहैत, मन अभासैत छल
सागरमे सागर सन विस्तृत,
अनन्त सुख, भरल पुरल नेह।

समय केर निष्ठुर बाटपर अहाँ
आब छी जिनगीक सीमाकेर ओहिपार।
साँझक तरेगनमे, अहाँक छबि देखै छी।

वएह सागर तँ आइयो छै
ओहिने साँझक कुहेसो सघन
लहैरमे ने हलचल
सतहो अचंचले सन।

स्थिर समुद्र सन मनकेर गहनता
खान अछि अशान्तिक
वैचारिक सघनता। q

मनक बजार

टुटि कऽजुड़ियो जाइ
तैयो दराइर देखाइत छै
मनक बजारमे
फेन नहि
ओ बौस

बिकाइ छै! q

जिनगीसँ की चाहै छी

हम जिनगीसँ की चाहै छी
हम अपनो किछु नहि जनै छी
किछु करबाक लेने लिलसा मनमे
अधखरुए लिलसे जीबै छी।
हम जिनगीसँ...।

होइए जखन मनमे लिलसा
बाटसँ हटि किछु काम करी
संस्कार नेह केर लोरीसँ
ओहि लिलसोकेँ सुतबैत जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

सोन सन रौदसँ भरल अकास
सोझहेमे अछि
मनक बन्न अन्हरिया कोठलीमे
तैयो हम सुटकल जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

चाहै छी विस्तार सिन्धु केर जिनगीमे
सरिपहुँ कुँइयाँक बेंग सन जीने जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

चाहै छी नदी सन बेग हम जिनगीमे
नोरोकेँ आँखिसँ नहि टघरए दइ छी।
हम जिनगीसँ...।
लिलसा अछि जीती जिनगीक खेल

टेकठीक मदैतसँ चलैत जाइ छी।
हम जिनगीसँ...।

किछु नीक करबाक लिलसा लेने
किछु नहि कऽ पेबाक कचोट लेने
एहि अजब द्वन्द्व केर हालैतमे
ओहिना जिनगी जीने जाइ छी।

हम जिनगीसँ की चाहै छी
हम अपनो किछु नहि जनै छी। q

२

कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

आश विहीन हास विहीन
अगनित काज,एसगर कर्ता
भिनसरसँ साँझ
भूत बनल भिरल छी
बेटी ट्यूशन जेती चलू बुच्ची।

बेटाकेँ बस छुटि रहल छै, एलहुँ
जल्दी नहऊ, नहाए छी।

जल्दी आएब,
छः बजे मीता ओहिठाम।

हम छी पिता
हकासल पियासल
अपन संततिक लेल
नट बनल नाचि रहल छी
आश वहीन हास विहीन!q

कुदीन

हमर नगरमे प्रेम रोग केर
सभसँ नीक निदान
झट-दे दुनुकेँ बान्हि कऽ कूटू
निकसै जावत प्राण।

साँझमे आरती भोर पराती
गाबए छल अनुरागी,
दुनु कहुना जान छोड़ा कऽ
भागल संगहि काशी।

रजनी-सजनी केर गेलै जमाना
राग-विराग गरासी
अर्थयुग हाबी भेलए सुदिनपर
कुदिन भेलए अविनासी। q

जनमलकेँ नहि समटल

नेहक धार सुखायल मनसँ
कर्मक बाट नहि परखल
आन्हर भेल परिवार समाज बीच
जनमलकेँ नहि समटल।

कामुक बनल किशोर मूर्ख जन
कर्म-कुकर्म नहि परखल
सभसँ दोषी हम अभिभावक
धनक गर्वमे भटकल।
जनमलकेँ...।

एखनहु चेतु आँखिक काजर
बहि ने जाए जे अटकल
अन्त एकर नीक नहि होएत
मन हमर कहै परखल।
जनमलकेँ नहि समटल। q

ठनकल फेर ठनका

ठनकल फेर ठनका
हाथ धरू माथपर
बचाउ जुनि अनका।

पथलक चोट खाए
अपने चोटेलहुँ
बरखाक पानिकेँ
आरि काटि बहेलहुँ
पानिमे डूबल लगए
अहु बेरक लगता
हाथ धरू माथपर
ठनकल फेर ठनका।

अपनेसँ सभ छै
अपनाकेँ गछाडू
अनका डुबए दियौ
अपनाकेँ सम्हारू,
अपनापर धियान दियौ
छोड़ू ने हुनका
हाथ धरू माथपर
ठनकल फेर ठनका। q

विरान

कियो अपन ने आन
हएत संसारो विरान
सभसँ मिल कऽ रही
अपन मनकेँ कही
सभ किछु रहत एतए
भऽ कऽ जाएब विरान। q

मन नहि लगैत अछि

मन नहि लगैत अछि
हल्ला धुम धराक बीच
अप्पन कि आन बीच
शीत वात ताप बीच।

सिनेह हीन स्वार्थ बीच
टुटैत सपना आ
देखावटी हुलास बीच।

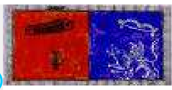
चतुर्दिक कल्मष
आ अपनहुँ विरान बीच
जोगल सिनेहक
मरैत थकान बीच।

तीत मीठ कटु कोमल
राग ओ विराग बीच
प्राणो कण्ठगत अछि
मर्मक कचोट बीच। q

सुमीता

भोरे उठती बारहनिए हाथे
बाल बोध केर चिन्ता
गेएली चुलही पोछैए तँ
दूधक एलनि सुरता।

बौआकेँ स्कूल जेबाक छै
अपनो आपिस जेता
हाँए हाँए कऽ चाय बनौली



बर्तन राखल छिट्टा।

नित दिन हिनकर य्एह अछि जीबन
अपना लेल नहि चिन्ता
पति पुत्र केर सेवा धर्मे
जीली हमर सुमीता। q

अनसोंहाँत

देखा देखी जुनि करी बेचि लोक अरु लाज
होटल मोटल जहाँ तहाँ आँठि कूठ भेल भाग।

जगतमे ज्ञानी हम छलहुँ कहैत अछि इतिहास
आजुक पीढ़ी देखि कऽ किनकासँ राखी आश।

सएमे पाँच दस भेटि रहल जनिका अछि किछु धियान
गाम गाममे जाँचि लिअ किनका घर बाँचल मान।

लिखब बाजब बहस करब बिन बाती बिन तेल
टिम टिम डिबिया कहि रहल नहि अछि संगी कोइ।

पुत्र-पिता परिवारमे कैंचा भेल अभिशाप
भाए भाएकेँ गीड़ रहल अपनहिसँ अछि त्रास। q

फगुआ

सख सेहन्ते एलि कनिया
फगुआ रंग खेलाएब
भौरेसँ भाँगि पीबि ओ
पटिया पर ओंघराएल।

कहू तँ नीक केला ओ

हमरो द्विर केला ओ।

घरमे पाबैन नहि छैन मतलब
भंगबतहासँ संग
एक्के टाँगे नाचल दुनू
फेर भाँगे भकुआएल।

कहू तँ नीक केला ओ
हमरो द्विर केला ओ। q

फागुन
रस बरसए हो रस बरसए हो रस बरसए
फगुआमे बलम घर आएल हो रस बरसए।

संगमे लौलनि नब नब साड़ी
लाल पियर बिच झलकै किनारी
नब नब रीत रचै बालम रस बरसए
फगुआमे बलम...।

सरिपहुँ फाग मन भावन लागए
आइ भवन मनभावन लागए
मनक मनोरथ पूरल हो
रस बरसए।
फगुआमे बलम घर आएल हो रस बरसए। q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आगाँक अंक

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ

नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ २०१८ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf   Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf   12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf   Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf   21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010   Videha_01_10_2010_Tirhuta   67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010   Videha_15_11_2010_Tirhuta   70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

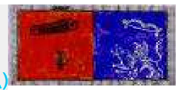
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।
एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै, आ से हानि-लाभ रहित आधारपर छै आ तैँ ऐ लेल कोनो रॊयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मीठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

५ जुलाई २००४ कौँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु